मुर्दों को क्या लाज-शर्म

ग्रीगोरी बकलानोव



परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

ISBN:81-87425-19-9
मूल्य / रु. 40.00

मुर्दों को क्या लाज-शर्म

लघु उपन्यास

ग्रीगोरी बकलानोव

परिकल्पना प्रकाशन

लखनऊ

आधी रात को जर्मनों का बेतार सन्देश पकड़ा गया था। लालटेनों के प्रकाश में उसे विकोडित किया गया। यह ग्रुप कमाण्डर का आदेश था जो पीछे से भेजा गया था। जर्मन टैंक प्रहार की दिशा बदल रहे थे।

चढ़ाई के प्रत्याशित स्थान को फौरन बन्द करना था। पास में तैनात आर्टिलरी यूनिटों में सिर्फ़ भारी हाविट्ज़र तोपों की एक बटालियन और एक विमानभेदी बटालियन थी। रात को उन्हें जल्दी-जल्दी नोवाया तारासोवका और स्ताराया तारासोवका गाँवों के क्षेत्र में पहुँचकर पोजीशनें ने लेने और टैंकों का रास्ता रोकने का आदेश मिला।

पर जब आदेश भेजा जा चुका था जर्मनों ने आगे बढ़ते हुए टैंक प्रहार की दिशा को दक्षिण की ओर मोड़ दिया था। पर इसके बारे में किसी को भी नहीं पता था।

अध्याय 1

वह, जो भारी आर्टिलरी बटालियन कहलाती थी, वास्तव में दो अधूरी बैटरियाँ थीं : तीन तोपें और चार ट्रैक्टर। सुबह ही उन्हें रणक्षेत्र से निकालकर मरम्मत के लिये खड़ा किया गया था। एक ट्रैक्टर का इंजन खुला और पेटियाँ उतरी हुई थीं, तीन अन्य ट्रैक्टर अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। बहुत दिनों के बाद पहली बार जवानों ने अपने सारे कपड़े धोये थे और कई दिनों की निरन्तर लड़ाइयों के बाद गर्म घरों में कपड़े उतारकर, साफ़ जांघियों-बनियानों में सोये हुए थे।

आसमान में चमकते चाँद की शीतल चाँदनी से रोशन, हिमाच्छादित ऊबड़-खाबड़ मैदान में जर्मन टैंक बढ़े आ रहे थे। इधर लोग घोड़ा बेचकर सोये पड़े थे, नींद में भी उनका रोम-रोम सुखद गरमाहट को महसूस कर रहा था।

छतों के ऊपर सफ़ेद धुआँ उठ रहा था, गलियों में चाँदनी रात का उजाला था। और सन्तरी, बर्फीली हवा मे गर्म घरों, उषा और धुएँ की गन्ध सूँघते हुए सोच रहे थे कि ड्यूटी बदलते ही गर्म खाना खाकर, कपड़े उतारकर वे भी चैन से पसरकर सो जायेंगे।

सिर्फ़ एक घर में रतजगा सा चल रहा था। तेल का लैम्प जगमगा रहा था जिसे अर्दली ने साफ़ किया था, दीवार पर लगी सभी कीलों पर ग्रेटकोट लटके थे, और कोने में रखे पलंग के पाँयतों पर, जहाँ रोशनी कम पहुँच रही थी, ग्रेटकोटों और हथियारों का ढेर पड़ा था। मेज़ पर आर्टिलरी बटालियन का कमाण्डर, नाटे कद का हट्टा-कट्टा,

फटे होंठों व दृढ़ चेहरेवाला मेज़र उशाकोव, राजनीतिक अधिकारी कैप्टन वासिच और स्टाफ अधिकारी कैप्टन इश्चेन्को बैठे थे। और उनके साथ एक अन्य रेजिमेण्ट की चिकित्सा अधिकारी भी मौजूद थी। वह अपनी रेजिमेण्ट की ओर जाते समय रात यहीं इसी गाँव में बिता रही थी। संयोग से वहाँ हम्माम भी गर्म किया जा रहा था—सर्दियों में मोर्चे पर यह सुख कम ही नसीब होता है। और अब वह नहाने के बाद गीले बाल, धुली फ़ौजी कमीज़ में मेज़ के पास बैठी थी, हर क्षण वह उन तीनों मर्दों की दृष्टि को महसूस कर रही थी।

मेज़ के पास मकान मालकिन का आठ वर्ष का बेटा भी था। वह वासिच के घुटनों के बीच खड़ा था। वासिच उसके लिये छुरी से लकड़ी को छील-छीलकर चिड़िया बना रहा था, वासिच ने लड़के की सहमी नज़र को पकड़ लिया।

बालक गाढ़े नीले रंग के टीन के डिब्बे को देख रहा था, जिस पर गुलाबी, चमकीली, चंदों में कटी सासेज बनी हुई थी। वह सासेज के चित्र को देख रहा था। वासिच ने डिब्बा उठाया, छुरी से सासेज का कीमा निकालकर प्लेट में रखा और रोटी का टुकड़ा उसकी ओर खिसका दिया।

''खाओ,'' उसने कहा।

वासिच के बूटों के बीच कच्ची ज़मीन पर बालक ने अनिश्चयपूर्वक अपने नंगे क़दम बढ़ाये? लैम्प की रोशनी में चमकती दो आँखें सबके चेहरों पर फिसलीं। फिर भूरे, रूखे हाथों ने प्लेट में रखी सासेज को झट से उठा लिया। वह मुँह बन्द किये, आँखें झुकाये उन्हें चबा रहा था। वासिच उसे नहीं देख रहा था। अब तो लड़का फिर भी आदी हो गया है, पर जब पहली बार उसे खाने को दिया था, वह खाना लेकर फ़र्श पर नज़रें गड़ाकर, फौरन पलंग के पीछे चला गया था, वहाँ अँधेरे में चुपके से, बिना आहट के जल्दी-जल्दी खाने लगा था।

''कोमिस्सार!'' मेज़ के दूसरे सिरे से उशाकोव जरा ज़ोर बोला। ''मालूम है, यह भी ओडेस्सा के क्षेत्र में थीं!''

उसने डाक्टरनी की ओर इशारा किया। और यह ज़रूरी समझा कि ऐसी बात को फौरन मनाना चाहिए, उसने मालिकाना अन्दाज़ से मेज़ पर नज़र दौड़ायी :

''आर्चील!''

दहलीज पर उसका अर्दली बागरादूजे मौजूद था। उसकी वर्दी जेबों और पेट पर चिकनाई से मैली थी, आस्तीनें चढ़ी हुई, वह बालों से ढके मज़बूत हाथों को फैलाये खड़ा था, उँगलियाँ और हथेलियाँ भी चिकनाई से चमक रही थीं। बागरादूजे के कपड़ों से भुने प्याज की गन्ध आ रही थी।

''बस, और दो मिनट की कसर है, कामरेड मेज़र!'' उसने मूँछों को हिलाते हुए आँखें फाड़कर कहा।

अपने श्यामकेशी सिर को मोड़कर (वह जानती थी कि बगल से देखने में सुन्दर

लगती है) फ़ौजी डाक्टरनी उत्सुकता से अर्दली की ओर देख रही थी। वह समझती थी कि ये सब तैयारियाँ, यह दौड़-धूप उसी के लिये हो रही हैं, इसलिये उसकी उत्सुकता थी, उसके गाल दहक रहे थे।

अर्दली को एक ओर हटाकर लम्बी एप्रन बाँधे मालिकिन ने जो एक उक्राइनी महिला थी, प्रवेश किया।

''अरे, तल कहाँ रहा है। आग पर रख दिया, धुआँ दे रहा है। वहाँ तो मांस काला पड़ गया जैसे कोयला।''

और मुस्करा दी : 'बड़े अजीब लोग हैं!''

बागरादूजे ने तेज़ी से उसकी ओर पलटकर देखा, उसकी आँखें क्रोध से जल रही थीं। पर उशाकोव ने सख़्ती से कहा :

''तेरा एक पैर यहाँ है, दूसरा वहाँ!''

और विजेता की तरह उसने सबकी ओर नज़र दौड़ायी।

वासिच समझता था कि यह सब नाटक किसके लिये हो रहा है, इसलिये उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। वे बहुत दिनों से साथ-साथ युद्ध मोर्चे पर तैनात थे, और वह उशाकोव को अच्छी तरह जानता था। छोटी उँगलियोंवाले सख़्त हाथ से माथे पर लटकी लट को सहलाकर उशाकोव बोला :

''याद है, कोमिस्सार, ओडेस्सा? धावा शुरू हुआ तो भौंह पर किश्तीनुमा टोपी झुका ली, लोहे का टोप उतारकर ज़मीन पर पटक दिया!...''

उसकी आँखें चमक रही थीं। और फ़ौजी डाक्टरनी उसकी ओर देख रही थी।

''जवान थे, बेवक़ूफ़ थे,'' वासिच ने कहा। वह महसूस कर रहा था कि लड़का कैसे खा रहा है, वह पूर्ण तन्मय होकर बड़े-बड़े कौर निगल रहा था। उसने डाक्टरनी और उशाकोव की ओर देखा। और सद्भाव से मुस्कराकर, मज़ाक़ करते हुए बोला : ''पता नहीं क्यों आदमी के लिये 'स्पेयर पार्ट्स' नहीं बनाये जाते। सिर कट गया तो टोपी पहनने के लिये जगह ही नहीं बचती।''

''छोड़ो भी,'' उशाकोव ने अपने स्टील के दाँत चमकाते हुए उसकी बात काटी। ''छोड़ो भी, कोमिस्सार!''

उसने मेज़ पर हाथ पटका और इस प्रकार दृढ़ता से सभी आपत्तियों को खारिज कर दिया। उसे 'कोमिस्सार' कहकर पुकारना अच्छा लगता था क्योंकि यह उसकी आर्टिलरी बटालियन का कोमिस्सार था, बटालियन भी उसी की थी और वह बटालियन का कमाण्डर था। क्रान्ति काल से ही 'कोमिस्सार' शब्द में कुछ ऐसा अर्थ निहित था जो आजकल प्रचलित 'राजनीतिक अधिकारी' में नहीं समाता था।

''यह तो इश्चेन्को ही इस तरह कह सकता है। और तुम भी इसी मिट्टी के बने हो, मैं तो जानता हूँ। बस तुम्हें तरह-तरह के सिद्धान्त सताते हैं।''

इश्चेन्को चुप था, क्योंकि बातचीत उससे सम्बन्धित नहीं थी। वह चुपचाप मुस्करा

रहा था और लैम्प की रोशनी में अल्यूमिनियम और परदर्शी प्लास्टिक के छल्लों से बने अपने सिगरेट-होल्डर की जाँच कर रहा था : उसे तरह-तरह की वस्तुओं का शौक था, और उसे, अक्सर ऐसी चीज़ें भेंट भी की जाती थीं। यह सिगरेट-होल्डर उसके लिये तोपखाने के मिस्तरी ने बनाया था। वह सिगरेट का कश लेते हुए यह महसूस कर रहा था कि वे दोनों डाक्टरनी पर किस तरह डोरे डाल रहे हैं, वह मुस्कराता उन दोनों पर अपनी श्रेष्ठता का अनुभव कर रहा था क्योंकि वह विवाहित था।

उशाकोव उसकी ओर मुड़ा, उसके गठे बदन पर कसी पेटियाँ चरमरायीं।

"और तुम क्यों हँस रहे हो, घर से चिट्ठी मिली है क्या? तुम अपनी बीवी को कैसे लिखते हो : 'ढेरों प्यार, तुम्हारा सेम्योन?...' ऐसे ही न?"

पर अब भी इश्चेन्को नहीं झेंपा। और वासिच, सावधानी से चिड़िया की चोंच तराशते हुए, उशाकोव की अचेतन पर सुस्पष्ट चाल पर मुस्करा दिया : वह एक-एक करके सम्भावित प्रतिद्वन्द्वियों को धराशायी कर रहा था।

"जरा फोटो तो दिखाओ," उशाकोव ने कहा, नज़रों से डाक्टरनी को उन्हें देखने के लिये इशारा किया, मानो कोई हँसी-मज़ाक़ की चीज़ दिखाने जा रहा हो। "दिखाओ, दिखाओ भी!"

श्रेष्ठता की उसी मुस्कान के साथ इश्चेन्को ने टीन के डिब्बे में राख झाड़ी, सिगरेट-होल्डर को मेज़ पर रख दिया। उसके नीचे फौरन धुएँ का दूधिया धब्बा फैलने लगा। अन्दर की जेब से उसने डायरी निकाली, डायरी से लिफाफा और लिफाफे के अन्दर से घिसे-पिटे फोटो। इस बीच दरवाज़े के पीछे से अर्दली और घर की मालिकिन की तू-तू मैं-मैं सुनाई पड़ रही थी। फिर, सिर झटकती, कटु मुस्कान के लिये मालिकिन ने प्रवेश किया, शायद उसे रसोई से भगा दिया गया था।

ये युद्ध से पहले के सामान्य फोटो थे। एक में नाव का दृश्य था। इश्चेन्को जाँघिया पहने है, गीले बाल माथे पर चिपके हैं, धूप के कारण उसकी आँखें मिंची-मिंची हैं, और उसकी पत्नी सफ़ेद ड्रेस में है, घुटनों पर कुमुदनी के सफ़ेद फूल ऐसे रखे हैं कि कपड़ों पर दाग न पड़ जाये। दूसरा फोटो। सागर तट का एक दृश्य। वे रेत पर अगल-बगल लेटे हैं; हथेलियों पर गाल टिकाकर सीधे कैमरे के लेंस में देख रहे हैं। बीवी का ताम्रवर्ण गठीला शरीर है, कमर लगभग नहीं के बराबर, वह संकरी चोली और कच्छे में लेटी है। तीसरा फोटो। एक और दृश्य : वह और उसकी बीवी महीन पर्दे के पीछे से बाहर झाँक रहे हैं यह फोटो भी धूप में खींचा गया है, उसकी बीवी फिर अपनी वही सफ़ेद ड्रेस पहने हुए है, जिसे वह शुद्धता के प्रतीक की तरह पहनती है। आभास देते हुए कि उसी ने अपनी बीवी को यह सब दिया है, अपने परतले में हाथ खोंसे हुए हैं।

"इधर देखो," इश्चेन्को ने फोटो की तरफ़ उँगली से इशारा किया, "यहाँ रेजिमेण्ट कमाण्डर कर्नल स्मेतानिन रहते थे। हमारी दीवार के उस ओर। हाँ, दरवाज़ा उनका

दूसरी तरफ़ से था।"

वह जब भी फोटो दिखाता, हमेशा यही कहता। इसके अलावा वह यह भी सदर्प विस्तार से बताता कि वह अपनी पत्नी को कितना प्यार करता, किस तरह वह उसे सब कुछ खरीदकर देता।

फ़ौजी डाक्टरनी ने एक फोटो उठाया। और जब उसने किरोसिन लैम्प की रोशनी में, खिड़की पर खड़ी युवा महिला को देखा तो कुछ-कुछ उदासी, खेद की परछाई की तरह क्षण भर के लिये उसके चेहरे पर पड़ी। पर उसने फ़ौरन फोटो लौटा दिया, और उसके चेहरे पर वही उपहासपूर्ण भाव छा गया, जो आम तौर पर उसके चेहरे पर तब छा जाता था, जब उस पर डोरे डाले जाते थे। और मोर्चे पर तो हमेशा उस पर डोरे डाले जाते थे।

"यह थी न ज़िन्दगी!" पीछे खड़ी मालिकिन ने फोटो देखकर कहा। "हे भगवान, क्या सचमुच ऐसी ज़िन्दगी रही थी?"

वासिच ने उसकी ओर देखा। कितनी बार वह सुन चुका है। बस, इसी तरह अतीत को युद्ध से पहले के जीवन को याद किया जाता था। हालाँकि तब भी सभी कुछ अच्छा नहीं था, अभावमय जीवन था, पर उन तमाम कमियों के बावजूद तात्कालीन जीवन को अब महान सुख की तरह याद किया जाता था। क्योंकि तब शान्ति थी और जीवन में अमन चैन था।

दरवाज़े में झुककर बटालियन के सार्जेंट-मेज़र ने प्रवेश किया, जुकाम से भारी आवाज़ में वह दहाड़कर बोला :

"कामरेड मेज़र, आपके आदेशनुसार सार्जेंट-मेज़र इवानोव उपस्थित है!"

बालक भय से सिहर गया, उसके कन्धे ऐसे काँपने लगे मानो वह सुबक रहा हो।

"किसने तुम्हें आदेश दिया था?" कुर्सी पर पीछे झुककर कन्धे के ऊपर से पीछे खड़े सार्जेंट-मेज़र की ओर देखते हुए उशाकोव ने हैरानी से पूछा।

"आवाज़ भी तुम्हारी ग़ज़ब की है, सार्जेंट-मेज़र!" वासिच ने नाखुश होकर कहा और बालक के दुबले मोढ़ों पर हाथ फेरा। "ऐसे दहाड़ रहे हो मानो घुड़सवारों की परेड में हो। पर तुम तो घर के अन्दर हो।"

और मालिकिन, लोगों के सामने सफाई देते हुए कह रही थी :

"डरपोक हो गया है बेचारा। हमारे घर में एक जर्मन ठहरा था। रौबीला था, अक्सर रोना रोया करता था कि यह छत क्यों इतनी नीची है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह खूँख्वार था। पता है, दूसरे कैसे थे! पर यह दूसरों जैसा नहीं था। जरा सख़्त ज़रूर था। हर चीज़ में व्यवस्था पसन्द करता था। पर यह तो छोटा ही था, अक़्ल तो थी नहीं, इसे भूख लगी थी । बस मेज़ पर से रोटी का टुकड़ा उठा लिया। उसने सोचा, अपने घर में तो लेकर खा ही सकता है। पर जर्मन ने उसे पकड़ लिया। 'चोर!' बोला : 'चोर! चोरी नहीं करते, माँगना चाहिए।' तब से जब मेज़ पर बैठता, इसे पिल्ले की

तरह बुलाता और रोटी का एक टुकड़ा पकड़ा देता। और सीख देता रहता, उँगली हिला-हिलाकर डराता रहता। इसको 'डांके' कहकर शुक्रिया अदा करना चाहिए था पर यह तो डर के मारे सारे शब्द भूल गया, बस चुप ही रहा। और उस जर्मन को गुस्सा आ गया। उसने बालक को कोने में खड़ा कर दिया और पिस्तौल तानकर 'ठाँय' बोला। बस तब से यह हकलाने लगा। मैं इस सम्भालने लगी। जर्मन पैर पटककर मुझसे कहने लगा : 'अम्मा! तुम्हारा बेटा बदतमीज़ है! बदतमीज़! सिखाओ इसे!'''

वह सहजता से लगभग शान्त स्वर में बता रही थी। गालों पर आँसू स्वत : बह रहे थे। और उन्हें देखकर, लड़का व्याकुल हो रहा था, वह कुछ कहना चाहता था, पर उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी, गर्दन के पास खाल धँस रही थी।

''आप इसे याद न दिलायें,'' डाक्टरनी ने उसे रोक दिया। ''देखिये, वह घबरा रहा है।''

''याद क्या दिलाना, ऐसी बातें भला भुलायी जाती हैं?''

और, सार्जेंट-मेज़र के साथ दरवाज़े से निकलते हुए, वासिच मालिकिन की बात सुन रहा था :

''आप लोग जैसे ही हम्माम में गये, यह आपके ग्रेटकोट सूँघने लगा। छोटा था, पिता की याद नहीं, पिता मोर्चे पर रवाना होते समय विदा लेने एक मिनट के लिये घर आया था, बस तब से यह अपनों की गन्ध नहीं भूला...''

ड्योढ़ी के अँधेरे में, जहाँ से भेड़ के भुने गोश्त की तीखी सुगन्ध आ रही थी, वासिच ने सार्जेंट-मेज़र के चेहरे को देखने की कोशिश करते हुए कहा :

''हाँ, तो सुनो सार्जेंट-मेज़र, मैंने तुम्हें बुलवाया था : बूटों की ज़रूरत है, छोटे साइज के। हैं, तुम्हारे पास?''

''क्या पता... हों शायद पुराने। दस नम्बर के...''

सार्जेंट-मेज़र हाथ से ठोड़ी मल रहा था, आँख से आँख नहीं मिला रहा था। एहतियात के तौर पर शुरू में वह हमेशा नासमझी का आभास देता।

''सोचो तो, तुम कह क्या रहे हो, सार्जेंट-मेज़र! तुम तो अक्लमन्द आदमी हो।''

''बूट?'' अब बिल्कुल दूसरी आवाज़ में सार्जेंट-मेज़र ने सवाल दोहराया, वह समझ गया कि बूटों की ज़रूरत डाक्टरनी के लिये नहीं जो उनके साथ मेज़ पर बैठी थी, बल्कि लड़के के लिये थी। ''बूट होने चाहिए। बच्चे के लिये कुछ कपड़े-वपड़े भी मिल सकते हैं। अगर ठीक से ढूँढ़ा जाय...''

''ढूँढ़ो,'' वासिच ने दृढ़ता के साथ कहा। ''और भेज देना। जब हम जाने लगेंगे तभी ठीक रहेगा।''

मेज़ पर इश्चेन्को करीने से फोटो रख रहा था। लड़का हाथ में अधूरे बने खिलौने को पकड़े खड़ा था, उसने वासिच की ओर उत्सुकता से देखा। वासिच बैठ गया और वह फिर खिलौना तराशने लगा। वास्तव में उसे कुछ सफलता मिल रही थी : बचपन

में उसने पिता से यह काम सीखा था। जब से मानवजाति अस्तित्व में आयी है तब से बेटा बाप से सीखता रहा है, उसके हर क़दम का अनुकरण करता रहा है और उस जैसा बनकर गर्व का अनुभव भी करता रहा है... वासिच के बूटों के बीच की खाली जगह पर, मिट्टी के फ़र्श पर लड़का नंगे पाँव खड़ा था। वह एक सैनिक का बेटा है। वासिच के घुटने आहिस्ता-आहिस्ता उसके दुर्बल शरीर को छू रहे थे। पता नहीं कहाँ है उसका पिता, कौन-सी राहों पर रायफल उठाये चल रहा है? और क्या पता वह अब ज़िन्दा भी न हो? अचानक वासिच का रोम-रोम स्नेह से भर गया, आँखें डबडबा आयीं और उसके हाथ काँपने लगे। पर उसने अपने को नियंत्रित कर लिया : लड़का उसके काँपते हाथों को देख रहा था।

कोई दरवाज़ा खोलने का प्रयास कर रहा था। शायद बागरादज़े था। मालिकिन उसकी सहायता के लिये लपकी, पर कमरे में एक सैनिक ने प्रवेश किया, जिसके धक्के से मालिकिन गिरते-गिरते बची। सैनिक के बर्फ़ से ढके नमदे के बूट पत्थर की तरह कड़े थे, उसने कानों पर कनटोप को बाँध रखा था। अँधेरे से लैम्प के तेज़ प्रकाश में आकर उसने चौंधियायी आँखें इधर-उधर दौड़ायीं, बटालियन कमाण्डर को देखकर उसने दस्तानेवाले हाथ को टोपी पर टिकाकर सेल्यूट दिया और दूसरे हाथ से ग्रेटकोट के अन्दर से झटके के साथ लिफाफा निकाला।

उशाकोव खड़े-खड़े पत्र को पढ़ रहा था, सबका ध्यान उन दोनों की तरफ़ था। वे सब जान गये थे कि आराम का वक़्त खत्म हो गया है। सैनिक के बूटों पर बर्फ़ पिघल रही थी।

खुले दरवाज़े में बागरादज़े ने प्रवेश किया, उसके ऊपर उठे हाथों में, एक पटरे पर पिघली चर्बी से चमकती भेड़ के भूने मांस की तीखी सुगन्ध छोड़ती बोटी थी। उसने मांस को मेज़ के बीचों-बीच रख दिया और विनम्रता के साथ एक क़दम पीछे हटा। पर लड़के और बाहर की ठण्ड से आये सैनिक के अलावा कोई भी इस मांस की ओर नहीं देख रहा था।

उशाकोव ने आदेश-पत्र को मेज़ पर रख दिया और सैनिक की ओर मुड़कर बोला :

''बैटरी कमाण्डरों, प्लाटून कमाण्डर को बुलाओ!''

सन्देशवाहक के निकलने पर दरवाज़ा धड़ाम से बन्द हो गया। उशाकोव ने चुस्ती से फ्लास्क उठाया और चार गिलास भर दिये, वह अब भी नहीं बता रहा था कि क्या आदेश मिला है। मालिकिन को देखकर, उसके लिये भी गिलास में डाल दी।

''हमारी रवानगी से पहले हमारे साथ पी लो,'' उसकी ओर गिलास बढ़ाते हुए उशाकोव ने कहा। और अर्थपूर्ण मुस्करा दिया। वह खुद अपने ऊपर हँस पड़ा कि वह भाग्य को धोखा देने की सोच बैठा था। उसे तो अपने अनुभव से मालूम था कि पोजीशन छोड़ने का आदेश तभी आता था, जब खाई बनकर तैयार हो जाती और उसमें पहली बार अँगीठी जलायी जाती। चलो, क्या किया जाये, गर्म हम्माम में नहा

लिये—यही गनीमत है! यह सौभाग्य भी हर लड़ाई से पहले नसीब नहीं होता। नहीं, वह अपने भाग्य का रोना नहीं रो रहा था। वह तो सैनिक है। उसने तो खुद यह रास्ता चुना था। और उसे इस पर गर्व था।

फ़ौजी डाक्टरनी से अपना गिलास टकराते हुए, उशाकोव ने उसकी आँखों मे स्पष्ट दया-भाव के साथ झाँका, वह निष्कपट, बिना कुछ छिपाये उसकी आँखों में आँखें डालकर देख रहा था। डाक्टरनी ने भी ऐसी ही दृष्टि से जवाब दिया।

"चलो, घरवालों की फटकार न सुननी पड़े!"

उन्होंने खड़े-खड़े अपने गिलास खाली कर डाले, और बालक अपना चेहरा ऊपर उठाये उनकी ओर देख रहा था, उसकी नन्ही-नन्ही आँखों में बड़ों जैसी आशंका का भाव था। उशाकोव ने गिलास की बूँदों को फ़र्श पर झटककर उसे मेज़ पर रख दिया। फिर मेज़ के ऊपर से लिफाफा वासिच की ओर बढ़ा दिया :

"लो, पढ़ लो!"

और अब दूसरी ही, परायी-सी आँखों से उसने कमरे में दृष्टि दौड़ायी, जहाँ वे अब कुछ ही देर के लिये ठहरे थे।

अध्याय 2

आकस्मिक ख़तरे का संकेत पाते ही हथियार से लैस सैनिक जल्दी-जल्दी कपड़ों के बटन बन्द करते और भागते हुए पाले में बाहर आ रहे थे। गाँव में आवाज़ें सुनायी पड़ रही थीं। :

"प्रथम बै...टरी!"

"तृतीय के तोपची!"

"फ़िलीमोनोव, फ़िलीमोनोव! चालू भी कर, तेरी ऐसी की तैसी!..."

"लाइन... बन!.."

कहीं टहनियों की बाड़ के टूटने की आवाज़ आ रही थी। घोड़े हिनहिना रहे थे। गाँववासी भयभीत, जैसे-तैसे कपड़े पहने घरों के सामने खड़े थे। बच्चे माँओं से चिपके हुए थे। उनके चारों ओर बूट खटकाते सशस्त्र जवान दौड़ रहे थे।

एक गली में लाइन बननी शुरू हो गयी थी। नींद से उठाये गये लोग पाले में फ़ौरन ठिठुर गये थे, वे यहीं खड़े-खड़े पेटियाँ कस रहे थे, उनके हथियार एक दूसरे से टकराकर ठक-ठक कर रहे थे, सैनिक व्यग्रता के कारण उबासियाँ ले रहे थे। हवा ग्रेटकोटों से बची-खुची गर्मी को उड़ाये लिये जा रही थी।

क़तार में खड़े लोगों के पीछे याचनाभरी आँखोंवाला युवा सैनिक इधर-उधर दौड़ता

पूछ रहा था :

"मित्रों, किसने मेरे गेटर लिये हैं?... मैंने अँगीठी के पास टाँगे थे..."

और तभी सार्जेंट-मेज़र से उसकी भिड़ंत हो गयी। व्यवस्था में पूरी आस्था के साथ सार्जेंट-मेज़र बैटरी को लाइन में खड़ा कर रहा था। और अचानक ऐसा आदमी दिखाई पड़ा जो इस प्रक्रिया को भंग कर रहा था।

"फिर तुम हो, रदिओनोव?" उसने धीरे-से फुफकारकर पूछा।

और बेचारे रदिओनोव ने, जिसने कभी भी शिकायत का मौका नहीं दिया था, इस 'फिर' को चुपचाप गटक लिया क्योंकि इस क्षण वह गेटरों के बिना खड़ा था।

कहीं पास से रायफल की गोली चलने की आवाज़ सुनाई पड़ी। चमकदार ट्रेसर गोलियों की जंजीर आकाश में तारों की ओर मौन उड़ने लगी। फिर स्टेनगन की आवाज़ सुनाई पड़ी। कई जवान, दौड़ते-दौड़ते रुके, ऊपर की ओर देखकर और भी तेज़ दौड़ने लगे।

हमेशा की तरह, जैसा कि ऐसी परिस्थितियों में होता है, बटालियन में रदिओनोव के गेटर ही नदारद नहीं थे। लगभग एक ही समय वासिच के साथ द्वितीय बैटरी का कमाण्डर क्रीवोशेइन भी दौड़ता हुआ उशाकोव के पास आया। सेल्यूट देते हुए अपने कनटोप के सिरे से उँगलियाँ हटाये बिना, वह जितना तनकर खड़ा होने को प्रयत्न कर रहा था, उतना ही अपने को दोषी महसूस कर रहा था, उसने रिपोर्ट देनी शुरू की कि वह ट्रैक्टर जिसका इंजन खुला हुआ है—उसका ट्रैक्टर है और बैटरी के पास और कोई ट्रैक्टर नहीं है, और तोप को खींचकर ले जाने के लिये कुछ भी नहीं है। इसके अलावा तोप का दण्ड टूटा हुआ है, और तोपचियों के प्लाटून कमाण्डर की तबीयत डिब्बाबन्द खाना खाकर खराब हो गयी है। मतलब यह निकल रहा था कि वह तो खुद अभी मार्च के लिये तैयार है पर बैटरी उसकी सवेरे से पहले मार्च नहीं कर पायेगी।

नाटा, चौड़े कन्धोंवाला उशाकोव, पेटियों से कसे, एड़ियों तक लम्बे घुड़सवारों के ग्रेटकोट में, जो उसके विचार में कद लम्बा होने का आभास देता था, समूर की गोल टोपी लगाये, बर्फ़ पर अपनी छोटी परछाईं के पास खड़ा था। वह आँखें मिच-मिचाकर नीचे से ऊपर तक बैटरी कमाण्डर को तौल रहा था। अपने अनुभव से वह बहुत पहले से ही सरल सत्य को जानता था : अगर सभी खराबियों, कमियों को जोड़ा जाय तो पता चलेगा कि ऐसी स्थिति में लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती। पर फिर भी लड़ रहे थे।

एक ओर खड़ा वासिच उन दोनों को देख रहा था।

"देखो तोपची को?" उशाकोव कटुता से हँसा। "अपना रुमाल दे दो इसे आँसू पोंछने के लिये। ऐसी सूरत बनाकर बटालियन कमाण्डर के सामने खड़ा है। बुद्धिजीवी कहीं का!..."

"प्रसंगवश कह दूँ," वासिच बोला, "तुम भी तो बुद्धिजीवी हो। सभी नियमों के अनुसार। आख़िर तुम आर्टिलरी के अफ़सर हो।"

"छोड़ो भी, छोड़ो!" उशाकोव ने उसकी ओर ऊनी दस्ताने से ढकी छोटी उँगली हिलाते हुए कहा। "आर्टिलरी का हूँ, इस बात से इंकार नहीं करता। पर यह तुम छोड़ो! तुम कब से मुझ पर यह ठप्पा लगाना चाहते हो।" वासिच को क्रीवोशेइन की कृतज्ञ दृष्टि दिखाई पड़ी। लगता था, वह इन शब्दों को अपनी हिमायत मान बैठा था। और उसे यह अप्रिय लग रहा था, जो कठिन क्षण में कृपा की भीख माँगने.आया था।

तृतीय बैटरी का ट्रैक्टर-चालक अपने ट्रैक्टर को गर्म करने के लिये पास से दौड़ता हुआ गुजरा। उसके उठे हाथ में, कपड़े से लिपटे डण्डे पर डीजल तेल की कालिख छोड़ती लाल लपट फड़फड़ा रही थी, जलती बूँदें बर्फ़ पर टपक रही थीं। और इस प्रकाश के सामने आनेवाले अस्त्रों और जवानों के चेहरों पर आशंकापूर्ण चमक फैल जाती।

"तुम आये किस लिये हो? तुम पर तरस खाऊँ क्या? कहूँ जर्मनों से, कि भई, अभी थोड़ा रुक जाओ, दूसरी बैटरी का कमाण्डर अभी लड़ने को तैयार नहीं हुआ?"

उशाकोव की छोटी-छोटी आँखों में तिरस्कार का भाव चमक रहा था। उसने ग्रेटकोट की आस्तीन मोड़कर, गोल जाली से ढकी घड़ी देखी।

"दस मिनट का वक़्त दे रहा हूँ! समझे?" द्वितीय बैटरी के कमाण्डर ने चुपचाप सेल्यूट मारा।

झुण्ड बनाकर, चलते-चलते मुँह में कुछ चबाते हुए, गुप्तचर पास से गुजरे। सब बिना ग्रेटकोट के थे, रूईभरे कोटों में, तरह-तरह की दूरबीनें उठाकर ले जा रहे थे, हरेक की बगल में नीचे की ओर नाल किये स्टेनगनें लटकी थीं। उनके साथ सबसे लम्बे कद का, बटालियन का गुप्तचर्या अधिकारी, कैप्टन मास्तोवोई था। बेखटके चलनेवाले, हर हालत में अपने पर और अपनी स्टेनगन पर भरोसा रखनेवाला ये चतुर लोग, दूसरों से पहले आगे जाकर बिखर रहे थे।

पैरों तले ज़मीन काँपने लगी थी : सड़क पर ट्रैक्टर में जुती तोप जा रही थी। ट्रैक्टर के साथ-साथ दौड़ता हुआ सार्जेंट चिल्ला-चिल्लाकर ट्रैक्टर-चालक को कुछ दिखा रहा था, पर इंजन की गरज के कारण उसकी आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी।

गरजता, खड़खड़ाता, गर्म भभका छोड़ता हुआ दूसरा ट्रैक्टर भी गुजरा। तोप के पीछे-पीछे व्यग्र और संकेंद्रित तोपची जल्दी-जल्दी चल रहे थे। खुले ग्रेटकोट को छाती पर हाथ से थामे फ़ौजी डाक्टरनी दौड़ते हुई ड्योढ़ी से बाहर निकली।

"तो आप लोग जा रहे हैं?"

उशाकोव उसकी ओर मुड़ा।

"हमारी ड्यूटी ही ऐसी है!" उसने हर्षित और एक खास अन्दाज़ में आँखें चमकाते हुए कहा, क्योंकि इस समय उसकी पीठ के पीछे से बटालियन गुजर रहा था। और अचानक एक गीत की पंक्तियाँ गाकर उसे बुलाने लगा : "चले, गाल्या, साथ हमारे, हम कज़्ज़ाकों के साथ!"..

फ़ौजी डाक्टरनी हँस पड़ी और पास से गुजरते सैनिकों की नज़रों को झेलते हुए

इसी अन्दाज़ में उसने जवाब दिया :

"पर घोड़ा दोगे?"

"दो घोड़े देंगे!"

"जाने की इच्छा तो है, पर जा नहीं सकते : नौकरी जो है!"

हालाँकि कोई खास बात नहीं कही गयी थी फिर भी पास से जल्दी में गुजरते सैनिक, पता नहीं क्यों मुस्कराते हुए बाँकी नज़र से उसे देख रहे थे।

बर्फ़ से जमकर पत्थर बने कीचड़ पर अब छकड़ों के पहिये खड़खड़ा रहे थे, अचानक ढलान पर सनसनाहट सुनाई पड़ी और घरों के पीछे, गरज के साथ धरती को कँपाते.हुए चार बार लपटें फूटीं। सब उस ओर मुड़ गये। और तब फ़ौजी डाक्टरनी ने, बिल्कुल औरतों की तरह, बहिनों की तरह उशाकोव को अपनी ओर खींचा—वह उससे नाटा था :

"लाओ, मैं तुम्हें चूम लूँ!"

सबके सामने उसे कसकर चूमा। उस चीज़ की कसर निकालते हुए, जो उनके बीच नहीं हुई, जो हो सकती थी और अब नहीं होगी।

"लाइये, मैं आपको भी चूम लूँ।"

और फ़ौजी डाक्टरनी ने वासिच को भी चूमा। उसके गीले, कटे हुए छोटे बालों में से, पाले की ठण्डी हवा में, स्ट्राबेरी के साबुन की खुशबू आ रही थी। वासिच को यह सुगन्ध बहुत देर तक अनुभव होती रही।

गाँव के बाहर वे अपने बटालियन से जा मिले। वह बर्फ़ से ढकी सड़क पर लम्बी क़तार में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था—काली तोपें, काली जंजीर बनाकर चलते लोग। हवा, जो घरों के बीच इतनी महसूस नहीं हो रही थी, खुले मैदान में बड़ी तेज़ थी, वह तिरछी चलती तिरपाल से ढकी तोपों को बर्फ़ से ढक रही थी, और लोग एक ओर मुँह मोड़कर चल रहे थे। और शीघ्र ही बर्फ़ और हवा के पीछे गाँव आँख से ओझल हो गया, मानो हिमाच्छादित छतों और पोपलर के पेड़ों की फुनगियों समेत किसी टीले के पीछे छिप गया। सिर्फ़ ठण्डा चाँद ऊपर से चाँदनी बिखेरता सुनसान बर्फ़ीले मैदान में उनके साथ-साथ चल रहा था।

अध्याय 3

'अलविदा! मैं आपको चूम लूँ...'

"आओ, मैं तुम्हें चूम लूँ!"

पैरों की उँगलियों पर उचककर उसने अपनी गर्म हथेलियों में उसका चेहरा थामा और अपनी ओर खींचा।

"हे भगवान, तुम तो खासे लम्बू हो! लगता है, मैं कभी आदी नहीं हो पाऊँगी। चेहरा भी इतना बड़ा है। भेड़िये के थूथने जैसा।"

हाथ में टोपी पकड़े, पेटी से कसा ग्रेटकोट पहने वासिच उसके सामने खड़ा था, वह अटपटेपन और ऊँचे कद के कारण झुका हुआ था।

"तुम्हारे बदन से बूटों और चमड़े की गन्ध आ रही है..."

वासिच को उसकी आँखों में आँसू दिखाई पड़े। लड़की ने मुँह मोड़ लिया।

"मेरी माँ ने जब पिता को मोर्चे पर विदा किया, तब मैं पैदा भी नहीं हुई थी। और अब मैं तुम्हें विदा कर रही हूँ। क्या हमेशा यही होता रहेगा, पीढ़ी दर पीढ़ी?"

वह खिड़की की ओर मुँह किये खड़ी थी, नन्ही-सी, ताम्रवर्ण, अपने सफ़ेद चोगे की जेबों में हाथ डाले, इतनी अपनी-अपनी, इतनी प्रिय कि वासिच का दिल करुणा से भर आया।

दरवाज़े में आपरेशन नर्स झाँकी।

"दीना याकोवलेवना..."

वह खिड़की से मुड़ी, आँखें सूख चुकी थीं, बस गाल कुछ अधिक लाल थे। चोगे की आस्तीन मोड़कर उसने कलाई से घड़ी उतारी और उसे शीशे की छोटी मेज़ पर रखते हुए कहा।

"मुझे अभी आपरेशन करना है। बीस मिनट लगेंगे। तुम बैठकर प्रतीक्षा करो। फिर मैं तुम्हें विदा करने चलूँगी।"

वह उससे कुछ भी न बोला, ताकि वह आपरेशन करते समय शान्त रहे। पृष्ठ-प्रदेश में स्थित अस्पताल के छोटे-से, काँच, निकिल, सफ़ेद रोगन की चीज़ों से भरे कमरे में वासिच घुटने पर टोपी रखकर सावधानी के साथ कुर्सी के किनारे पर बैठा था। खिड़की से झिलमिलाते हिम उदास में सारी चीज़ें शीतल, निर्मल लग रही थीं, चमक सी रही थी। वह सिगरेट पीना चाहता था, पर यहाँ पीने का साहस न कर पाया और इसी तरह पूरे बीस मिनट बिना हिले-डुले बैठा रहा, और पास में काँच पर रखी उसकी घड़ी टिक-टिक कर रही थी।

फिर दीना जल्दी-जल्दी कमरे में घुसी, वासिच फौरन खड़ा हो गया, वह घबरायी लगती थी। चेहरा कुछ-कुछ पीला पड़ गया था, कपड़ों से दवाओं और स्पिरिट की बू आ रही थी। वह उसकी ओर पीठ करके खड़ी हो गयी।

"इसे खोलो!"

और खुद चोगे की आस्तीनें उतारने लगी।

"दीना!" उसने टोपी को सीने पर दबाते हुए पूर्ण विश्वास के साथ कहा, क्योंकि वह उसके स्वभाव को अच्छी तरह जानता था, दूर से उसके चेहरे को देखकर तरस आता था। "समझती हो..."

"मैं समझती हूँ," उसने कहा। "खोलो!"

वह चुपचाप चोगे के तस्मे खोलने लगा, उसे पुनः किसी आकस्मिक सन्देश की आशंका थी। और हुआ भी वही। आपरेशन नर्स ने दरवाज़े से अन्दर झाँका...

"दीना याकोवलेवना!.."

उसे फिर फ़ौरी आपरेशन के लिये जाना पड़ा और वह प्रतीक्षा करता रह गया।

"वचन दो, कि तुम मेरा इन्तज़ार करोगे!"

उसने ठहरने का वचन दे दिया। वह पुनः बैठकर प्रतीक्षा की यातना सहता हुआ घड़ी की टिक-टिक सुनने लगा। खिड़की के बाहर बरसाती से ढकी ट्रक आकर रुकी। अस्पताल से डिस्चार्ज हुए सैनिक किटबैग उछालकर ट्रक के अन्दर डालते हुउ उस पर चढ़ने लगे। ग्रेटकोट के ऊपर सफ़ेद चोगा डाले प्रबन्ध अधिकारी लपककर अन्दर घुसा :

"कामरेड कैप्टन! आप कर क्या रहे हैं? मैं दौड़-दौड़कर आपको ढूँढ रहा हूँ..."

"धीरे बोलो!" वासिच ने कहा। "जरा, आहिस्ता!"

क़ागज़ के टुकड़े पर उसने छोटा-सा सन्देश लिख दिया :

'दीना! बात यह है कि गाड़ी आ गयी, मैं कुछ नहीं कर सका। और विदाई का फायदा भी क्या है—सिर्फ़ बेकार आँसू।'

क़ागज़ पर घड़ी रखकर वह धीरे-से कमरे से बाहर आ गया...

और अब, उस दरवाज़े को सावधानी से बन्द किये पूरा साल हो गया है। तब जाड़ा था, युराल का जाड़ा। और अब फिर जाड़ा है, पर उक्राइन में। हवा फ़ौजी बूटों, आगे-आगे चलती तोपों के पहियों को बर्फ़ से ढक रही थी। ग्रेटकोट पहने हुए सिपाही किटबैगों को पीठों पर लादे झुककर चल रहे थे, उनके कन्धों के ऊपर कारबाइनों की सफ़ेद बर्फ़ से ढकी नालें निकली हुई थीं।

यहाँ से यूराल तक उनके बीच कितने हजार किलोमीटर तक बर्फ़ ही बर्फ़ है?

वह सिमटकर सोना पसन्द करती थी। कुण्डली मारकर घुटनों को ठोड़ी पर टिकाकर सो जाया करती। शायद इसलिये कि रात को कमरा जल्दी ठण्डा हो जाता और नींद में फ़ौजी कम्बल के नीचे वह ठिठुर जाती।

नन्ही-सी, सिमटी हुई अब वह उसके दिल में बसी हुई थी, और इस बर्फानी रात में उसकी अनुभूति कितनी उष्मादायी लग रही थी।

"कोमिस्सार! क्यों मुस्करा रहे हो? सो रहे हो क्या?"

सड़क के किनारे उगे टेढ़े-मेढ़े पेड़ के नीचे पीठ के पीछ हाथ किये उशाकोव खड़ा था।

"चलते-चलते मुस्कराते हो... क्या, कोई सपना देखा है?" वह कह रहा था। वासिच उसके पास गया।

"सपना ही लगता है..."

बादलों के पीछे से धुँधले धब्बे सा चमकता हुआ चाँद झाँक रहा था, नीरव मैदान

में तेज़ हवा चल रही थी और चारों ओर भाप-सा छोड़ता हिम-प्रान्तर दिखाई पड़ रहा था।

"तुमने नक्शा नहीं देखा, मोर्चा कितनी दूर है?" उशाकोव ने पूछा। "पता नहीं क्यों वे मौन हैं, गोलाबारी क्यों नहीं करते? खाने की छुट्टी है या युद्ध खत्म हो गया?"

वासिच स्नेह के साथ उसकी ओर देख रहा था। वह उशाकोव को अच्छी तरह जानता था, पर खुद वह इस समय कोई आशंका नहीं महसूस कर रहा था इस लिये उसकी दशा को नहीं समझ पा रहा था।

"सुनो," उसने उशाकोव को खफ़श करने के उद्देश्य से कहा। "मैं अभी गुप्तचरों के साथ आगे जाकर टोह लेता हूँ, देखता हूँ।"

टीले, टीले ही टीले... टीलों की सतह पर चलती तेज़ हवा की यायावर साँय-साँय, नीचे लटका काला आकाश, पास का जंगल तेज़ हवा के दबाव से भाँय-भाँय कर रहा है। उसकी प्रतिध्वनि सी गूँज रही थी।

हवा में उड़ती बर्फ़ को चीरते हुए वे तीनों जंगल की ओर से आ रहे थे। वासिच ने पहले मोस्तोवोई पर, फिर अजीब नामवाले गुप्तचर खालातूरा पर नज़र डाली। कन्धे बर्फ़ से ढके हुए, टोपियाँ—सफ़ेद, चेहरे—हवा के कोड़े खा-खाकर दहकते से। मोस्तोवोई अचानक बर्फ़ पर बैठ गया।

"कैप्टन, रुको, जूते ठीक करने हैं।"

जब तक वह बूट उतार रहा था, वासिच हवा के कारण पानी बहाती आँखों से अग्रिम पाँत की दिशा में देख रहा था। वहाँ, टीले के पीछे, मानो धुएँ में से कभी-कभी धुँधली चमक होती। और जब भभूका बुझ जाता, तो बर्फ़ को चीरती हुई शान्ति को तोड़ती हुई मशीनगन की कर्कश ठक-ठक सुनाई पड़ती। जंगल में उसकी प्रतिध्वनि होती और फिर निर्जन मैदान में सिर्फ़ हवा की साँय-साँय ही शेष रह जाती। वास्तव में, क्यों इतनी नीरवता है? वासिच ने बेसब्री से मोस्तोवोई की ओर मुड़कर देखा। बर्फ़ पर बैठा बटालियन का गुप्तचर्या अधिकारी, अस्त-व्यस्त गेटर को ऐसे खोल रहा था मानो घाव पर से पट्टी। और तभी वासिच को उसका पाँव दिखाई पड़ा। वह ठण्ड से जमा हुआ था, सूजकर नीला पड़ गया था।

"यह कहाँ तुमने जमा लिया?" उसने मानो दर्द से नाक-भौं सिकोड़ते हुए पूछा।

मोस्तोवोई ने गेटर के सूखे सिरे से पाँव को फिर लपेट लिया।

"अरे तब की बात है जब स्टेनगनर घुस आये थे... मैं नमदे के बूटों में था, वे गीले हो गये और पाले ने उन्हें जमा दिया। सबसे सड़ियल जूते होते हैं।

उसके झुके, मजबूत कन्धे रूईभरे कोट के अन्दर हिल-डुल रहे थे। और कोट के नीचे से भी मांसपेशियों से ढकी पीठ उभर रही थी। लम्बे हाथों की कलाइयाँ भी मांसपेशियों से ढकी थीं।

"मैं कल मेडिकल यूनिट में जाने की सोच रहा था, सभी लोगों की तरह कुछ स्पिरिट पीता, नर्सों के साथ ज़िन्दादिली की कुछ बातें-वातें करता।"

उसने ज़मीन पर बैठे-बैठे वासिच को चटकारा लेकर आँख मारी; उसकी दूसरी कटी पलकवाली आँख इस समय जड़ और गम्भीर थी। गोली का एक पुराना निशान। उसके चेहरे के बायें हिस्से को ठोड़ी से चिथड़े-चिथड़े हुई पलक तक पार करता पुराने, भयावह घाव का निशान था। इस प्रकार मोस्तोवोई के दो चेहरे थे : एक हँसमुख, निडर, युवा और दूसरा—युद्ध के घाववाला विकृत चेहरा। जब मोस्तोवोई हँसता तो यह पलक विहीन आँखवाला चेहरा सिर्फ़ कटुता और प्रज्ञा के भाव के साथ सिकुड़ता।

बिना किसी सम्बन्ध के बस सिर्फ़ इसलिये कि वह इसके बारे में सोच रहा था, मोस्तोवोई बोला :

"तब भी, सन् इकतालीस में हम खोमूतोवका के पास, घेरे से निकल रहे थे। सुना है ख़ोमूतोवका का नाम? घेरा है तो होने दो, पर अपने को ठण्डा दूध पीने का मन कर रहा था। सार्जेंट व्लासेन्को के साथ हमने डिब्बा उठाया-अच्छा लड़का था, बाद में जब हम घेरा तोड़ रहे थे, सुरंग से उसकी दोनों टाँगें उड़ गयीं। हाँ, तो हम सूरजमुखी के खेतों, सागबाड़ियों में लुकते-छिपते गाँव में पहुँच गये। गाँव में जर्मन नहीं थे। हमने हंडिया खाली की ही थी, मालिकिन दूसरी लाने के लिये तहखाने में उतरी, हम अपने साथ दूसरों के लिये ले जाना चाहते थे, इतने में दो ज़र्मन दरवाज़े में आ खड़े हुए। और हमारी ओर स्टेनगनें तान दीं। हम अपने हथियार तक न उठा सके। मैं तुम्हें क्या बताऊँ, गर्मी इतनी ग़ज़ब की थी, उनकी वर्दी पसीने से तर थी। शायद वे भी दूध पीने आये थे... हम बैठे हैं। और वे खड़े हैं। घर की मालिकिन ने तहखाने से सिर बाहर निकाला, हमें देखकर झट से वापस घुस गयी और दरवाज़ा बन्द कर लिया। तब एक जर्मन ने, जो उम्र में बड़ा था, दूसरे से अपनी भाषा में कुछ कहा, फिर मेरे पास आया और मेरा कन्धा पकड़कर मुझे दरवाज़े की ओर ले गया। मैं चुपचाप चला जा रहा था। तुम बताओ यह कैसे हुआ, मैं तो अब तक समझ नहीं पा रहा हूँ : यह जर्मन मेरे इतने पास था कि कान पर उसकी साँस महसूस हो रही थी। वहीं उसे उसकी स्टेनगन सहित पकड़ लेना बायें हाथ का खेल था। और बाद में कितनी बार उन्हें मैंने दबोचा भी है। पर तब मैं चुपचाप चलता जा रहा था... इसी तरह उसने व्लासेन्को को भी दरवाज़े तक पहुँचा दिया, जंगल की ओर इशारा करके बोला : 'हे! जाओ, चले जाओ!' हम सोच रहे थे कि पीठ में गोली मारेगा। पर कुछ नहीं हुआ। हम अपने लोगों के पास पहुँचे और उन्हें पूरा किस्सा सुना दिया। वहाँ एक कैप्टन स्मिर्नोव था... प्रथम उपकमाण्डर। वह युद्ध से पहले भी... दसेक साल से... कैप्टन था..."

दर्द और ज़ोर लगाने के कारण मोस्तोवोई का चेहरा तमतमा गया था, वह बूट को खींचकर सूजे पैर पर चढ़ाते हुए रुक-रुककर बोल रहा था। पास ही में हर क्षण मदद करने को तत्पर गुप्तचर खड़ा था, मोस्तोवोई का हर प्रयास उसके चेहरे पर प्रतिबिम्बित

हो रहा था।

"हाँ, तो उस स्मिर्नोव के कान में भनक पड़ गयी... उसने हमें गिरफ़्तार करने का हुक्म दिया... नैतिक आघात पहुँचाने के आरोप में..."

अन्तत : पाँव बूट में घुस गया। मोस्तोवोई ने दम लिया, धीरे-धीरे चेहरे की लाली उतर रही थी।

"अब चला जायेगा," वह खड़ा होकर सावधानी से पैर पर ज़ोर डालते हुए बोला। "सबसे बड़ी बात तो इसे अन्दर ठूँसना था... अब ठीक से बैठ जायेगा... तुम मुझे यह बताओ, कोमिस्सार। ठीक है, युद्ध समाप्त हो जायेगा। चलो विश्वव्यापी पैमाने पर भी मामला साफ़ है, कौन सही है, कौन दोषी, किसको क्या मिलना चाहिए। पर एक आदमी, यही जर्मन ही सही, जिसने हमें छोड़ दिया। तुम्हारा क्या विचार है, युद्ध के बाद क्या हरेक का मामला साफ़ किया जा सकेगा? हरेक का! या उसने युद्ध के दौरान हमारी भूमि पर ऐसी-ऐसी करतूतें की हैं कि उस घटना को भुला देना चहिए? क्यों?"

"भुलाना कुछ भी नहीं चाहिए," वासिच ने कहा। "वहाँ, हमारे मकान में तुमने वह लड़का देखा था? यह भी नहीं भुलाना चाहिए। जर्मन उसे सिखाता था कि चोरी नहीं करनी चाहिए और सारी ज़िन्दगी के लिये उसे हकला बना गया। उसके घर में आकर मालिक की तरह मेज़ पर बैठ गया, उसकी रोटी खाता रहा और जब बच्चे ने भूख के कारण अपनी रोटी की ओर हाथ बढ़ाया तो वह चोर हो गया। अपनी रोटी जर्मन से माँगनी चाहिए, और उस पर 'डांके' कहना चाहिए। देख लो। और कौन ईमानदारी का सबक सिखाता है? फ़ासिस्ट, जिसने पूरे यूरोप को लूट लिया, जो कभी का भूल गया कि अपनी, जर्मन रोटी का स्वाद होता कैसा है!"

"यह भी सही है कि दूसरी बातों को अनदेखा नहीं किया जा सकता।" मोस्तोवोई बोला। "देखो, मैं यहाँ जीता-जागता खड़ा हूँ, पर कब का यातना शिविरों में सड़-सड़कर मर गया होता। जर्मन भी एक जैसे नहीं हैं, एक को दूसरे के अपराधों का दोषी नहीं होना चाहिए।"

"अगर एक जैसे होते तो बात आसान हो जाती। तब कुछ सोचने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। मुसीबत तो यह है कि वे भिन्न-भिन्न—अच्छे भी और बुरे भी—मिलकर एक घिनौना काम कर रहे हैं।"

वासिच के लिये यह वार्तालाप कठिन था। उसको पक्का विश्वास था कि अगर उचित सामाजिक परिस्थितियाँ न हों, तो न हिटलर, न और कोई भी आठ साल में पूरे देश के साथ वह नहीं कर सकता जो हिटलर ने कर दिया है। यह समझने के लिये कि कैसे, युद्धलोलुप निम्न मध्यमवर्ग की उर्वर पर अल्प अवधि में ही, सिर्फ़ पिछले आठ सालों में फासीवाद इतना फला-फूला है, जर्मनी के अतीत को अच्छी तरह देखना चाहिए। पर उसने सिर्फ़ यही कहा :

"उसने तुम्हें छोड़ तो दिया। क्या पता, वह अपने में नहीं रँगना चाहता था : इसके बिना भी युद्ध समाप्त हो जायेगा। हो सकता है, वह वास्तव में ईमानदार आदमी हो। पर ईमानदार, हिटलर से घृणा करनेवाला सबसे ईमानदार जर्मन सिपाही भी, जो हमारी विजय की कामना करता है... हमारे विरुद्ध लड़ता है, हम पर गोलियाँ चलाता है, हिटलर के लिये विजय पाने का प्रयास करता है!"

"यह तो ठीक है," मोस्तोवोई ने कहा, पर पता चलता था किसी अपने ही विचार ने उसके मन में घर बना लिया था।

अगर युद्ध, जिसे वह जी भरकर भुगत चुका है, अगर उसको छलनी करनेवाले घाव उसका विश्वास नहीं डिगा सके, उसे क्रुद्ध नहीं कर सके, तो शब्द भला क्या कर सकते हैं। वासिच उसका विश्वास बदलना भी नहीं चाहता था। यह पराकाष्ठा दूसरी से तो अच्छी है।

टीलों से घाटी में उड़ती आई हवा रेत की तरह बर्फ़ को उड़ाकर चक्कर काटने लगी, कोई मुलायम चीज़ वासिच के पैरों से टकराकर एक ओर झपटी, बर्फ़ की उड़ती धाराओं में वह सीटी मारकर उसके पीछे-पीछे दौड़ता हुआ सफ़ेद आँधी में ओझल हो गया। वह अपनी स्टेनगन की नाल पर कनटोप टिकाये लौटा।

"मैं सोच रहा था कि खरगोश है!" वह हाँफता हुआ, कनटोप को सम्भालते हुए बोला।

कनटोप बर्फ़ से ढका था, पर अन्दर, जहाँ मैला चीकट अस्तर चमक रहा था, उसमें से पसीने, बालों और साबुन की गन्ध आ रही थी, जिसे पाले हवा नहीं उड़ा पायी थी। और उसकी पेंदी में सफ़ेद और खाकी धागों में पिरोई हुई दो सुइयाँ खोंसी हुई थीं। वासिच और मोस्तोवोई ने एक दूसरे की ओर देखा। फिर वे तीनों अग्रिम पाँत की दिशा में चल पड़े। वे धीरे-धीरे, पैरों के नीचे उड़ती बर्फ़ के गालों को ध्यान से देखते चल रहे थे। मोस्तोवोई एक हाथ में कनटोप पकड़े और दूसरे में स्टेनगन थामे लंगड़ाता हुआ चल रहा था। शीघ्र ही उन्हें बर्फ़ का ताज़ा ढेर दिखाई पड़ा। वे उसके पास आये। बर्फ़ के नीचे से किसी व्यक्ति के कन्धे और बिना टोपीवाला सिर दिखाई दिया। सिर पर ग्रेटकोट का कालर खिसक आया था। मृतक औंधा पड़ा था। हवा उसके ऊपर से फिसलते हिमकणों की धाराएँ उड़ाये लिये जा रही थी, मृतक के बाल हिल रहे थे, वे उसी दिशा में यानी जंगल ओर फैले हुए थे, जिधर यह व्यक्ति दौड़ रहा था।

घुटनों के बल बैठकर गुप्तचर ने मृतक पलटा। पीठ पर पड़ी मशीनगन की बौछार ने उसे छलनी कर दिया था : छाती के ऊपर चार स्थानों पर ग्रेटकोट छिदा हुआ था, कटा परतला टूट गया था। तीन फ़ौजी उसे घेरे खड़े थे, एक के हाथ में मृतक की टोपी थी, जिस पर टीन के डिब्बे को काटकर बनाया हुआ तारा टँका हुआ था। वासिच ने कान लगाकर सुना। टीले के पीछे से हवा में डूबती-उतराती इंजनों की घरघराहट अब साफ़ सुनाई पड़ने लगी थी : यह उनका बटालियन आ रहा था।

तीनों आगे चल पड़े। पचास मीटर भी न गये होंगे कि उन्हें दूसरा मृतक दिखाई पड़ा। उसे टैंक ने कुचल दिया था।

वासिच, मोस्तोवोई और गुप्तचर टैंक के निशान को टोहते हुए चल पड़े। शीघ्र ही उन्हें बख़्तरबन्द गाड़ी दिखाई पड़ी। वह नीचाई में, बर्फ़ में धँसी, क्षतिग्रस्त पड़ी थी, उसका एक पट्टा उतरा हुआ था, जिस ओर से हवा आ रही थी वहाँ बर्फ़ के ढेर से ढक गयी थी।

"कामरेड कैप्टन, यहाँ खाली कारतूस पड़े हैं! ढेरों कारतूस हैं! गुप्तचर खालातूरा पूरा मुआयना करके चिल्लाया, अब वह चार नालोंवाली विमानभेदी मशीनगन के पास कुछ कर रहा था।

अग्रिम पाँत पर उसी तरह कभी-कभी ही गोली चलने की आवाज़ आती, भभूके उड़ते और बुझते : वहाँ शान्ति थी। पर यहाँ, अग्रिम पाँत से तीनेक किलोमीटर की दूरी पर जर्मनों द्वारा हाल ही में नष्ट की गयी बख़्तरबन्द गाड़ी पड़ी थी।

"टैंको का टोही दल यहाँ से गुजरा है," मोस्तोवोई ने फटी-फटी आवाज़ में कहा और उसका विकृत गाल कई बार फड़का। "हम दो पाटों के बीच—टैंकों और टोही दल के बीच फँस सकते हैं..."

वासिच ने एक बार इस स्थान पर नज़र दौड़ायी और उसका मन किसी अनिष्ट की आशंका से उमड़ आया।

उधर टीले से, उसको चढ़कर पार करके, धरती पर लटके आकाश की ओर एग्जास्ट नली से चिंगारियाँ छोड़ता ट्रैक्टर तोप के साथ नीचे उतर रहा था। बर्फ़ था। बर्फ़ से ढकी विशाल सपाट ढलान पर—छोटा-सा काला ट्रैक्टर, छोटी-सी काली तोप और ढलान पर उसकी बग़ल में दौड़ते नन्हे-से लोग—वे सब इधर आ रहे थे। वासिच ने अनुमान लगाया कि टैंकों के साथ ऐसे युद्ध के लिये उनके बटालियन में कितने कम लोग हैं।

एक और विचार उसे विचलित कर रहा था। बर्फ़ीली ढलान पर खफ़गी के साथ दौड़ते इन लोगों को देखकर वह अचानक सोचने लगा कि कितने गाँवों और शहरों से उन्हें जमा करके युद्ध की नन्ही-सी टुकड़ी बनी है : 1318 वीं आर्टिलरी रेजिमेण्ट के तीन बटालियन में से एक! आज यहाँ फटनेवाला हर गोला रूस के कितने कोनों में आँसुओं और पीड़ा के रूप में प्रतिध्वनित होगा!

वे टीलों पर चढ़ते-उतरते पाँच किलोमीटर का रास्ता तय कर चुके थे, गंतव्य तक पहुँचने के लिये अभी तीन किलोमीटर और बाकी थे। इसमें से हर एक टीले पर तेज़ हवा में, पत्थर जैसी कड़ी बर्फ़ से ढकी ढलानों पर तोपों को विंचों की सहायता से चढ़ाया जाता और फिर ब्रेक लगाकर सावधानी से नीचे उतारा जाता।

दिक्सूचक की भेड़िये की आँख जैसी हरी चमकती सुई उस ओर दिशा दे रही थी

जहाँ से हवा आ रही थी यानी उत्तर की ओर। उशाकोव दिक्सूचक को घड़ी की तरह कलाई पर बाँधता था। उसने ग्रेटकोट की आस्तीन ठीक की और हाथों को पीठ के पीछे कर लिया।

"हाँ, तो स्टाफ अधिकारी का क्या विचार है?"

लम्बा ग्रेटकोट पहने, छाती पर दूरबीन लटकाये उशाकोव टीले पर खड़ा था। उसकी सलेटी कराकुल टोपी आंशिक तौर पर सफ़ेद थी, बर्फ़ ग्रेटकोट के रोयों में समा गयी थी।

'दिन-रात जनरल बनने के सपने देखता है' इश्चेन्को ने द्वेष के साथ सोचा।

उनके पास से, सिगरेट पीने की जल्दी में बैटरीमैन गुजर रहे थे, ऊपर चढ़ते अन्तिम ट्रैक्टर की भारी आवाज़ पास आती जा रही थी।

"पर मैं तो खुशकिस्मत रहा," किसी का चंचल स्वर सुनाई पड़ रहा था। "जैसे ही सर्दी आती, मैं घायल हो जाता! आराम से अस्पताल में लेटकर गर्मियों की प्रतीक्षा करता। बस इस बार जरा जुगाड़ नहीं बैठा!"

कोई दूसरा शिकायतभरे स्वर में शब्द निगल-निगलकर बोल रहा था :

"यारो, मैंने अपना बनियान धोया था। शुरू में जब अँगीठी से उतारकर पहना, तो वह गर्म लगा, पर अब चिपक गया—किसी तरह गर्मी नहीं आ रही है।"

"वह कर देगा तुम्हें गर्म!" सस्ता तम्बाकू पीने के कारण मोटी हुई किसी की फटी-फटी आवाज़ में ठहाका लगा। "वह पलक झपकते सुखा देगा!"

उशाकोव शोर सुनकर उस ओर मुड़ गया। द्वितीय बैटरी के कमाण्डर क्रीवोशेइन ने पास से गुजरते हुए देखा कि कामरेड मेज़र किसी को ढूँढ रहे हैं, और यह समझकर कि निःसन्देह ढूँढ उसी को रहे हैं, उसने पूरी कर्मिष्ठता से, क़दम गिनकर सेल्यूट मारा। वह चाहता था कि कमाण्डर उसे देखे। प्रायः वह बटालियन कमाण्डर से दूर ही रहने का प्रयत्न करता था। कड़े से कड़े पाले में भी उशाकोव अपनी इसी कुबानी टोपी में घूमता था। वह उससे कान तक नहीं ढकता था, ज्यादा से ज्यादा अपने दस्ताने से कान रगड़ लेता था। क्रीवोशेइन साधारण आदमी था और पाले में उसके कान जम जाते थे। और वह इसे कोई बड़ा अपराध नहीं मानता था।

वह इसके बाद, जब वह दौड़ा-दौड़ा यह बताने आया था कि उसकी बैटरी समय पर मार्च नहीं कर सकती—तब वह सच ही कह रहा था पर फिर भी अब सबके साथ मार्च कर रहा था—क्रीवोशेइन अपनी बिगड़ी छवि को सुधारने का प्रयास कर रहा था। और तोप के साथ-साथ चलते हुए, ट्रैक्टर की गड़गड़ाहट में अपने का लम्बा और शक्तिशाली महसूस करते हुए वह कामरेड मेज़र का अभिनन्दन कर रहा था। उशाकोव ने मुँह मोड़ लिया। वह चेहरे से नाखुश लग रहा था। और उसके चेहरे पर, दर्पण की तरह, द्वितीय बैटरी के कमाण्डर ने निर्दयी स्पष्टता के साथ अपनी वही छवि देखी जो वास्तविक थी : जवानी गुजर चुकी है, बुद्धिजीवी, ठोड़ी पर कनटोप के तस्मे बाँधे एक

फूहड़ आदमी। पता नहीं क्यों यह खुद को नियमित सैनिक जताने का प्रयास करता है। और वह भी कि कैसे उसने कन्धों को टेढ़ा घुमाकर सेल्यूट मारा...

पर उशाकोव उसके बारे में फौरन भूल गया। उसको सतानेवाली चिन्ताओं के सामने यह था ही क्या।

"मैंने सुना नहीं कि स्टाफ अधिकारी का विचार क्या है?" उसने उसी तरह पीठ के पीछे अपने हाथ बाँधे हुए सवाल दोहराया।

हवा उसके ग्रेटकोट के पल्लों को लम्बे बूटों में ढकी पिण्डलियों पर फड़फड़ा रही थी।

"प्राप्त सूचनाओं के अनुसार," इश्चेन्को बोला, "दुश्मन को इस समय स्ताराया तारासोवका और नोवाया तारासोवका गाँवों के बीच होना चहिए।"

अनायास ही उसके मुँह से यह बात सवाल की तरह निकल गयी। उशाकोव उसमें आत्मविश्वास की कमी को भाँप गया।

"अपना स्टाफ अधिकारी है बहुत अक़्लमन्द!" वह इश्चेन्को की आँखों में झाँककर उत्साह से बोल पड़ा। "साहसी तो नहीं, पर है बहुत अक़्लमन्द!"

उशाकोव को लग रहा था कि उसे इश्चेन्को से चिढ़ हो रही है, पर उसे वास्तव में अस्पष्ट स्थिति और वह स्थान सता रहा था जो उसके लिये सभी दृष्टियों से अनुपयुक्त था।

वह प्रथम बैटरी के कमाण्डर और तोपचियों को कुदालों और बेलचों के साथ आगे फ़ायर पोजीशन तैयार करने के लिये भेज चुका था। जर्मनों से पहले वह अगर वहाँ पहुँच गया तो टैंकों से युद्ध कर सकेगा, चाहे वह कितना ही घमासान क्यों न हो। उसने खुद ये पोजीशनें चुनी थीं, वहाँ लड़ा जा सकता था। अगर वह समय पर नहीं पहुँच सका... उशाकोव ने नीचे की ओर देखा। वहाँ, खड्ड के दूसरी ओर, ट्रैक्टर और तोप की बेढब जोड़ी—नीचे गहरी बर्फ़ को पार करके हिम की आँधी में, पत्थर की तरह जमी बर्फ़ से ढकी ढलान पर धीरे-धीरे चढ़ने लगी। बोझ उन्हें नीचे खींच रहा था। अगर टैंक इस मार्च के समय आ टपके तो उशाकोव गोलाबारी तक नहीं कर सकेगा, क्योंकि तोपों को विंचों की सहायता से ऊपर चढ़ाया जा रहा है और ब्रेकों की सहायता से उतारा जा रहा है। अपनी बेबसी की असामान्य दशा में वह झुँझला रहा था और अपनी इस झुँझलाहट को वह इश्चेन्को पर उतार रहा था।

"हाँ, तो और कौनसी 'सूचनाएँ हमें प्राप्त', हैं?"

उसका छोटी आँखों और मोटे होंठोंवाला चेहरा हवा से लाल हो चुका था। पर इससे पहले कि इश्चेन्को कुछ कह पाता, उसे उनकी ओर आता हुआ वासिच दिखाई पड़ा। वह शायद कहीं गिर पड़ा था, इसलिये सिर से टोपी उतारकर कपड़ों से बर्फ़ झाड़ रहा था।

"और, तुम कोमिस्सार, क्या कहना चाहोगे?" उशाकोव ने दूर से ही पूछा।

वासिच चढ़ाई पर चढ़ने के कारण हाँफता हुआ पास आया, जवानों के गुजरने की प्रतीक्षा करके ही वह दबी आवाज़ मे बोला :

"वहाँ, नीचे, क्षतिग्रस्त बख़्तरबन्द गाड़ी पड़ी है।"

"किसकी है?"

"हमारी। हाल ही में नष्ट की गयी है..."

उशाकोव ने ध्यान से उसकी ओर देखा। कुछ समय तक छायी नीरवता में ट्रैक्टर की दूर जाती गड़गड़ाहट, पास से गुजरते लोगों के हाँफने की आवाज़ें और हवा की सीटी सुनाई पड़ रही थी। और हवा की इस सीटी के साथ, टीले के पीछे से जिधर बटालियन जा रहा था, अचानक स्टेनगनों की बेतरतीब गोलाबारी भड़क उठी।

अध्याय 4

गुप्तचरों ने सबसे पहले जर्मनों को देखा। गेहूँ के खेत में से, जहाँ बर्फ़ से ढकी अनकटी फसल खड़ी थी, सिर बाहर निकलने लगे। काली, हिलती-डुलती, टेढ़ी-मेढ़ी जंजीर बनाकर वे बर्फ़ को पार करते पास आ रहे थे। उसके सिरों पर लोहे के टोप... कन्धे... स्टेनगनें थामे हाथ। जैसे-जैसे जर्मन पास आते जा रहे थे, यह सब खड़ी फसल में से दिखाई पड़ता जा रहा था।

मोस्तोवोई समेत कुल चार गुप्तचर थे। वे पानी के जमे गड्ढे में पैर फैलाकर लेटे प्रतीक्षा कर रहे थे। फिर वे तीन लोग रह गये : एक को मोस्तोवोई ने बटालियन को आगाह करने के लिये पीछे भेज दिया था।

हवा जर्मनों की ओर से आ रही थी। कान लगाकर सुनने पर क़दमों की आहट और सूखी बालियों की खड़-खड़ सुनाई पड़ने लगी थी। मोस्तोवोई के साथ लेटा गुप्तचर सूखते होंठों से ज़मीन पर पड़ी बर्फ़ को रुक-रुककर चाट रहा था। और पीछे की ओर देखता जहाँ नीचे ट्रैक्टर ज़ोर-ज़ोर से गड़गड़ा रहे थे।

कहीं दूर छूटा भभूका ज्यादा ऊपर तक नहीं उठा, उसके आगे घटाओं के पीछे से नीचे लटके आकाश के सिरे को ही आलोकित किया। और इस दीप्त आकाश की पृष्ठभूमि में ज़मीन पर लेटे-लेटे ही पास आते जर्मन साफ़ और बड़े दिखाई पड़ रहे थे। वे ट्रैक्टर की आवाज़ की ओर बढ़ रहे थे। बायें बाजू से मोस्तोवोई बाहर सिर गिन पाया था कि भभूका बुझ गया। उसने दाँतों से खींचकर दायें हाथ का दस्ताना उतार दिया, गाल पर टामीगन का ठण्डा कुन्दा टिका लिया, कुछ हिल-डुलकर कोहनियाँ ठीक से टिका लीं। जर्मन पास आ रहे थे, काली आगे को झुकी छायाएँ मक्खी के सामने से होती हुईं दायीं ओर सरक रही थीं। एक छाया हटती और दूसरी मक्खी के सामने आ जाती।

और इसी समय ढलान पर ट्रैक्टर विंच की मदद से तोप को नीचे से ऊपर खींच रहा था। उसके पट्टे पर डीजल और तेल से सने काले, नमदे के बूटों में ट्रैक्टर-चालक निकीतेन्को उकड़ूँ बैठा था। रेडियेटर के पास, बेचैनी से इधर-उधर देखता, एक सैनिक हाथ ताप रहा था। उसके यहाँ होने का वही कारण था, जिस कारण से लड़ाई के वक़्त ज़रूर कोई न कोई सिपाही रसोई के आस-पास मँडराता है। इस डर से कि कहीं उसे खदेड़ न दिया जाये, वह ट्रैक्टर-चालक को हर तरह से खफ़श करने के प्रयास कर रहा था। यह देखकर कि वह सिगरेट सुलगाना चाहता है, उसने जल्दी से चकमक-बत्ती निकाली, जो 'कत्यूशा' नाम से प्रसिद्ध थी, चिंगारी पैदा करके बत्ती को फूँककर जलाया और उसको सिगरेट के पास ले गया। साथ ही साथ वह चिल्ला-चिल्लाकर बोल रहा था, मानो किसी बहरे से बात कर रहा हो, क्योंकि ट्रैक्टर का इंजन चालू था, और ट्रैक्टर व उसके पट्टे पर बैठा निकितेन्को धीरे-धीरे हिल रहे थे।

"एक बार जर्मन और रूसी में बहस छिड़ गयी : किसकी मशीनें बढ़िया हैं? जर्मन ने जेब से लाइटर निकाला। चिक्! लो, सिगरेट सुलगा लो। पर हमारे रूसी ने फूँक मार दी–बस धुएँ की बू ही रह गयी। वह बोला, 'अब तुम मेरा बुझाओ।' उसने जेब से 'कत्यूशा' निकाली, और आग सुलगायी। अरे, जर्मन का फूँक मार-मारकर हाल बुरा हो गया, पर बत्ती और भी तेज़ जलने लगी।"

और उसने अँधेरे में तेज़ चमकती बत्ती को हिलाया।

"फेंक दे आग!"

रूईभरा कोट पहने, गर्दन पर स्टेनगन लटकाये गुप्तचर ने, जो जाने कब उनके सामने आ गया, उसके हाथ पर चोट की और आग को बूट से बर्फ़ पर रौंद दिया। ट्रैक्टर-चालक ने खुद ही जल्दी-जल्दी उँगलियों से सिगरेट मसल दी।

"पागल कुत्तें ने काटा है इसे, सच कहता हूँ, पागल है", घुटनों पर रेंगकर अपनी चीज़ों को बर्फ़ में ढूँढता हुआ सैनिक बुरा मानकर बोला। आख़िर को उसने चकमक, रेती का टुकड़ा और कारतूस के खोल में रखी बत्ती को भी ढूँढ लिया, बत्ती बर्फ़ में गीली हो गयी थी। रंज से उसे झाड़ते हुए उसने उस ओर इशारा किया जिधर गुप्तचर गया था और गुस्से में बोला : "बड़ा आया है हुक्म चलानेवाला। जी नहीं कर रहा था, नहीं तो मैं तुझे चखाता मजा, बड़ा सूरमा बना फिरता है!..."

और तभी सिपाही और ट्रैक्टर-चालक–दोनों को पास ही में स्टेनगन की गोलीबारी सुनाई पड़ी। ट्रैक्टर-चालक पट्टे पर सीधा खड़ा होकर यह समझने का प्रयास कर रहा था कि गोलियाँ कहाँ से चल रही हैं। जब वह मुड़ा तो सैनिक ग़ायब हो चुका था।

और नीचे, लोहे के रस्से के दूसरे सिरे पर, इस समय तोप को धकेलकर चढ़ाया जा रहा था। उसको चारों ओर से घेरकर भर्रायी आवाज़ों में चिल्लाते, ज़ोर लगाने के कारण तनावपूर्ण, पाशविक चेहरोंवाले बैटरीमैन अपने काँपते पैरों को ज़मीन पर टिकाकर हाथों, कन्धों और छातियों से धकेलकर तोप को ऊपर चढ़ा रहे थे। पैरों के दबाव से ज़मीन धीरे-धीरे नीचे सरकती जा रही थी। क़दम... एक क़दम... एक और क़दम... धीरे-धीरे बड़ी मुश्किल से तोप का बर्फ़ से लिपटा विशाल पहिया घूम रहा है। दाँत निकाले मुँह, भारी, हाँफती साँस, आँखों में भरता पसीना फटे होंठों चिरमिराहट पैदा कर रहा था। कानों के पर्दों पर खून का दबाव पड़ने के कारण ऊपर से आती इंजन की आवाज़ दबती-दबती कहीं दूर चली जा रही थी। कनपाटियो पर चोटें पड़ रही थीं... दिल फूलकर छाती को फाड़ रहा था... और हवा की कमी भी महसूस हो रही थी!... पर आम प्रयास के फलस्वरूप पैर ज़ोर लगाकर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।

"चल पड़ी, चल पड़ी! खुद चल पड़ी!" द्वितीय बैटरी का कमाण्डर क्रीवोशेइन चिल्लाया। उसे गर्मी लग रही थी। उसने कनटोप उतार दिया और एक हाथ से तोप की ढाल को धकेलता हुआ दूसरे को हिला रहा था। उसे लग रहा था कि उसके हावभाव, उसकी आवाज़ जवानों को उत्साहित कर रही है और वह खुद अपनी आवाज़ से उत्तेजित हो रहा था। इस क्षण वह न जर्मनों के बारे में, न आगामी लड़ाई के बारे में सोच रहा था। उसके सभी विचार, सभी आन्तरिक शक्तियाँ केवल एक बात पर केन्द्रित थीं : तोप को ऊपर चढ़ाना है। क़दम, और एक क़दम!...

...मोस्तोवोई ने कद्दावर जर्मन का निशाना साध लिया। वह पाँत में इधर-उधर नज़र दौड़ाता हुआ चल रहा था। मोस्तोवोई की टामीगन की नाल उसके साथ-साथ मुड़ रही थी। उँगली ने धीरे-धीरे घोड़े को दबाते हुए जर्मन की ज़िन्दगी की आख़िरी घड़ियों की गणना शुरू कर दी। अन्तिम क्षण उँगली रुक गयी : मोस्तोवोई को यह जर्मन कुछ-कुछ उस अधेड़ जर्मन-सा लगा जिसने सन इकतालीस में उसे और व्लासेन्को को गाँव के मकान में पकड़ लिया था और फिर छोड़ दिया था। इस क्षणिक हिचकिचाहट के दौरान ऊँचा जर्मन दायीं ओर हट गया और नाल के सामने दूसरा जर्मन आ गया–कुछ नीचे कद का, गहरा कनटोप पहने जो लगभग उसके कन्धों तक लटका हुआ था। उँगली ने घोड़ा दबा दिया।

बैटरीवालों ने ऊपर से ट्रैक्टर के पास से दौड़कर आते सिपाही को देखा; वह हाथ हिला-हिलाकर कुछ चिल्ला रहा था, मानो बैटरी को रोकना चाहता हो। अचानक वह गिर पड़ा और तभी तोपगाड़ी पर लोहे के छर्रों की बौछार-सी पड़ी। तोप को धकेलनेवाला एक जवान भी गिर पड़ा और उस ज़मीन के साथ पीछे छूटने लगा, जिस पर पैर टिकाकर ज़ोर लगाते बैटरीमैन आगे चलते जा रहे थे। पर ऊपर से मशीनगन से पथअन्वेषी गोलियों की बौछार हुई और लोग तोप की आड़ में छिप गये, वे नहीं सुन रहे थे कि बैटरी कमाण्डर चिल्लाकर क्या कह रहा है। बर्फ़ पर लेटकर वे कारबाइनें उतारकर बोल्ट चढ़ाने लगे, वे इधर-उधर देखते हुए यह समझ न पा रहे थे कि उन

पर गोलियाँ चलायी कहाँ से जा रही हैं। ऊपर, ज़ोर लगाता ट्रैक्टर गरज रहा था, लोहे का तना रस्सा काँप रहा था और तोप पहियों से बर्फ़ समेटती मुश्किल से ऊपर की ओर रेंग रही थी। ऊपर से फिर मशीनगन चली। ट्रैक्टर की ओर से दौड़ता आया सिपाही, उसके रुकने की प्रतीक्षा करके, उछलकर खड़ा हुआ और भाग पड़ा। और कई लोग पीठ दिखाकर भाग पड़े।

"मैं कहता हूँ रुको!... रुको! रुको, भागनेवालो!..."

नीचे से भवें चढ़ाकर, हाथ में सण्टी पकड़े उशाकोव आ रहा था। उन लोगों के बीच जो तोप छोड़कर भाग रहे थे, और उनके बीच जो उनको रोकने के लिये आगे दौड़ रहे थे, वही सिर्फ़ अकेला था जो अपनी सामान्य गति से चल रहा था। और जैसे-जैसे वह पास से गुजर रहा था, लोग बर्फ़ से उठकर तोप से चिपक जाते जिसे अब तक सिर्फ़ बैटरी कमाण्डर ही धकेल रहा था।

अपने बूट पर सण्टी फटकारते हुए उशाकोव तोप के पास से होता हुआ पथअन्वेषी गोलियों की बौछार में आगे बढ़ता जा रहा था, मानो गोली मोड़ने का मन्तर जानता हो। शायद उन सबके बीच वही अकेला था जो यह जानता था कि इस क्षण क्या करना चाहिए।

पर वह भी इस क्षण अभी यह नहीं जानता था कि क्या करना चाहिए; इसी लिये वह आत्मविश्वास, अडिगता से संकेन्द्रित होकर रौब के साथ सण्टी को पिण्डलियों पर फटकारता जा रहा था : अनेकों आँखें उस पर टिकी हुई थीं, वह उन्हें महसूस कर रहा था।

उस क्षण से, जब उशाकोव ने गोलीबारी की आवाज़ सुनी थी, वह समझ गया था कि सबसे भयंकर बात जिसका उसे डर था, हो चुकी है : टैंकों ने बटालियन को दबोच लिया। और ऐसी जगह, घाटी में उसे दबोच लिया जब दो तोपें रस्सों पर लटकी हैं और तीसरी को ट्रैक्टर गहरी बर्फ़ में खींच रहा है। तोपें नीचे उतार ले, सर्वमुखी रक्षा की स्थिति ले ले? टैंक बचकर निकल जायेंगे और पास से टीलों की ओट लेकर, खुले स्थान पर खड़ी भारी, बेढब तोपों को एक-एक करके नष्ट कर देंगे। और उशाकोव को पहली बार पछतावा हुआ कि उसने कुछ बैटरीमैनों को एक बैटरी कमाण्डर के साथ तोपों के लिये खन्दकें खोदने के वास्ते आगे भेज दिया। उसने ठीक ही किया था : नहीं तो वह समय पर वहाँ तैनात नहीं हो सकता था। पर अब उसे उन लोगों की यहाँ आवश्यकता थी।

उशाकोव अन्धविश्वासी नहीं था। पर जब उसने नष्ट बख़्तरबन्द गाड़ी को देख तो यह स्थान उसे मनहूस लगा। और उसे इस बात से कड़वाहट हुई कि यहीं जर्मन टैंकों ने उसके बटालियन को भी आ दबोचा है।

मशीनगन की बौछार ने उसकी टोपी को हिलाया। उशाकोव ने उसे हाथ से ठीक कर दिया। पर जब वह घाटी के कगार पर चढ़ा तो उसे लेटना पड़ गया : मैदान में

बर्फ़ की आँधी में आग का अन्धड़ उड़ रहा था और उसके प्रकाश में बर्फ़ तत्काल तीव्रता से चमकने लगती। खेत में दो मशीनगनें अविराम चल रही थीं और अनेकों स्टेनगनें चमकती डोरों से रात के अँधेरे को चीर रही थीं।

वक्षभीत की तरह घाटी के कगार के पीछे लेटा हुआ उशाकोव अँधेरे में बड़े ध्यान से देख रहा था। आकर रुकी धुँधली-सी दिखाई पड़ती बख़्तरबन्द गाड़ी से कूदकर जर्मन गेहूँ की खड़ी फसल में स्टेनगनें चलाते बिखर रहे थे। कईयों को गोलियों की छोटी-छोटी बाढ़ों ने धराशाही कर दिया। 'मोस्तोवोई!' उशाकोव समझ गया। और मैदान में चमकती आग का तूफ़ान हिलकर उस ओर झपट पड़ा जिधर से गुप्तचर गोलियाँ चला रहे थे। गोलियों की चमकती रेखाएँ ज़मीन में पैनी गड़ रही थीं, जर्मन उस ओर जा रहे थे; वहाँ से कोई ज़वाब नहीं दे रहा था। उशाकोव झट से समझ गया कि जर्मन गड़बड़ा गये हैं। उनकी गुप्तचरों से भिड़न्त हो गयी, उन्हें घाटी में से इंजनों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ रही है, और सभी स्टेनगनों से गोलियाँ चलाते हुए वे खेत में, टैंकों के पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, समय खींच रहे हैं। मुफ्त में उसे यह समय दे रहे हैं। 'अरे, उल्लू हैं, उल्लू!' उसने तत्क्षण सोचा। अब लड़ाई को जोश उस पर भी चढ़ गया था और वह फिर से अपने भाग्य के तारे में विश्वास करने लगा था। उसने मुड़कर देखा। बागरादूजे पास ही में लेटा हुआ था। उसके ग्रेटकोट का कालर पकड़कर उशाकोव ने उसे अपनी ओर खींचा और अँधेरे में नीली-सी चमकती, घबराहट में भँगी-सी हुई उसकी आँखों में अपनी पैनी दृष्टि गड़ाकर बोला :

"बैटरी कमाण्डरों से कहना कि वे तोपों को जंगल की ओर ले जायें। जंगल की ओर! इश्चेन्को को ढूँढ लो। वही ले जायेगा।"

बागरादूजे बुदबुदाता हुआ उसके आदेश को किसी सम्मोहित व्यक्ति की तरह दोहरा रहा था।

"निर्देश प्लाटून को मेरे पास भेजो! हथगोलों के साथ! समझे? जाओ, दौड़ो! अपनी स्टेनगन देते जाओ!"

और, अर्दली की स्टेनगन लेकर उशाकोव ने सिर बाहर निकाला। उस स्थान पर, जहाँ अदृश्य गुप्तचर लेटे थे, ज़मीन के ऊपर काली-सी छाया झपटती दिखाई पड़ी। और फिर गिर गयी। एक और छायाा गोलियों की बौछार में उठकर कन्धों में सिर को छिपाए तेज़ी से दौड़ने लगी। अँधेरे में उसके पैरों पर पड़ी मशीनगन की धारा ने उसे लिटा दिया। उशाकोव ने गोली चलायी, उस ओर जहाँ मशीनगन की छोटी-सी लपट फूट रही थी। वह एक के बाद एक गोलियों की बौछार कर रहा था ताकि गुप्तचर उसकी आड़ में पीछे हट सकें, वह जर्मनों की गोलियों को अपनी ओर आमंत्रित कर रहा था। और जब कोई दौड़ता जर्मन की गोलाबारी से गिर पड़ता तो वह हर बार किलकारियाँ मारता।

फिर उसे नीचे से उसकी ओर ऊपर चढ़ते कई हाँफते लोगों के बोलने की आवाज़ें

सुनाई पड़ीं। गोलाबारी के बीच अन्तराल में उसने मुड़कर देखा। वासिच प्लाटून के साथ जल्दी-जल्दी आ रहा था।

"मैगजीन!" उशाकोव चिल्लाया।

किसी के काले बालों से ढके हाथ ने, एक सुपरिचित हाथ ने डिस्क मैगजीन थमा दी। उशाकोव ने उसे हथेली से ठोककर लगा दिया। कगार के किनारे पर बर्फ़ की फुहार उड़ाती मशीनगन की बौछार पड़ी। कई सिर झुक गये। उशाकोव को पास ही में वासिच दिखाई पड़ा—पसीने से ढका, गोलीबारी की कौंध में चमकता नम चेहरा। वह कुछ कह रहा था। उशाकोव कुछ समझ नहीं पा रहा था। उसने वासिच की बात काटकर मैदान की ओर इशारा किया :

"देखो! खड्ड दिखाई पड़ रहा है? वह जो मैदान के आर-पार जा रहा है।"

वह ऐसे चिल्ला रहा था कि गर्दन पर नसें फूल गयी थीं। वासिच को खड्ड दिखाई पड़ा। वह जर्मन के समानान्तर जा रहा था और बटालियन की ओर उनका रास्ता रोके हुए था। और वह उशाकोव की योजना को समझ गया।

"वहाँ?"

उशाकोव वासिच के कन्धों को कसकर पकड़ते हुए बोला : "टैंकों को रोके रखना! ग्रेनेटों से, दाँतो से, जो तुम्हारे मन में आये! जब तक तोपें नहीं चली जातीं एक भी क़दम पीछे नहीं हटना! समझे? जाओ! पाँच लोगों को मेरे पास छोड़ते जाना!"

वासिच बर्फ़ से उठकर खड़ा हो गया। खड्ड तक कोई दस मीटर की खुली जगह थी। वह उसको ध्यान से देख रहा था। और सबसे पहले, झुककर, लम्बे ग्रेटकोट में दौड़ता हुआ मैदान के इस टुकड़े को पार कर गया। देर से छूटी गोलियों की बौछार बरस पड़ी। रास्ता। सिर्फ़ बर्फ़ ही बर्फ़। गोली की तरह दौड़ता जवान उसे पार कर गया।

"फ़ायर!" उशाकोव चिल्लाया। पाँच लोगे अपनी गोलीबारी से प्लाटून को आड़ दे रहे थे। सिपाही एक-एक करके, काली छायाओं की तरह, झुककर दौड़ते हुए खड्ड में ओझल हो रहे थे।

स्टेनगन से हटकर उशाकोव ने मुड़कर पीछे देखा। दो तोपों को अभी रस्सों से लटकाकर उतारा जा रहा था, सिर्फ़ तीसरी को नीचे ट्रैक्टर खींचता चल रहा था। धीरे! बहुत सुस्ती से चल रहे हैं!

"कामरेड मेज़र! कामरेड मेज़र!"

बागरादज़े उसकी ओर स्टेनगन की डिस्क मैगजीन बढ़ा रहा था।

जर्मनों की तरफ़, गेहूँ के खेत में चमक हुई, और तभी मैदान के ऊपर कम ऊँचाई पर परिचित चीत्कार सुनाई पड़ा।

"इश्चेन्को कहाँ है।"

"स्टाफ अधिकारी ने कहा : मैं पीछे हटने का प्रबन्ध करूँगा!" बागरादज़े आँखों

में प्रचण्ड चमक के साथ, चिल्लाकर बोला।

मार्टर गोले का चीत्कार अब बहुत पास गया था, वह स्वतः ज़मीन की ओर लोगों को झुका रहा था।

"पीछे दौड़ो! इश्चेन्को से कहना जल्दी करे! मुर्दों की तरह चल रहे हैं! जल्दी करें! जब तक टैंक नहीं आये!"

उसे झड़ती मिट्टी के साथ बागरादज़े के नीचे लुढ़कने की आवाज़ सुनाई पड़ी। मार्टर की चीत्कार भंग हो गया। शान्ति छा गयी... और फिर धमाके की गरज। आँखों में आग की चमक प्रतिबिम्बित हुई। विस्फोट की गरज के साथ कोई भारी-भरकम खर्र-खर्र साँस लेता, उशाकोव के पास धड़ाम से गिरा। वे साथ-साथ उठे। यह गोलूबेव था, तृतीय बैटरी के निर्देश प्लाटून का कमाण्डर। संकेन्द्रित चेहरे पर जवानी की आतुरता छायी हुई थी। कालर के बटन खुले हुए थे। हवा के कारण गर्दन लाल थी।

"कामरेड मेज़र!" गोलूबेव फुसफुसाकर रिपोर्ट दे रहा था। वह तेज़ी से दौड़ने के कारण हाँफ रहा था। "उपस्थित हूँ... प्लाटून के साथ।"

"एक-एक करके!" उशाकोव ने खड्ड की ओर इशारा किया। "जाओ!"

मार्टर का एक और गोला सिर के ऊपर चीत्कार कर रहा था। गोलुबेव उछलकर खड़ा हो गया। उसके बायें हाथ में लाइट मशीनगन थी, जो उसके भीमकाय शरीर की तुलना में छोटी-सी लगती थी। उशाकोव ने उसकी ओर ललचायी नज़र से देखा। उसके कुछ कह पाने से पहले ही गोलुबेव खुद समझ गया।

"कामरेड मेज़र, ले लीजिये!" वह बच्चों की तरह, अपनी प्रिय चीज़ को देने की सम्भावना मात्र से खुश होकर बोला। "जवानों के पास और है!"

'झूठ बोल रहा है,' उशाकोव ने सोचा, उसे इस हृष्ट-पुष्ट और जाँबाज नवयुवक को देखकर इस समय हर्ष हो रहा था, 'पर है शाबाशी योग्य!'

नीचे दो सैनिक झुककर लम्बी टैंकभेदी रायफल उठाये हुए दौड़ रहे थे। पास हुए धमाके के कारण वे दोनों एक-साथ बैठ गये, फिर उठकर और भी तेज़ी से दौड़ पड़े।

गोलुबेव ने झटके के साथ पिस्तौल निकाली, प्लाटून की ओर हाथ हिलाकर आदेश दिया :

"मेरे पीछे आओ!.."

उसकी आवाज़ को मार्टर गोले के विस्फोट ने दबा दिया।

मशीनगन के पाये टिकाते हुए उशाकोव ने गोलुबेव को लम्बे-लम्बे डग भरते हुए दौड़ते देखा। उसने प्रचण्ड क्रोध से जर्मनों पर मशीनगन से लम्बी बाढ़ की।

नालमुख से फूटनेवाली, अँधेरे को पल भर के लिये आलोकित करती लपटों के कारण उसे टैंक तत्काल नहीं दिखाई पड़े। पर उसे पहले टैंकों की आवाज़ सुनाई पड़ी, उनकी उपस्थिति का आभास हो गया। अचानक बन्दूकों और स्टेनगनों की गोलाबारी बन्द होने लगी, शान्ति छाने लगी और शीघ्र ही मैदान पर फौलादी चीत्कार, खड़खड़ाहट

और गुर्राहट का एकच्छत्र राज छा गया। बर्फ़ उड़ाती हवा के धुँधलके में टैंक गेहूँ की ऊँची खड़ी फसल को रौंदते जा रहे थे।

उशाकोव ने मशीनगन उठा ली, और पाँचों व्यक्तियों से चिल्लाकर बोला : "पीछे नहीं हटना!" और वे कगार की ओर में आगे दौड़ पड़े, जर्मनों के बाजू में पहुँचने के लिये।

जब मोस्तोवोई खड्ड तक पहुँच चुका था उसे पीछे से गोली लगी। वह नीचे कूद गया। उसने झटके के साथ चौड़ी पेटी खोल दी, जिस पर पिस्तौल और हथगोले लटके थे, रूईभरा कोट उतार डाला और टोपी कगार पर रख दी। पर वह फौरन वहाँ से गिर पड़ी : सिर के ऊपर जर्मन स्टेनगनों से चमकनेवाली गोलियाँ बरसा रहे थे।

मोस्तोवोई ने चंगे हाथ से अपनी क़मीज़ उतार डाली जो मुश्किल से उसके चौड़े कन्धों पर आती थी। पूरी बाँह की सूती बनियान की खून से काली बायीं आस्तीन हाथ से चिपक रही थी। जल्दी-जल्दी इससे पहले कि जर्मन आ पायें, उसने बनियान भी उतार डाला। गोली के छोटे-से घाव में से रुक-रुककर खून रिस रहा था। वह समझ गया कि धमनी कट गयी है। खून हाथ पर बहता कोहनी से टपक रहा था। ज़मीन पर बैठा हुआ वह जख्मी हाथ को पकड़े हुए था। उसके पसीने से तर, कमर तक निरवस्त्र शरीर से पाले की हवा में भाप उठ रही थी। एक गुप्तचर खून रोकने के लिये ज़ोर लगाता हुआ कन्धे के पास पट्टी को कसकर बाँध रहा था।

"कसके! और कसके!" मोस्तोवोई अनुरोध कर रहा था और तिरछी नज़र से मैदान का निरीक्षण कर रहा था। गेहूँ के खेत में टैंक दिखाई पड़े। वे बर्फ़ से ढके थे, रेत की तरह बर्फ़ उड़ाती आँधी में वे धुँधले-धुँधले दिखाई पड़ रहे थे। वे अपने आगे-आगे ज़मीन को मशीनगनों की बौछारों से टटोलते हुए चल रहे थे। कहीं पास से, खड्ड के कगार पर गोलियों की बौछार पड़ी।

"जल्दी करो!" मोस्तोवाई चिल्लाया और एक बाँह को रूईभरे कोट की आस्तीन में डालकर टैंकभेदी रायफल को उठाने लगा।

अपनी शक्तिशाली गड़गड़ाहट से लड़ाई की सभी आवाज़ों को कुचलते हुए टैंक चले आ रहे थे। आगेवाले की तोप ने आग उगली। मोस्तोवोई के सिर में भारी, गर्म झनझनाहट हुई, और गले तक मतली चढ़ आयी, मुँह राल से भर गया। धमाके के धुएँ में क्षण भर के लिये टैंक आँखों से ओझल हो गया। और तत्काल फिर दिखाई पड़ा।

खड्ड में लोग इधर-उधर रेंग रहे थे, कभी-कभी उसकी टाँगों पर चढ़ जाते। मोस्तोवाई टकटकी बाँधे टैंकभेदी रायफल की लम्बी नाल को टैंक के साथ-साथ घुमा रहा था। उसने घोड़ा दबा दिया। कन्धे में शक्तिशाली धक्के के साथ ही उसने देखा कि टैंक के टरेट पर नीली-सी चमक हुई और गोली तिरछी होकर ऊपर की ओर उड़ गयी।

उसने एक बार फिर गोली चलायी और फिर टैंक पर आग की लम्बी नीली रेखा चमकी। बख़्तर पर गोलियाँ ऐसे ही चमक रही थीं जैसे माचिस की डिबिया पर तीलियाँ और तिरछी होकर ऊपर उड़ते हुए हवा में जलकर बुझ जातीं।

मोस्तोबोई ने अपने बायें हाथ पर एक नज़र डाली। उसे आश्चर्य हुआ कि वह ठण्ड महसूस नहीं कर रहा। वह बर्फ़ पर अपनी निरवस्त्र कोहनी टिकाये हुए था पर वह ठण्ड नहीं महसूस कर रहा था। वह अपने हाथ को ही महसूस नहीं कर रहा था पर हाथ रायफल को कसकर पकड़े हुए था, इसलिये मोस्तोवोई निश्चिन्त हो गया।

उधर बर्फ़ की आँधी को चीरता हुआ, टैंक दौड़ता आ रहा था। बर्फ़ उसके पट्टों को ढक रही थी। वहाँ बर्फ़ीली आँधी में से गोलियों की आड़ी तिरछी चमकती रेखाएँ आ रही थीं गुप्तचर कुछ चिल्लाया। वह चिल्ला क्यों रहा हैं? नंगे बदन पर सिर्फ़ रूईभरा कोट पहने हुए भी मोस्तोवोई पसीने से तर था। या यह छाती पर गिरकर बर्फ़ पिघल रही थी? उसके कन्धे को कुंदे का धक्का लगा।

"कारतूस!"

बर्फ़ पर गिरे अपने खून को मोस्तोवोई ने ऐसे देखा मानो वह पराया हो। अजीब बात है कि इतना अधिक है। वहाँ जहाँ उसकी कोहनी टिकी हुई थी सारी बर्फ़ खून से काली थी। उसके खून से। पर दर्द नहीं हो रहा था और हाथ टैंकभेदी रायफल को थामे हुए था।

उसके आस-पास चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं। उसे वह कानों में झनझनाहट के साथ सुनाई पड़ रही थीं। कहीं पास से मशीनगन की गोलियों की बौछार उसके सामने आग के कोड़े की तरह पड़ी। कोई दौड़ता हुआ, मोस्तोवोई की शीताहत, पसरी टाँगों पर पैर रखता हुआ गुजर गया। मोस्तोवोई निशाना साधने मे ध्यानमग्न था। गोलियों और आग की वर्षा में वह टैंक के साथ-साथ अपनी टैंकभेदी रायफल को घुमा रहा था।

वे चिल्ला क्यों रहे हैं? भाग कौन रहा है? भागनेवालों को गोली मार देनी चाहिए। पर वह अपने भिंचे जबड़ों को नहीं खोल रहा था। वह लक्ष्य साध रहा था। पास में गुप्तचर का भयभीत चेहरा दिखाई पड़ा। टैंक अपना टरेट घुमा रहा था। देख लिया उसने। उसकी तोप मौत की रिक्तता के साथ आँखों और दिल में झाँकी। वह ऊपर को उछलकर हिलने लगी। बस सब्र से काम लेना चाहिए। आँख मिच-मिचाता हुआ वह घोड़े को दबाती उँगली को काबू मे कर रहा था। साँस तक रोक ली थी। उसने कुछ रुककर दबा दिया, और घोड़ा आसानी से बिना किसी ज़ोर के दब गया। और उसी क्षण मोस्तोवोई की मिची-मिची आँखों के सामने आग चमकी। उसे लगा कि उसके हाथों में थमी टैंकभेदी रायफल फट गयी।

कौंधकर चमकी आग और कुछ पैना-पैना-सा उसमें, उसके मस्तिष्क में, शरीर में बिना कोई दर्द किये, ऐसे आसानी से घुस गया मानो उसमें न हड्डियाँ हों, न नसें।

और मोस्तोवोई को अजीब-सी भारहीनता और रिक्तता अनुभव हुई, सिर चकराने लगा। पर उस रिक्तता में तैरते हुए भी वह अभी संघर्ष कर रहा था, वह महसूस कर रहा था, वह महसूस कर रहा था कि उसे छीना जा रहा है, पर वह अपने को भूमि से छीनने नहीं दे रहा था, वह उसे अपने उन हाथों से कसकर पकड़े हुए था जो वास्तव में नहीं रहे थे।

यह सब पलक झपकते ही हो गया पर उसके लिये यह अनन्त घड़ी थी—उसमें चेतना अभी जीवित थी, वह दर्द और कठिनाई के साथ जीवन से विदा ले रहा था, उसे इसका तनिक भी आभास नहीं था कि प्राण पखेरू उड़ रहे हैं।

हथगोलों के साथ ज़मीन से चिपके लोग अपने शिकार को चुनते टैंक के घूमते टरेट को देख रहे थे, तोप ने रुककर मुख से लपट उगली। और तभी टैंकभेदी रायफल से एक हुए मोस्तोवोई के सिर के सामने उसी क्षण जब रायफल ने टैंक पर बख़्तरभेदी गोली छोड़ी, आग की लपट उठी। फिर अपने लहू-लुहान सिर को हाथों में थामे जवान उठ खड़ा हुआ। तेज़ी से आते टैंक ने उसे छाती पर धक्का देकर कुचल दिया और स्वयं खड्ड पर झपट पड़ा। पर यहाँ खड्ड में उसके साथ-साथ उड़ते बर्फ़ के बवण्डर मे सब कुछ आलोकित होकर विस्फोट से काँप उठा और लोग ज़मीन पर गिर पड़े। जब वे उठकर खड़े हुए, तो टैंक बिना टरेट के खड़ा था और कालिख की किनारीवाली लाल लपट पताका की तरह फैलकर उसके ऊपर लहराने लगी थी।

"किधर चले? वापस लौट!"

इश्चेन्को दौड़ता हुआ पिस्तौल हिला रहा था। पर इंजन की गड़गड़ाहट के कारण ट्रैक्टर-चालक उसकी आवाज़ को नहीं सुन रहा था और ट्रैक्टर चलता जा रहा था। गर्म तेल और डीजल का भभूका छोड़कर काँपते पट्टों को अपने नीचे बिछाता हुआ वह पास से आगे बढ़ गया। उसके पीछे-पीछे ऊँचे पहियोंवाली तोप चल रही थी, तोपचियों का दल टहनियों के गट्ठर उठाये दौड़-धूप कर रहा था, उन्हें किन्हीं डण्डों आदि से तोप के पहियों के नीचे ठूँस रहा था, कई लोग अपना ग्रेटकोट उतारकर उनके नीचे बिछा रहे थे।

उधर काले आकाश में, खड्ड के ऊपर, इन लोगों के सिरों के ऊपर चमकती गोलियाँ उड़ रही थीं।

"बैटरी कमाण्डर कहाँ है?"

कई सिर उसकी ओर मुड़े। तोपगाड़ी के पीछे से प्लाटून कमाण्डर झट से आया। टोपी, फ़ौजी कमीज़ पहने, कन्धे पर परतला कसे, बिल्कुल चुस्त-ताज़ा जैसे कि उसकी वर्दी के बकसुए। इश्चेन्को को उसका चेहरा अस्पष्ट-सा याद था पर नाम याद नहीं था। वह उन लेफ्टिनेण्ट में से एक था जिन्हें किसी लड़ाई के बाद बटालियन में रिक्त हुए स्थान भरने के लिये भेजा जाता है और अगली लड़ाई के बाद वे भी नहीं बचते।

"तोप यहाँ क्यों है? बैटरी कमाण्डर कहाँ है?"

"वहाँ जाना उचित नहीं है, कामरेड कैप्टन! सीधी चढ़ाई है।" सेल्यूट देकर लेफ्टिनेण्ट ने रास्ते में खड़े टीले की ओर इशारा किया। "नीचे-नीचे हम जल्दी से उसका चक्कर काटकर निकल..."

सब ठीक ही तो था, वे जंगल की ओर पीछे हट रहे थे। पर इश्चेन्को को लगा कि वे वापस, लड़ाई के इलाके में लौट रहे हैं।

"मुर्दों की तरह चल रहे हो!" वह चिल्लाया। "वहाँ लोग मर रहे हैं और तम चींटियों की तरह रेंग रहे हो, लानत है तुम पर! बैटरी कमाण्डर कहाँ है?"

"बैटरी कमाण्डर के स्थान पर मैं हूँ, लेफ्टिनेण्ट ज्वानुत्सेव!" प्लाटून कमाण्डर ने मुँह से भाप छोड़ते हुए रिपोर्ट दी। उसकी क़मीज़ से भी भाप उठ रही थी। "बैटरी कमाण्डर को फायरिंग पोजीशन चुनने के लिये आगे भेजा गया है!"

वह यह कहते हुए हर्ष और गर्व का अनुभव कर रहा था कि 'बैटरी कमाण्डर के स्थान पर वह लेफ्टिनेण्ट ज्वानुत्सेव है!' इसका कारण यह भी था कि वह अपने जीवन में पहली बार बैटरी कमाण्डर का स्थान ले रहा था, उसे इसलिये भी हर्ष और गर्व था कि उसकी तोप अब सबसे पहले पोजीशन पर पहुँचकर टैंकों पर गोलीबारी शुरू करेगी और सब लोगों को पीछे हटने की सम्भावना देगी।

लम्बे ग्रेटकोट में गर्दन झुकाकर, लटके हाथ में पिस्तौल थामे हुए इश्चेन्को लेफ्टिनेण्ट के सामने खड़ा था, उसका कद लेफ्टिनेण्ट के कद से ऊँचा था और कन्धे ज्यादा चौड़े थे, वह घृणा से गहरे लाल गालोंवाले उसके स्वस्थ चेहरे पर नज़रें गड़ाये हुए था। इस कारण कि उसकी तोप अभी यहीं है, ना कि जंगल में, इश्चेन्को को भी यहीं होना चाहिए। और वहाँ, पीछे और दो तोपें हैं, और इश्चेन्को की पीठ के पीछे हाँफता खड़ा गुप्तचर, जिसे वह अपने साथ लाया था, मानो याद दिला रहा था कि वहाँ जाना चाहिए, जहाँ गालियों की बौछार हो रही है। "जल्दी से जंगल की ओर जाओ!" इश्चेन्को ने आदेश दिया और लम्बे-लम्बे डग भरता पीछे चल पड़ा।

वह उस ओर जा रहा था जहाँ लड़ाई हो रही थी, और गुप्तचर स्टेनगन उठाये उसके पीछे-पीछे चल रहा था, मानो उसे कैद करके ले जा रहा हो। और घाटी की सीधी ढलान पर चढ़ते हुए जैसे-जैसे वे पास पहुँचते जा रहे थे वैसे-वैसे इश्चेन्को के मन में इस गुप्तचर से चिढ़ होती जा रही थी जो उसके हर क़दम, हर हरकत का साक्षी था।

पर गुप्तचर गर्दन से लटकी स्टेनगन की नाल और कुन्दे पर हाथ टिकाये चल रहा था। और उसको मन ही मन शर्म आ रही थी। वहाँ, मैदान में विस्फोटों और टैंकों की गोलाबारी के बीच जवान, उसके साथी लड़ते हुए मर रहे थे, और वह यहाँ सुरक्षित स्थान पर है, कैप्टन के साथ एक बैटरी से दूसरी तक दौड़ रहा है और हर बैटरी पर कैप्टन पिस्तौल हिला-हिलाकर चिल्ला रहा है।

अचानक जर्मन टैंकों को देखकर इश्चेन्को स्तब्ध रह गया। वे खड़े थे। वे खुली

जगह पर खड़े, गिरती बर्फ़ से ढकते हुए, बाट जोह रहे थे। वहीं टीले के पीछे, जिधर ज्वानुत्सेव तोप को ले जा रहा था।

इश्चेन्को कुछ सोच भी नहीं पाया, कोई निर्णय भी नहीं ले पाया, वह सहजवृत्तिवश, चुपचाप, घुटनों पर झुकते हुए नीचे की ओर दौड़ पड़ा। वह आगे बढ़ती उस बैटरी की ओर नहीं दौड़ा, जो इस बात से अनभिज्ञ थी कि वह सीधे घात में खड़े टैंकों की ओर जा रही है। इश्चेन्को एक तरफ़ का हटकर भागा, उन लोगों से दूर, जिनको वहाँ से ले जाना या जिनके साथ मरना उसका कर्त्तव्य था। सहजवृत्ति दूसरों से सीखे अनुभव और आशंकित विवेक से इश्चेन्को पलक झपकते ही समझ गया कि इस समय उसे अकेले ही बचने में आसानी होगी। बस बच जाये... यहाँ से बचकर निकलो!... वह दौड़ रहा था और उसे मालूम था कि उसके पीछे क्या शुरू होनेवाला है।

"कामरेड कैप्टन! कामरेड कैप्टन, आप कहाँ जा रहे हैं?" ऊपर से गुप्तचर चिल्ला रहा था, वह नहीं समझ रहा था कि क्या हो गया, उसे तो बस स्टाफ अधिकारी की चिन्ता थी, जिसकी सुरक्षा का काम उसे सौंपा गया था। उसने टैंकों को नहीं देखा था, वह खुले स्थान पर उनकी ओर पीठ किये खड़ा था।

वहाँ से लम्बी दूरी तक बिजली चमकी, फिर मशीनगन की ठक-ठक सुनाई पड़ी। पर तब तक गुप्तचर बर्फ़ पर गिर पड़ा था।

बड़ी देर तक इश्चेन्को को उसकी दर्दभरी, सहायता की पुकार सुनाई पड़ती रही : "कामरेड कैप्टन ऽऽ!...."

वह पुकार रहा था, उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसे अकेला छोड़ दिया गया है।

इश्चेन्को हाँफता हुआ, मुँह से साँस लेता हुआ झाड़ियों में भाग रहा था। इस समय उसकी बस एक उत्कट इच्छा थी : बस गुप्तचर चुप हो जाये, इतनी ज़ोर से न कराहे। और यह इच्छा पूरी हो गयी। उसे पास से स्टेनगन की गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनाई पड़ी और गुप्तचर का स्वर टूट गया।

इश्चेन्को बर्फ़ पर गिर पड़ा। उसका कलेजा मुँह तक आ गया था, कनपटियाँ फटी जा रही थीं। वह भाग नहीं सकता था, बस निढाल होकर टोपी से चेहरा पोंछे जा रहा था।

उस तरफ़, जिधर ज्वानुत्सेव तोप ले जा रहा था, मशीनगनों की बौछार शुरू हो गयीं थी, और वहाँ हर चीज़ इस कौंधती, चारों ओर से झपटती आग में लिपट गयी। इश्चेन्को दूसरी ओर लपककर गिर पड़ा। खुले मैदान को उसने घुटनों और हाथों से बर्फ़ समेटते हुए रेंगकर पार किया। झाड़ियों में फिर उछलकर खड़ा हो गया। वह हाथ में पिस्तौल को कसकर पकड़े हुए झुककर दौड़ रहा था। गोलियाँ बिल्कुल नीचे, उसके ऊपर से उड़ती जा रही थीं, और वह कभी इधर दौड़ता, कभी उधर।

उसे मालूम था : अगर अब नहीं निकल पाया तो काम तमाम समझो। अब टैंक

आगे और पीछे से एक-दूसरे की ओर बढ़ने लगेंगे और सब कुछ, जो भी उनके बीच आयेगा वह चक्की में गेहूँ की तरह पीस दिया जायेगा। पर अभी भी मौका है, अभी निकला जा सकता है। और वह भाग रहा था, गोलाबारी से दिशा निर्देश पाते हुए। उधर नहीं जहाँ इस समग्र शान्ति थी : वहाँ भी, अँधेरे में, टैंक हैं। उनकी ओर, उनके पट्टों से कुचले जाने के लिये, जर्मन बचे-खुचे सैनिक समूह को मशीनगनों की बौछारों से खदेड़ेंगे।

इश्चेन्को झाड़ियों में छिपता हुआ दौड़ रहा था, रुकता, गोलियों की बौछार में झुकता और फिर आगे चुपचाप दौड़ पड़ता। हाथ में उसके पिस्तौल थी, जिसका घोड़ा चढ़ा हुआ था।

जर्मन उछलकर खड़ा हुआ, आग की लालिमा में काली छाया की तरह, और झुककर गोले से बने गड्ढे की ओर झपटा। उशाकोव ने हल्की बौछार से उसे ज़मीन पर लिटा दिया। फिर उसने पीछे मुड़कर देखा। बर्फ़ के झीने पर्दे के पार से उसने देखा कि यहाँ से दूरवाली तोप अब जंगल के पास पहुँच रही है। कोई पचास मीटर के बाद वह जंगल के आँचल पर पोजीशन ले लेगी और उसकी गोलाबारी की आड़ में बाकी भी पीछे हट जायेंगे। और तब वह भी अपनी पाँत उठाकर जंगल की ओर हट जायेगा। और वहाँ तो लड़ा जा सकता है जब पीछे से पीठ सुरक्षित है।

"देखो!" वह वासिच से चिल्लाकर बोला जो इस क्षण उसके पास रेंगता हुआ आया था। उशाकोव का चेहरा उत्तेजित था, स्टील के दाँत आग के लाल प्रकाश में चमक रहे थे। "देख रहे हो?"

थोड़ा-सा उठकर उसने दस्ताना चढ़े हाथ से पीछे की ओर इशारा किया।

और तभी, खड्ड के मोड़ के पीछे से, लगभग जंगल के पास से आग के फन की तरह मशीनगन की बौछारों ने तोप पर प्रहार किया। बर्फ़ीली आँधी के कारण कुछ धुँधली-सी, काली, नाटी-सी चीज़ सामने से प्रकट हुई, उसने आग उगली, और धमाके की आवाज़ पहुँचने से पहले ही सबने देखा कि वहाँ तोप के पास, बर्फ़ पर लोगों में भगदड़ मच गयी है। और टैंक उन पर मशीनगन से सीधी मार कर रहा था, और उसकी तोप फिर चमकी, और फिर—विस्फोट!

उशाकोव उछलकर खड़ा हो गया। वह नहीं देख रहा था कि उस पर गोलियाँ चलायी जा रही हैं। दाँत भींचकर वह ढलान पर नीचे की ओर दौड़ पड़ा, उधर जहाँ क्षतिग्रस्त बख़्तरबन्द गाड़ी खड़ी थी। वहाँ विमानभेदी मशीनगन थी। कवचभेदी गोलियाँ... बस उसे मोड़ पाये... वक़्त पर! लोगों को फायरिंग से आड़ देनी चाहिए!... वह इस विचार से पुलकित ढलान पर नीचे की ओर दौड़ रहा था।

वासिच ने देखा कि उशाकोव के दायीं और बायीं ओर चमकती गोलियों की दो समानान्तर रेखाएँ खिंच गयीं। वह उनके बीच में नंगे सिर, कोहनियों को बगल में

सटाये दौड़ रहा था। दो चमकती रेखाओं के बीच दहकती धातु की तीसरी धारा फूट पड़ी। वह उशाकोव के शरीर को बींधती हुई आर-पार निकल गयी, और वह गिर पड़ा।

गोलियों की चमकती रेखाएँ बुझ गयीं। गेहूँ के खेत में टैंक चल पड़े। वे खड़खड़ करते, आग उगलते हुए गड्ढों, गोलों से बने क्रेटरों में स्टेनगनों के साथ लेटे सैनिकों की ओर बढ़ चले।

पीछे जंगल की ओर से निकले अन्य टैंकों के साथ मिलकर शिकंजा कसने के लिये चल पड़े।

उशाकोव अभी भी भागता जा रहा था। वह उधर बख़्तरबन्द गाड़ी की ओर दौड़ रहा था जहाँ विमानभेदी मशीनगन थी। उशाकोव बर्फ़ पर रेंग रहा था, उठता, गिरता, फिर रेंगने लगता, वह बर्फ़ से लथपथ, अपने पीछे-पीछे खून की चौड़ी रेखा खींचता जा रहा था। वह अभी यह महसूस नहीं कर रहा था कि मारा जा चुका है, वह अभी जीवित था। और अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में वह सुखी था : प्रचण्डवेग के साथ विमानभेदी मशीनगन ढकढक करने लगी। कौन चला रहा था? शायद, वह स्वयं? उसकी धुँधली पड़ती चेतना में सब गड्डमड्ड हो रहा था। पर सिर्फ़ एक बात स्पष्ट थी : मैदान के ऊपर, दौड़ते हुए लोगों के सिरों के ऊपर से, उन्हें आड़ देते हुए अग्नि रेखाएँ टैंक पर झपट रही थीं। उशाकोव चीखकर उठ खड़ा हुआ, उसका रोम-रोम उस ओर उड़ा जा रहा था... दम तोड़ता आदमी कराहकर मुश्किल से हिला, उसने धीरे से सिर उठाया : रक्त से लथपथ बाल, पिघली बर्फ़ से भीगा चेहरा, धुँधली आँखें। इन आँखों से उसने यह भी देख लिया कि वहाँ, जिधर मशीनगन प्रहार कर रही थी तेज़ चमक हुई और आग लग गयी।

जर्मन टैंक जल रहा था। यह अन्तिम दृश्य था जो उशाकोव ने अपने जीवन में देखा था और वह सुख के साथ वीरगति पा गया।

उसे नहीं मालूम था कि यह, जर्मन गोले से हमारा ट्रैक्टर ही जल रहा था।

अध्याय 5

उसने नहीं देखा कि अब पूरे बर्फ़ीले मैदान में पटी हुई बर्फ़ में धँसते हुए लोग जंगल की ओर भागे जा रहे थे और उनके पीछे-पीछे जर्मन टैंक बर्फ़ीली आँधी को चीरते हुए उनकी पीठों पर मशीनगनों से गोलियों की बौछार कर रहे थे, सैनिक गिर रहे थे, कुछ अभी भी रेंग रहे थे।

गला फाड़-फाड़कर वासिच सभी को इकट्ठा करने का प्रयास कर रहा था :

"इधर! घाटी में आओ!"

पर लोग नहीं सुन रहे थे : पीठ के पीछे मौत जो थी।

"इधर-र-र!.."

उसने भागते लोगों के सिरों के ऊपर हवा में गोलियों की बौछार की।

कुछ लोग समझ गये और मुड़कर घाटी की ओर दौड़ पड़े। वे हिमकणों के बादल में गिरकर लुढ़क रहे थे। फिर उठकर, आशंका से कपड़े झाड़ रहे थे, कोई घबराहट में हो-हो करके बेमौके हँस रहा था। और तभी घाटी के कगार के ऊपर से काले आकाश को चीरते हुए गोलियों की चमकती बौछार पड़ी।

"रुको!" सहजवृत्तिवश भागने की लोगों की इच्छा को रोकने के लिये वासिच चिल्लाया और ऊपर उठी स्टेनगन हिलायी।

पास में ट्रैक्टर जल रहा था। घाटी में काँपता लाल प्रकाश भरा था। और इस धुँधले प्रकाश में बर्फ़ की 'लाल आँधी' तिरछी उड़ रही थी। लोग वासिच को घेरकर खड़े थे। दबी-दबी कनपटियाँ, पिचके गाल, चमकती आँखों में आग प्रतिबिम्बित हो रही थी। आवेश में चमकती इन आँखों से वे वासिच की ओर देख रहे थे। उसने उन्हें रोका था, वह चिल्लाया था : 'रुको!' उसे मालूम होना चाहिए कि आगे क्या करना है। ऊपर टैंकों की चिंघाड़ और धमाकों के बीच मशीनगनों की बौछारें उन जीवितों की फसल काट रही थीं, जो अभी मैदान में भगदड़ कर रहे थे। पर वे यहाँ जमा हो गये हैं, आग उन्हें रोशन कर रही है और टैंक किसी भी क्षण वहाँ पहुँच सकते हैं।

निचाई पर, और भी नीचे झुकते हुए एक के बाद एक दहकती गोलियों की बौछार आ रही थी : बर्फ़ की आँधी में घाटी के कगार की ओर टैंक आ रहा था।

"कौन भाग रहा है?" वासिच ने स्टेनगन उठाकर झकझोरी। उसने देखा कि कई लोग गोलियों की बौछार में झुक गये, बचैनी से इधर-उधर देखने लगे। "कोई भी नहीं भागे! तोपें देख रहे हो!"

वह स्टेनगन से धधकती आग की ओर इशारा कर रहा था। एक तोप, परित्यक्त, एक ओर झुकी पड़ी थी : बायाँ पहिया टूट गया था। उसे लोहे के रस्से से बाँधे ट्रैक्टर ऊपर जल रहा था। दूसरी तोप के पास तोपची दौड़-धूप कर रहे थे। वे उसे पकड़-पकड़कर नीचे उतार रहे थे, उन्हें आशा थी कि वे फ़ायरिंग शुरू कर सकेंगे, पर अब स्पष्ट हो गया था कि उन्हें इसका समय नहीं मिलेगा, वे यह समझ रहे थे, इस लिये वह तोप से चिपके ही हुए थे, उसे छोड़ने का फ़ैसला नहीं कर पा रहे थे।

"तोपों को नष्ट करो!" वासिच चिल्लाया। "जो भी तोपों को छोड़कर भागेगा—मैं गोली मार दूँगा!"

एक ही भाव से उसकी ओर उन्मुख चेहरों में से उसने सार्जेंट-मेज़र के चेहरे पर ध्यान दिया।

"सार्जेंट-मेज़र, इनको आदेश दो!"

और खुद घाटी के उस ओर, दूसरी तोप की ओर दौड़ पड़ा। उस पर अब मशीनगन

की तिरछी बौछारें पड़ रही थीं।

"उड़ा दो!" वह दूर से ही, दौड़ता हुआ हाथ हिला रहा था। "तोप को उड़ा दो!"

वे समझ गये। किसी ऊँचे कद के व्यक्ति ने, जल्दी से नाल में हथगोला फेंक दिया और सब बिखरकर तोप से दूर भाग गये और बर्फ़ पर गिर पड़े। लगभग एक-साथ दो धमाके हुए। उछलकर लोग आगे दौड़ पड़े, उनकी पीठों पर प्रकाश पड़ रहा था। और उनके साथ आग की रोशनी में लाल बर्फ़ पर आगे तक फैली उनकी परछाइयाँ दौड़ती जा रही थीं।

जब वे नदिया के जमे पाट पर पहुँचे, वासिच ने मुड़कर पीछे देखा। टोपी के नीचे से बहता पसीना आँखों में भर रहा था। उसने ग्रेटकोट की कड़ी आस्तीन से उसे पोंछा। वहाँ, जहाँ तोपें खड़ी थीं, टैंक पहुँच चुका था। और दूसरे टैंकों के भी टरेट बर्फ़ की आँधी और आग के प्रकाश में धुँधले-धुँधले दिखाई पड़ रहे थे। उनकी ओर से चमकती आग की धाराएँ घाटी के समानान्तर उड़ती हुई इधर आ रही थीं। आगे दौड़ता सैनिक रुककर सीधा तन गया और आड़े-आड़े चल पड़ा, उसने नन्हे-से पेड़ को पकड़ लिया। सैनिक बर्फ़ पर खड़ा झूम रहा था और पेड़ उसके बोझ से झुकता जा रहा था। उसी क्षण जब वासिच दौड़ता हुआ पास पहुँचा पेड़ का शिखर तेज़ी से ऊपर को उठा और वह रास्ते में आड़े गिरे व्यक्ति से ठोकर खाता-खाता बचा। सैनिक के एक ओर फैले हाथ की उँगलियाँ अभी हिल रही थीं, बर्फ़ समेट रही थीं, पर मृत आँखें ऊपर चढ़ गयी थीं।

नदिया का बर्फ़ से भरा पाट टेढ़ा-मेढ़ा था। हाँफते, पसीने से तर लोग झाड़ियों में झुककर दौड़ रहे थे। पीछे से मशीनगनें उन पर मार कर रही थीं, और झुकी पीठों पर क्षण भर के लिये चमक होती। पर जंगल पास ही में था। काला-काला-सा वह बर्फ़ की सफ़ेद आँधी में पास आता जा रहा था। वन! जीवन!.. और अचानक वहाँ से स्टेनगनें सीधी मार करने लगीं। और सब तरफ़ से मार करती आग की लाल, हरी, पीली धाराओं में लोगों के बीच भगदड़ मच गयी। विकृत चेहरों पर चमक। बर्फ़ पर चमक। भय और पीड़ा का चीत्कार मच गया।

"मेरे पीछे चल!" वासिच ने अन्य सभी स्वरों को दबाते हुए ज़ोर से चिल्लाकर आदेश दिया। जो लोग बर्फ़ पर गिर पड़े थे, और जो रेंग रहे थे, सभी ने देखा कि उनके आगे वासिच सीधा तनकर खड़ा हो गया, प्रचण्ड चेहरा और उठे हाथ में स्टेनगन, मानो उसने गालियों और जर्मनों से उन्हें बचाने के लिये अपने शरीर की दीवार खड़ी कर दी हो। "मेरे पीछे चऽऽ ल!"

वासिच हथेलियों में धड़कती स्टेनगन को बगल में टिकाये दौड़ रहा था। उसने देखा नहीं था—उसे मालूम था, उसे महसूस हो रहा था कि उसके पीछे-पीछे, पास ही में सिंहनाद करते लोग अपने आगे आगे गोलियों की अग्निमय धाराएँ छोड़ते खुद गोलियों की बौछार में दौड़ रहे हैं। हिम आँधी में टकराकर सब उलझ गया। लोहे के

टोप। चीत्कार में खुले मुँह। फटते हथगोलों की आतशी चमक। विस्फोट से उछला किसी का स्याह जिस्म...

पेड़ों के बीच, सिसकारती हुई, तनों में धँसती धातू की पिघली धाराएँ। पर यह तो पीछे से है, पीछे से... आगे वन अपनी लम्बी-चौड़ी बाँहें पसारे खड़ा है।

और यहाँ से तीन किलोमीटर की दूरी पर तोपची, जिन्हें तोपों के लिये खन्दके खोदने के लिये आगे भेजा गया था, अभी बर्फ़ से जकड़ी ज़मीन खोद रहे थे। ग्रेटकोट को बर्फ़ पर पटककर, पेटियाँ खोलकर, सिर्फ़ टोपियों में, परतले कसे हुए वे बिना दम लिये काम कर रहे थे : बैटरी कमाण्डर घड़ी देख-देखकर उन्हें जल्दी करने को कह रहा था। फिर उसने खुद भी कुदाल उठा ली। और जब वह उसे सिर के ऊपर उठाता, बगलों के नीचे काले-काले धब्बे चौड़े होते जाते। सैनिकों की पसीने से तर पीठों से भाप उड़ रही थी, और ज़मीन से भी, जहाँ जमी परत टूट चुकी थी, भाप उड़ रही थी और वह छूने पर गर्म महसूस हो रही थी।

पूरे समय, जब वे काम कर रहे थे, पास ही में, कहीं दक्षिण से लड़ाई की आवाज़ आ रही थी : गोलों के धमाके, मशीनगनों और स्टेनगनों की प्रचण्ड गोलाबारी, पर यहाँ, उनके सामने, जहाँ टैंकों की चढ़ाई की अपेक्षा थी, मोर्चे की पाँत पर शान्ति थी, सिर्फ़ भभूके सामान्य से अधिक उड़ रहे थे।

पता नहीं क्यों दक्षिण में शुरू हुई और बढ़ती जा रही गोलाबारी आशंका उत्पन्न कर रही थी।

पाँच बजे, जब खन्दकें पूरी हो गयीं, लड़ाई बन्द हो गयी। सैनिक ग्रेटकोट पहनकर, ताजी खाइयों में बैठे थे और बेलचों व कुदालों से गर्माये हाथों से सिगरेटें बनाकर कई घण्टों के बाद पहली बार तम्बाकू के धुएँ का जायजा सुस्ता रहे थे।

बूट से सिगरेट के टोटे को मसलकर बैटरी कमाण्डर वक्षभीत पर चढ़ गया। वह बड़ी देर तक खड़ा, रात के अँधेरे में कुछ आहट लेने का प्रयत्न कर रहा था। सपाट मैदान में उत्तरी हवा सीटियाँ बजा रही थी, तोपों की खाली खन्दकों में बर्फ़ भर रही थी। भीर से पहले अंधकार और भी घना हो गया। छः बजने को आ रहे थे पर बटालियन अभी तक नहीं पहुँचा था।

और उनमें से किसी को भी—न बैटरी कमाण्डर को, न ओट में बैठे आराम कर रहे इन सैनिकों को मालूम था कि वे खुद और उनके द्वारा खोदी गयी खन्दकें—यह सब कुछ अब जर्मनों के पृष्ठ प्रदेश में आ गया था।

वासिच ने वन में छब्बीस लोगों को एकत्र किया। छब्बीस जीवित बचे लोगों को जो यह समझ नहीं पा रहे थे कि इस सबके बाद वे कैसे अभी भी जीवित हैं। फटे, जले ग्रेटकोटों में वे घुटनों पर स्टेनगनें रखकर बर्फ़ पर बैठे थे। वे अभी दम न ले पाये थे, चेहरे पर पसीने, मिट्टी और खून को पोंछ रहे थे और बहुत से तो अभी तक यह

महसूस ही नहीं कर रहे थे कि वे घायल भी हो गये हैं। कोई अतिपरिचित-सा, नंगे सिर, पेड़ के नीचे घुटनों के बल खड़ा था। वह मुट्ठी में बर्फ़ उठाता और उसे कनपटी पर रख देता। बर्फ़ खून से एकदम लाल हो जाती, वह उसे फेंककर मुट्ठी में ताजी बर्फ़ भरता और कनपटी पर उसे रखकर दबा देता। उसके गाल पर पिघलती बर्फ़ और खून की धारा बह रही थी, छाती पर रूईभरा कोट और घुटनों पर रूईभरी पतलून गीली थी। पास से गुजरते हुए, उसके चेहरे को देख वासिच उसे पहचान गया : खालातूरा। वही गुप्तचर जो उसके और मोस्तोवोई के साथ गया था। और वासिच को उसे जीवित देखकर खुशी हुई।

खालातूरा के पास एक सैनिक फटी-फटी आवाज़ में हँसता हुआ, काँपती उँगलियों से क़ागज़ में तम्बाकू लपेटकर सिगरेट बना रहा था, उसका सिर उत्तेजानावश झटक रहा था।

"क्या हाल बनाया है उसने हमारा, हूँ? देखो तो क्या गत बनायी है!"

और उसकी काँपती उँगलियों से तम्बाकू बिखर रहा था।

दूसरा नाक-भौं चढ़ाये, घुटनों पर, स्प्रिंग ढीला करके स्टेनगन की गोल मैगजीन में गोलियाँ भर रहा था, उसे जल्दी थी, वह रुक-रुककर गोलीबारी की आवाज़ की ओर मुड़कर देखता। अभी भी टैंकों और दूर कहीं जंगल में एक-दूसरे को पुकारते जर्मनों की आवाज़ें आ रही थीं। बख़्तरबन्द गाड़ी से मार्टर फ़ायर कर रहा था, और उसके गोले टहनियों से टकराकर टुकड़ेवाले गोलों की तरह हवा में फट रहे थे। यहाँ, वन के अन्तः प्रदेश में अभी भी इक्की-दुक्की गोलियाँ उड़कर आ रही थीं।

वासिच पेड़ के नीचे, ग्रेटकोट की जेबों में हाथ ठूँसे, तने पर पीठ टिकाकर खड़ा था। उसे मालूम था कि जर्मन जंगल में आगे बढ़ रहे हैं और शीघ्र ही वे यहाँ पहुँच जायेंगे। पर वह वहाँ से हटने का आदेश नहीं दे रहा था। कहीं पास में और भी लोग होने चाहिए, पीछे छूटे, एक-एक करके शत्रुपाँत को पार करनेवाले। यह नहीं हो सकता कि जो लोग यहाँ हैं, उनके अलावा और कोई नहीं बचा। वह पीछे हटनेवालों में आख़िरी था, कहीं पास में वे भटक रहे होंगे जो पहले जंगल में पहुँचे थे। और वह इंतजार कर रहा था, बची-खुची बटालियन को आगे नहीं ले जा रहा था। बर्फ़ पर बैठे लोग आवाज़ों और गोलियों की धाँय-धाँय को कान लगाकर सुन रहे थे : वे मानो पास से सुनाई पड़ने लगी थीं।

इश्चेन्को उसके पास आया।

"लोग बेचैन हैं। हम किस की प्रतीक्षा कर रहे हैं?"

वासिच ने उसकी ओर नज़र उठायी। वह उसको देख रहा था और कुछ याद करना चाहता था। कुछ महत्वपूर्ण, उससे सम्बन्धित।

"तुम पहली बैटरी के साथ पीछे हटे थे?"

"नहीं," इश्चेन्को ने जल्दी से कहा। "पहली को ज्वानूत्सेव ले जा रहा था। मैं

इससे ठीक पहले वहाँ गया था... टैंकों के हमले से ठीक पहले। क्या हुआ? तुम पूछ क्यों रहे हो?"

पर वासिच ने उसकी बेचैनी पर ध्यान नहीं दिया। वह अपनी ही सोच रहा था : 'हमारे अलावा कोई और भी यहाँ ज़रूर जंगल में पहुँचा होगा। सब तो मारे नहीं जा सकते।'

"तुम्हारे साथ पीछे हटनेवालों में से कोई ज़िन्दा बचा?"

इश्चेन्को चुप था। उसे इसी प्रश्न का भय था।

"ठहरो, तुम किस बैटरी के साथ थे?"

तब इश्चेन्को चिल्ला पड़ा :

"तू क्या, मेरी जाँच कर रहा है?"

वासिच ने उसकी ओर देखा और उसके मन में भारी सन्देह उपजा। उसने नज़रें झुका लीं। वह धीरे-धीरे याद कर रहा था। जब उसने तोपों को नष्ट करने का आदेश दिया था तब इश्चेन्को न दूसरी बैटरी पर था, न तीसरी पर।

"देखो! देखो!" इश्चेन्को अपने ग्रेटकोट में गोलियों और गोलों के टुकड़ों से बने छेदों को दिखा-दिखाकर चिल्ला रहा था, उनमें उँगली घुसाकर दिखा रहा था। "देखो, मैं कहाँ था!"

'क्या सचमुच ही लोगों को अकेला छोड़ आया?' वासिच ज़मीन पर नज़रें गड़ाये खड़ा सोच रहा था।

"क्षत-विक्षत बटालियन को टैंकों के नीचे कुचलने के लिये भेज दिया! बिना टोह लिये! कुछ पता लगाये बिना! हमारा उसी तरह छेद बन्द करने के लिये इस्तेमाल किया गया जिस तरह किसी दूसरे के शरीर से पिल-बाक्स में लगी मशीनगन का मुँह बन्द किया जाता है! इसके लिये कौन जिम्मेदार है? वे हमारी छातियों पर चढ़कर बढ़ गये! लोगों को टैंकों से कुचलते हुए! मेरे साथवाला गुप्तचर मारा गया! टैंक की बौछार से! देखो!"

और उसने फिर आस्तीन में बने छेद में उँगली घुसेड़ी। और जब उसकी उँगली उसी रास्ते से आर-पार निकल गयी जहाँ से गोली गुजरी थी, वह सिहर गया, संयोग से वह ज़िन्दा बच गया था। वह उसे टैंकों के नीचे भेजनेवाले लोगों से घृणा, और अपने पर दया के कारण सिहर गया। उन्हें उसके सम्पूर्ण जीवन की कोई चिन्ता नहीं थी। इतने सालों तक उत्तम सेवा कर चुकने के बाद, पूरा युद्ध लड़ चुकने के बाद अब वह मशीनगनों से भुने, टैंकों से कुचले उन लोगों की तरह ही बर्फ़ पर पड़ा रह सकता था। और अब इसलिये कि वह जीवित है, उस पर दोष मढ़ना चाहते हैं!

जंगल के उपर भभूका चमका और वासिच ने पास से उसका चेहरा देखा। सफ़ेद, उपर से पड़ते कीमियाई प्रकाश में हरा-सा, वह उसमें गहराती उत्तेजना से फड़क रहा था। और उन्हें अजीब-सा जंगल घेरे हुए था : हरी बर्फ़ पर पेड़ों के चक्कर लगाती

काली परछाइयाँ।

"तुम क्या सुझाव दोगे?"

उसने संयम के साथ धीमे स्वर में पूछा।

"पहले माँगना चाहिए था सुझाव! जब भेज रहे थे! तीन तोपों के साथ क्षत-विक्षत बटालियन को 'टाइगर' टैंकों के खिलाफ!... मेरे पास पाँच गोलियाँ हैं, पिस्तौल में भरी। इसके लिये कौन जिम्मेदार है?..."

और उसकी चेतना की गहराइयों में बस एक ही विचार कौंध रहा था : ध्यान बटाओ। वासिच का ध्यान बटाओ, इससे पहले कि उसके मन में शक पकड़ ले। और इसके साथ ही उसमें अपने प्रति करुण पैदा हुई। ऐसी कि दिल पसीज गया। अगर उसके जीवन का उनके लिये कोई मोल नहीं, तो उसे खुद अपने जीवन के लिये संघर्ष करना चाहिए। खुद!...

"अब तुम क्या सुझाव दोगे?"

"मुक़दमा चलाने का! उस सबके लिये जो कुछ यहाँ हुआ!"

स्टेनगन की लम्बी बौछार उनके सिरों के उपर से गयी, और उसके क्षणिक प्रकाश में इश्चेन्को की आँखें चमकीं।

"मुँह बन्द कर!"

कानों में खून की भारी धड़क के कारण वासिच को ठीक से नहीं सुनाई पड़ रहा था। इश्चेन्को पास आया, चिल्ला-चिल्लाकर बकता हुआ, पास ही में गोलियों की धाँय-धाँय, पेड़ों के बीच गोलियों की चमकती रेखाओं से आलोकित रात... लोग उठकर खड़े हो चुके थे, वे अब सिमटकर झुण्ड बनाये खड़े थे। अगर वे इस आदमी की बातें सुन लेंगे, अगर उनमें यह विश्वास जम जायेगा कि आज जो कुछ यहाँ हुआ उसके लिये कोई दोषी है तो वे लड़ नहीं सकेंगे, यहाँ से निकल नहीं पायेंगे, यहीं मारे जायेंगे।

"चुप हो जा!.."

वासिच ने जिस आवाज़ में यह कहा था उससे इश्चेन्को डर गया। पर गोलाबारी पास आती जा रही थी और नैराश्य ने उसे साहस-प्रदान किया।

"सच से डरते हो?" इश्चेन्को चिल्लाया। "देर हो चुकी है..."

इन लोगों को, जिन्हें वह लड़ाई से निकालकर लाया, बचाने की एकमात्र इच्छा से वासिच का हाथ पिस्तौल की ओर चला गया। उसी क्षण जब उसे अपने हाथ में पिस्तौल महसूस हुई, इश्चेन्को का चेहरा सफ़ेद, धुँधले दाग की तरह—पीछे को हटा और गर्म उँगलियाँ उसके हाथ में गड़ गयीं। इश्चेन्को की आँखों की जगह किसी की भयभीत आँखें दिखाई पड़ीं।

"कामरेड कैप्टन! कामरेड कैप्टन!"

लेफ्टिनेण्ट गोलुबेव उसका हाथ पकड़े हुए था। गोलियों की बौछार में सैनिक दौड़ने लगे थे और उनके पीछे-पीछे रात के अंधकार में पेड़ों के तनों के बीच से आती

गोलियों की अग्निमय रेखाएँ दृष्टिगोचर हो रही थीं। लोग दौड़ते हुए झुककर पीछे की ओर गोलियाँ चला रहे थे। वासिच ने पिस्तौलवाला हाथ खींच लिया, पर गोलुबेव ने उसे और भी कसकर पकड़ लिया। पास में तीन लोग दौड़े। बीचवाला, क्रीवोशइन, एक पाँव पर कूद-कूदकर चल रहा था, उसने दो अन्य लोगों की गर्दनों पर हाथ टिका रखे थे, और ये सैनिक उसे लगभग उठाकर ले जा रहे थे।

"हाथ छोड़ दो!" वासिच ने गोलुबेव को कहा।

हाथ में पिस्तौल पकड़े वह सबसे आख़िर में पीछे हटा। और हर बार, एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक दौड़ते हुए वह देखता कि गोलुबेव उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। पिस्तौल में गोलियाँ खत्म हो गयीं। उसने झट से गर्दन पर लटकी स्टेनगन उतार ली। पेड़ों के पीछे से वह उस ओर निशाना लगाकर छोटी-छोटी बौछार करता, जहाँ से गोली चलने की चमक आती और फिर झुककर, ग्रेटकोट के पल्लों से बर्फ़ पर रेखाएँ खींचता दौड़ पड़ता।

बर्फ़ से ढके घने चीड़ वन में वासिच ने फिर लोगों को इकट्ठा किया और उन्हें उत्तर-पश्चिम दिशा में ले जाने लगा। उसके बस्ते में रखे मानचित्र में इस जंगल का आँचल ही दिखाया गया था, जहाँ वे जर्मनों की घात को उलटकर भागे थे। आगे का मानचित्र नहीं था। वह लोगों को दिकसूचक की सहायता से आगे ले जा रहा था। और लोग विश्वास के साथ उसके पीछे-पीछे चल रहे थे, उन्हें इसका आभास तक नहीं था कि वह उन्हें अपने अनुमान के अनुसार ही ले जा रहा था। इसके बारे में अकेले इश्चेन्को को पता था, पर वह अब चुप था।

वासिच आगे-आगे चल रहा था, सामान्य से अधिक झुककर, मानो पराजय का सारा बोझ अपने कन्धों पर लादकर चल रहा हो। और जब वह मुड़कर पीछे देखता, हर बार वह गोलुबेव की परायी, भय मिश्रित असमंजसपूर्ण नज़र को पकड़ता। वह तत्काल मुँह मोड़ लेता।

बची-खुची बटालियन को वासिच गोलाबारी से अधिकाधिक दूर ले जा रहा था। वह उन्हें जर्मनों के पृष्ठ-प्रदेश में ले जा रहा था, उनकी प्रतिरक्षा पाँत की गहराई में, वहाँ बढ़ती सेनाओं के रास्तों से दूर अब अपेक्षाकृत सुरक्षा थी। सैनिक घायलों और उनके अस्त्रों को उठाकर चल रहे थे। सबसे पीछे बागरादृजे लम्बे ठसा-ठस भरे सफ़ेद थैले को उठाये चल रहा था। जब वे लड़ते हुए जंगल में आ रहे थे तब स्टेनगन खोने के बाद, सिर्फ़ रिवाल्वर के साथ रह जाने के बावजूद उसने यह थैला नहीं फेंका था। उसमें आयल-पेपर में लिपटी पूरी उबली मुर्गी, भेड़ का भुना गोश्त, रोटी, कुछ उबले अण्डे और चपटी डिबिया में नमक था। और बागरादृजे की पेटी से लटके फैल्ट कपड़े से मढ़े जर्मन फ्लास्क में वोदका बुलबुल कर रही थी। यह सब वह बटालियन कमाण्डर के लिये ले जा रहा था। वह सबसे पीछे-पीछे चल रहा था और मुड़-मुड़कर देखता जा रहा था। उसे अभी भी आशा थी, वह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि मेज़र उशाकोव

जीवित नहीं है।

उस रात जलते टैंकों की लाल लपटें बड़ी देर तक हवा में लहराती रहीं। उनकी धुँधली रोशनी मैदान और वन आँचल को आलोकित करती बर्फ़ पर, पेड़ों के तनों पर, मृतकों के चेहरों और ग्रेटकोट पर अठखेलियाँ कर रही थी। लड़ाई अब आगे चली गयी थी, पर यहाँ अभी भी रुक-रुककर धमाके होते और लपटें व चिंगारियाँ ऊँचाई तक उड़तीं। फिर लपटें बुझ गयीं। और वन एवं मैदान अंधकार में डूब गये। तपी धातु अभी भी चमक रही थी, और जले टैंकों के पास की बर्फ़ पिघल रही थी, ज़मीन से भाप उड़ रही थी। पर वह मृतकों के चेहरों पर अब नहीं पिघल रही थी। गर्म घरों में जगाये गये, जहाँ वे कई दिनों की घमासान लड़ाई के बाद पहली बार कपड़े उतारकर, बिछौने पर सोये हुए थे और नींद में भी चैन और उष्मा का अनुभव कर रहे थे, भरी रात ख़तरे के संकेत पर उठाये गये, वे इसी रात तेज़ हवा की सीटियों को सुनते चिर-निद्रा में सोये पड़े थे।

और हवा सर्दियों में उदासी लानेवाली भाँय-भाँय कर रही थी। आकाश की ऊँचाइयों में बादलों के पीछे ठण्डा चाँद अपना रास्ता नाप रहा था, वही चाँद जो अभी कुछ देर पहले तक इन लोगों का पथ आलोकित कर रहा था; उसके नीचे फैले मैदान में प्रकाश और अंधकार आँख-मिचौली खेल रहे थे। और मृतकों की कतारों के बीच उड़-उड़कर बर्फ़ जमा हो रही थी।

अध्याय 6

सदाबहार पेड़ों की पत्तियों की आड़ से दूरबीन निकालकर वासिच और गोलूबेव धीरे-धीरे उनकी ओर आते काले बिन्दु पर नज़र रखे हुए थे। नीचे लटके आकाश के तले हिमाच्छादित प्रांतर मौन पड़ा था। सुबह कब की हो चुकी थी पर सूरज ने अभी तक दर्शन नहीं दिये थे। बस कभी-कभी बादलों के पीछे तैरता कोई काला बिन्दु-सा दृष्टिगोचर होता।

वासिच के पैर ठण्ड से अकड़ने लगे थे। वह तंग बूटों में पैर की उँगलियाँ सिकोड़ रहा था। पास ही में गोलुबेव था। भूख के मारे उसका बुरा हाल हो रहा था, और हर बार वह वासिच को सहमी नज़र से देखता, जानबूझकर ज़ोर से नाक छिनकता, खँखारता, चीड़ वृक्ष के तने से बगल रगड़ता, और उसकी टोपी और पीठ पर उपर से बर्फ़ झड़ती। इसके अलावा उसे सिगरेट पीने की इतनी उत्कट इच्छा हो रही थी कि मुँह में पानी भर आया था। उसने मुँह में भरा पानी बर्फ़ पर थूक दिया और अपनी आँखों पर दूरबीन लगा ली।

काला बिन्दु बड़ा होकर दो में बँट गया और वे दोनों साथ-साथ चले आ रहे थे।

उस ओर से, जहाँ से वे आ रहे थे, मैदान को पार करती बाँसों पर लटकी टेलीफोन लाइन आ रही थी। यह हरे रंग का, जर्मन तार था। सोवियत फ़ौज भी जर्मनों से छीने इस तरह के तार का प्रयोग करती थी। थोड़ी-सी आशा बची थी, हो सकता है कि ये सोवियत सिगनलमैन ही हों।

दूर, मैदान के छोर पर मोटर की आवाज़ सुनाई पड़ी। आवाज़ पास आ रही थी और ज़मीन काँपने लगी। बर्फ़ के ढ़ेरों के पीछे से गुर्राती हुई भारी लारी गुज़र गयी, यहाँ से वह नहीं दिखाई पड़ रही थी; बस पहियों से उड़ा बर्फ़ का बादल उठा, जिसके पीछे सिगनल-मैन ओझल हो गये। जब वह छँटा तो बर्फ़ पर दो मानव आकृतियाँ साफ़-साफ़ दिखाई पड़ रही थीं। वे कभी पास आकर एक हो जातीं, कभी उनके बीच दरार नज़र आती। मोटर की दूर जाती आवाज़ अश्रव्य होती जा रही थी।

"कामरेड कैप्टन!" गोलुबेव ठिठुरे होंठों से फुसफुसाकर बोला। "आज्ञा दीजिये, हम इन्हें पकड़ लेंगे। लाइन काट देंगे—खुद ही हमारे हाथों में आ जायेंगे।"

वासिच ने उसकी ओर नज़र डाली। ठण्ड के मारे गोलुबेव का चेहरा भूरा पड़ गया था। टोपी से दबी भौंह पर लटकी घुँघराली लट बर्फ़ से ढँकी थी। जवान, हृष्ट-पुष्ट लड़का। और यहाँ ठण्ड में ठिठुर गया।

"लेटे रहो!" वासिच ने कहा।

दो जर्मनों की वजह से वह इतने सारे लोगों की जानें ख़तरे में नहीं डाल सकता था। इन दोनों को बन्दी बनाना तो कोई कठिन बात नहीं है। पर उनके पीछे-पीछे दूसरे चले आयेंगे। और अभी तो पूरा दिन आगे पड़ा है।

भारी गड़गड़ाहट के साथ ज़मीन को कँपाती नीचे फिर एक मोटर गुजरी जा यहाँ से बर्फ़ के ढेरों के कारण नहीं दिखाई पड़ रही थी। जब वह बर्फ़ के उड़ते बादल से घिरी मैदान में दिखाई पड़ी तो वह काफ़ी दूर जा चुकी थी और उसे ठीक से देखना असम्भव था। पर वे दो व्यक्ति अब नंगी आँखों से भी साफ़ नज़र आ रहे थे, और दूरबीन में तो टोपियों और धड़ के बीच चेहरों के सफ़ेद धब्बे तक दिखाई पड़ रहे थे।

अचानक क्षण भर के लिये सूरज ने हिमाच्छादित मैदान को आलोकित कर दिया। और इस चमकीली शीतकालीन धूप में नीचा लटका सलेटी आसमान और भी मनहूस लगने लगा। अब दूरबीन में ग्रेटकोटों का रंग भी दिखाई पड़ रहा था। ये जर्मन थे।

वासिच जर्मनों को देख रहा था और उसे अब ठण्ड भी महसूस नहीं हो रही थी।

"कामरेड कैप्टन, अनुमति दीजिये," बेसब्री से काँपते हुए गोलुबेव ने फिर अनुरोध किया। "हम इन्हें आसानी से पकड़ लेंगे।"

वह फुसफुसाकर बोल रहा था क्योंकि दूरबीन में जर्मन बहुत पास लग रहे थे।

"लेटे रहो!" वासिच ने कुछ रुककर कहा।

सूरज फिर छिप गया और जर्मनों के ग्रेटकोट फिर काले लगने लगे। वे दोनों एक स्थान पर खड़े थे मानो आगे जाने का फैसला न कर पा रहे हों, फिर दूर जाने लगे।

गोलुबेव को निरीक्षण के लिये छोड़कर वासिच कपड़े झाड़ता घाटी में उतर गया। बर्फ़ पर कानों को ठण्ड के मारे ग्रेटकोट के कालरों से ढककर एक ढेर में सोये लोग जागने लगे थे। रात की घटनाओं के बाद, आधी नींद सोने के बाद वे अवसाद के साथ जाग रहे थे। शुभ्र शीतकालीन प्रकाश में उनके चेहरे पीले और बासी लग रहे थे। रात भर में बागरादज़े के कपोल आँखों तक काले कड़े बालों से ढक गये थे। वह अकेला खोया-खोया-सा बैठा था और उसे देखकर वासिच के दिल में कसक-सी हुई : उशाकोव की मृत्यु ने उन्हें और भी निकट ला दिया था।

"आर्चील, लोगों को खाना खिलाओ," उसने कहा।

बागरादज़े ने नज़रें उठायीं और फौरन झुका लीं। इन शब्दों में उसके लिये दूसरे अर्थ का प्रमुख महत्व था। लोगों को वह सब बाँटने का आदेश देकर जो वह अर्दली, बटालियन कमाण्डर के लिये लेकर चल रहा था, वासिच ने पहली बार यह कहा कि उशाकोव नहीं रहा। बर्फ़ पर बरसाती बिछाकर बागरादज़े मुर्गी के टुकड़े कर रहा था, और उसके होंठ काँप रहे थे।

किसी ने खालतूरा के पट्टी बाँध दी थी। कनपटी पर भीगकर कड़ी हुई नयी सफ़ेद पट्टियों से घिरा उसका पीला, मंगोलो जैसा चेहरा छोटा-सा लग रहा था। एक आँख सूजी हुई थी, पर दूसरी, संकरी, काली, सजीव चंचलता के साथ देख रही थी।

वासिच क्रीवोशेइन के पास जाकर बर्फ़ पर बैठ गया। क्रीवोशेइन आँखें बन्द करके पीठ के बल लेटा था। उसके सफ़ेद-फक चेहरे पर होंठों और नाक के पास अब नीलिमा साफ़-साफ़ दिखाई पड़ने लगी थी। वह खून बहने के कारण निढाल हो रहा था। पर वह अभी भी बह-बहकर पेट में जमा हो रहा था। सबको यहाँ रात तक ठहरकर इंतजार करना ज़रूरी था। पर अकेला वही इंतजार नहीं कर सकता था : अगर उसकी जान बच सकती थी, तो सिर्फ़ तत्काल आपरेशन से।

क्रीवोशेइन ने आँखें खोलीं, वह देर तक देखता रहा पर पहचान नहीं पा रहा था, फिर कहीं दूरी से, गहराई से चेतना लौटी और नज़र अर्थपूर्ण हो गयी।

"यह देखिये..." उसने कहा और रक्तहीन होंठों से मुस्कराया। "मैं लेटे-लेटे सोच रहा था कि जब सच्चा सुख नहीं होता तो छोटी मोटी बातें भी लोगों की नजरों में बड़ी हो जाती हैं।"

वह धीरे-धीरे, रुक-रुककर ज़ोर लगाता हुआ बोल रहा था।

"इस लड़ाई से पहले सबसे ज्यादा मुझे यह बात परेशान कर रही थी कि मैंने बटालियन कमाण्डर को सेल्यूट ढंग से नहीं दिया। लड़ाई नहीं... इसकी सम्भावना नहीं... क्षीण हाथ से उसने अपनी ओर इशारा किया। "बल्कि यह सता रही थी कि मैं हास्यास्पद, फहड़ हूँ। वैसे तो यह ठीक भी है। लोग लड़ाई में मरने के लिये नहीं जाते। जीवित लोग जीवन के बारे में सोचते हैं..."

'इसकी उम्र कोई पैंतीस बरस की होगी,' वासिच सोच रहा था। 'इसका परिवार

है या नहीं?' पर वह इसके बारे में पूछने का साहस नहीं कर पाया।

अगर क्रीवोशेइन इस समय आपरेशन की मेज़ पर पहुँच जाता किसी के कुशल हाथों में!... वासिच को दीना के हाथों का ख़्याल आ रहा था, बड़ी-बड़ी हथेलियाँ, लम्बी उँगलियाँ, गहरे कटे नाखून; वे हाथ जिनमें स्वाभाविक झलक मिलती है जैसी कि उसके चेहरे पर। उसने पहले कभी भी ऐसे निपुण, प्रबुद्ध हाथ नहीं देखे थे। क्या पता उसे उनसे प्यार हो? अजीब बात है कि सब चिढ़ के साथ शुरू हुआ। आपरेशन के बाद वह वार्ड में आयी, उसने जेबों में हाथ इतने अन्दर तक ठूँसे रखे थे कि कन्धों पर चोगे के नीचे संकरे स्कन्ध स्ट्रेपों के कोने ऊपर को उभरे हुए थे। उसके पीछे-पीछे वार्ड की डाक्टर आ रही थी, अपनी गोद में वह शिशुवत मरीजों की फाइलों का ढेर उठाये हुए थी। वे दोनों उसकी शैय्या के पास रुकीं। वह बड़ी देर तक, दृढ़ता के साथ हिदायतें दिये जा रही थी, पर उसको क्लोरोफार्म के बाद मतली आ रही थी और इस औरत की रौबीली तीखी आवाज़ से उसे चिढ़ हो रही थी। उन दोनों में से कोई भी सोच नहीं सकता था कि ढाई महीने बाद, उसके हाथ पर सिर रखकर, दहकते कपोलों के साथ वह उससे कहेगी : 'तुम्हें याद है, कितनी घृणा के साथ तुम मुझे देख रहे थे?'

और फिर कोहनी पर टिककर बड़ी देर तक, अँधेरे में नम चमकती आँखों से उसके चेहरे को निहारकर वह बोली :

"सोचो तो सही, तुम्हें किसी और के पास लाया जा सकता था!..."

पाले से ढकी खिड़की के काँच से छनकर आती हरी चाँदनी में उसके उघड़े कन्धे ठण्ड से काँपे।

"आख़िर मैंने तुम्हें टुकड़े-टुकड़े जोड़कर सिया है।"

और अक्सर रात को, उसकी क़मीज़ का कालर खोलकर वह उसके शरीर पर टाँकों के निशान सहलाती, उनमें से हरेक के बारे में बताती और उन्हें चूमती।

"तुम्हारी हसलियाँ कितनी ज़बरदस्त है," स्नेह के साथ उनका स्पर्श करके गर्व से कहती।

और वासिच कहता कि वह उसके जिस्म की शरीर-रचना के अध्ययन के लिये लाभ उठा रही है। वह उसके हाथ अपने हाथों में लेती और उसकी कलाई को पकड़ने का प्रयास करती पर उसकी उँगलियाँ कम पड़ती।

"मालूम है, तुम फ़ौजी वर्दी में इतने शक्तिशाली नहीं लगते।"

जब एक के बाद एक एंबुलेंस रेलगाड़ियाँ आने लगीं,—समाचारों में अभी कुछ नहीं बताया गया था, पर यहाँ, अस्पताल में सबको मालूम हो गया था कि घमासान लड़ाइयाँ शुरू हो गयी हैं, शायद, हमारी चढ़ाई ही हो,—वह आपरेशनों के बाद थकान से निढाल लौटती, उसमें बोलने की शक्ति तक न होती, आँखों के नीचे नीले-नीले-से गड्ढे पड़े होते, और वह उसके हाथ पर सिर रखकर जल्दी ही नींद में खो जाती। तब वह सावधानी से उठता, उपर तक पाले से ढकी खिड़की के पास बैठ जाता और सिगरेट

पीता उसकी ओर देखता रहता। वह अपने को इस कारण शक्तिशाली अनुभव करता कि इस दुनिया में यह नन्ही-सी महिला है, उसके करीब सिमटकर सोयी हुई है, और वह यह जानकर चैन से सोयी हुई है, उसके साथ वहाँ है।

आधी रात के करीब कमरा ठण्डा हो जाता। वह चुपचाप अँगीठी का ढक्कन खोलता, शाम से तैयार चैलियों और छिपटियों को उसमें अलाव की तरह रखता और उकडूँ बैठकर उन्हें जलाता। वह बर्च वृक्ष की चैलियों के चटखने से जाग पड़ती।

"मैं शर्मिंदा हूँ," वह कम्बल की गर्मी में सिकुड़कर कहती, "बेहद थक गयी थी, नींद आ गयी। यह शरीर की रक्षात्मक प्रतिक्रिया है। अनवरत निद्राविहीन रातों के बाद।"

और फिर सो जाती। जब अँधेरे में लाल दहकती अँगीठी पर केतली सूँ-सूँ करने लगती और कमरे में गर्मी हो जाती, वह जाग पड़ती।

रात को, वे दोनों, बत्ती जलाये बिना, सिर्फ़ अँगीठी का कपाट खोलकर चाय पीते। जलती लकड़ियाँ चटखतीं, बाहर पाले में पेड़ चटखते, झब्बेदार तुषार से ढकी खिड़की का काँच नीला था, और मेज़ पर मेज़पोश और चीनीदार में रखी शक्कर नाचती लपटों में लाल।

"मेरे बाल बिखरे हुए हैं, सच?" दीना पूछती, हाथ से बालों को छूकर देखती और उसके आँखों में सुख की चमक होती। "तुम मत देखो। पर चाहते हो तो देख सकते हो। मैं ऐसे भी बहुत सुखी हूँ।"

और उसके हाथों पर, होंठों पर, चेहरे पर अँगीठी की आग की रोशनी अठखेलियाँ करती...

दीना ने लिखा था कि उनके बेटा हुआ है। "हूबहू तुम्हारी अनुकृति है, तुम इसकी कल्पना तक नहीं कर सकते कि उसकी कानी उँगली भी बिल्कुल तुम्हारी जैसी है, मुड़ी हुई, दायें कन्धे पर उसी जगह तिल तक है, बस नन्हा-सा। छोटा वासिच है। प्यारे, बस तुम सही-सलामत रहो! तुम्हारे बिना रस्मी तौर पर उसे तुम्हारा नाम तक नहीं देना चाहते हैं..."

"मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ," क्रीवोशेइन ने कहा। "यहाँ, नीचे, घाटी में वसन्त आने पर पानी भर जाता है। वह सब कुछ बहा ले जाता है। इसलिये मुझे दफ़नाया यहीं जाये। आप समझते ही होंगे, जी नहीं चाहता..."

वासिच ने कहा :

"शाम को हम अपने ठिकानों तक पहुँच जायेंगे।"

"मैं बचूँगा नहीं।"

उसने यह दृढ़ चेतना में, अपनी शान्त, धीमी आवाज़ में कहा। और फिर बड़ी देर तक चीड़ की फुनगी को देखता रहा जिसमें बादलों में छिपा सूरज हल्का-हल्का-सा आलोकित कर रहा था।

"आपके बाल-बच्चे हैं?" वासिच ने पूछने का साहस कर ही लिया। शायद क्रीवोशेइन नहीं सुन रहा था। वह वैसे ही पीठ के बल लेटा चीड़ के हिमाच्छादित शिखर को देख रहा था।

"इस मामले में कोई मदद नहीं कर सकता। मैं सोच रहा था...

अगर यहाँ से निकल पायेंगे तो सूचना भिजवा दीजियेगा कि कहाँ मुझे दफ़नाया गया है। शायद इसकी भी ज़रूरत नहीं है।"

और उसने आँखें बन्द कर लीं क्योंकि बहुत थक गया था।

और इस समय घाटी में चारों ओर सैनिक खाना खा रहे थे। बारूद की कालिख और गन्दगी से काले हाथों में भेड़ के ठण्डे गोश्त को पकड़े हुए वे उसे बेसब्री के साथ दाँतों से खींच-खींचकर काट रहे थे, ज़ोर-ज़ोर से मुर्गी की हड्डियाँ चूस रहे थे, रस्क कुतर रहे थे। वे लड़ाई के बाद, इस भयंकर रात्रि के बाद पहली बार खाना खा रहे थे। जो पहले खा चुका था वह अपनी चिकनी उँगलियों से क़ागज़ में तम्बाकू लपेटकर सिगरेट बना रहा था, और उन लोगों की तरफ़ न देखने का प्रयास कर रहा था जो अभी खा रहे थे।

वासिच क्रीवोशेइन के पास से उठकर घाटी की ढलान पर बैठ गया। बागरादूजे झट से उसके लिये आयल-पेपर पर रखकर मांस की एक बोटी, नमक और रोटी ले आया।

जंगल के हिमाच्छादित मैदानों के पार, यहाँ से दक्षिण-पूर्व में लड़ाई हो रही थी। गोलों के धमाके दबे-दबे से, ज़मीन पर पड़ती चोटों की तरह सुनाई पड़ रहे थे। वासिच खाते-खाते दूर हो रही इस लड़ाई की आवाज़ों को सुन रहा था जो न पास आ रही थीं, न दूर जा रही थीं।

ऊपर से फिसलता हुआ गोलुबेव आया, वह बर्फ़ से लथ-पथ था। वह खफ़श था कि उसको ड्यूटी से छुट्टी मिल गयी, अब खा-पी लेगा और अन्ततः चल-फिर सकेगा। वह अकेला ही बाकी सबसे ज्यादा शोर कर रहा था।

"ढोर पालनेवाले हैं?"

वह खुशी के साथ अपने हाथों से बगलों को पीटता हुआ आँख मार रहा था। और तभी वासिच का ध्यान घाटी में सैनिकों के बीच घूमते, न जाने कहाँ से आये देहाती कुत्ते पर गया। कुत्ता दुबला-पतला था, रंग ललौंहा, सिर लोमड़ी की तरह पैना। शायद वह जंगल में से आया होगा, जहाँ उसे युद्ध ने खदेड़ दिया था : आस-पास कोई गाँव तो था नहीं। किसी ने उसे चुसी हड्डी फेंक दी और वह टाँगों के बीच दुम दबाकर, ठण्ड से काँपता हुआ उसके पास दुबककर आ गया। उसके क्षीण बदन में पसलियां साफ़-साफ़ दिखाई पड़ रही थी। वह बर्फ़ पर पड़ी हड्डी को गुर्राता हुआ, दाँत निकालकर चबा रहा था। और घाटी की दोनों ढलानों पर बैठे लोग उसे देखते हुए दूरी पर हो रही लड़ाई की आवाज़ों को सुन रहे थे : विस्फोटों के दबे-दबे धमाकों और इतनी दूरी के कारण मुश्किल से सुनाई पड़ती मशीनगन की गोलाबारी को। समय-समय पर बर्फ़

के ढेर की पीछे से घूँ-घूँ करता भारी लदा हुआ जर्मन ट्रक गुजरता। शाम जैसा धुँधलका छाया हुआ था जबकि दिन अभी शुरू ही हुआ था।

वासिच घुटनों पर कोहनियाँ टिकाकर बैठा था। खाने के बाद पेट में गर्मी आ गयी थी और धीरे-धीरे वह सारे शरीर में फैल रही थी, दहकती आँखें अपने आप ही मुँद रही थीं। उसने भारी सिर को हाथों पर टिका लिया और झपकी लेने लगा। फिर चौंककर वह ऐसे जागा मानो किसी ने धक्का दिया हो। उसने लाल, आशंकित आँखों से चारों ओर नज़र दौड़ायी। पर सब कुछ वैसा ही था : धुँधला दिन भी, घाटी भी और उसमें एकत्रित लोग भी। उनमें से कुछ ऊँघ रहे थे, कुछ बेताबी में इधर-उधर टहल रहे थे। छोटे-से सपने के बाद, जिसमें सब कुछ प्रचण्ड वेग के साथ ढह रहा था, हाहाकार के साथ आपस में टकरा रहा था, अचानक उसकी आँख खुल गयी, और समय के गति ठहर सी गयी। वास्तव में वह अहसहनीय रूप से धीमी गति के साथ खिसक रहा था। और फिर घटित घटना का सारा बोझ वासिच के कन्धों पर आ पड़ा।

सचमुच ही उशाकोव नहीं रहा? और फिर उसकी आँखों के सामने वही दृश्य घूम गया कि किस तरह नंगे सिर दौड़ रहा था, कोहनियों के बगल में सटाकर, और मशीनगन की दो धाराएँ उसके अगल-बगल उड़ने लगीं और तीसरी धारा बीच में चमकी।

वासिच घाटी की बर्फ़ से ढकी ढलान पर घुटनों पर हाथ धरे, भृकुटि ताने बैठा था, हालाँकि वह कुछ भी नहीं कर रहा था पर लोग उससे फूटती शक्ति को महसूस कर रहे थे और उसके वश में थे। और इश्चेन्को भी इसी शक्ति को महसूस कर रहा था, जो पूरे समय वासिच पर नज़र रखे हुए था। अब, जब प्रत्यक्ष ख़तरा नहीं रहा, उस पर गोलियाँ नहीं चल रही थीं, वह उन बातों के लिये पछता रहा था जो उसने जंगल में कहीं थीं। कैसे उसके मुँह से वे निकल गयीं?

''और लोग इसकी बात का तो विश्वास कर लेंगे!' इश्चेन्को सोच रहा था। 'एक शब्द बोलने की देर है कि आदमी का सारा जीवन चौपट हो जायेगा। आठ साल की त्रुटिहीन सेवा, कैप्टन के रैंक तक पदोन्नति की, प्रशिक्षण...'

अब भी ट्रेनिंग के वर्षों को वह अपने जीवन का सबसे भारी पराक्रम मानता था। जो कुछ कई चंट लोग ऐसे ही सीख लेते थे वह सब मेहनत और सब्र के बल ही उसके पल्ले पड़ता था। वे खुलकर उस पर हँसते थे। वे तब तक उस हँसते रहे जब तक उसे, अनुशासित, कर्त्तव्यपरायण कैडेट को, अच्छी कवायद करनेवाले को जूनियर सार्जेंट का रैंक नहीं दिया गया। उसने अपनी वर्दी के कालर पर तामचीनी के दो त्रिकोण लगा लिये, शक्ति के दो नन्हें प्रतीक, और फौरन उन चंट लोगों ने देख लिया कि वह भी उन्नीस नहीं है। दो त्रिकोणों से कैप्टन के चार तारों तक—सारा जीवन था। और कितना सब्र भी! उसे रेजिमेण्ट में अठारह में से एक बैटरी के कमाण्डर के रूप में नियुक्त किया गया, फिर उसने तीन में से एक बटालियन के स्टाफ अधिकारी के

पद तक उन्नति की। ऊपर की ओर पिरामिड सँकरा होता जाता था पर वह ऊपर चढ़ता ही जा रहा था। और अचानक उसका पूरा जीवन, उसका पूरा भविष्य—इस आदमी के हाथों में आ गया है। वह इस समय वासिच से अत्यन्त घृणा कर रहा था। पर इसके साथ ही वह भी समझता था : कुछ करना चाहिए, किसी तरह अपनी छवि को सुधारना चाहिए जो शायद अभी उसके मन में जमी नहीं है।

'उस क्षण वह सबके साथ गद्दारी करने को तैयार था,' वासिच ने फिर से वन, रात, इश्चेन्को का चेहरा और यह याद करने की सोचा, कि कैसे वह चीखें मार रहा था : 'अब देर हो चुकी है! पहले सोचना चाहिए था!... 'क्या देर हो गयी है? जर्मनों से लड़ने में? कर गया होता गद्दारी, यह तो निश्चित है। और कर भी दी गद्दारी क्योंकि भाग गया। अपने जान बचाने के कारण। जो लोग लड़ाई में अपने पर दया करते हैं, उनकी इस दया की क़ीमत को दूसरे अपने खून से चुकाते हैं। यह युद्ध का नियम है।'

अचानक वासिच को इस विचार ने स्तब्ध कर दिया : देखो यह रहा इश्चेन्को, वर्दी पहने हुए, अपने रैंक द्वारा रक्षित, अपने अधीन लोगों को दिये गये उसके हर आदेश के पीछे, उस आदेश के पीछे, जो बहस का विषय नहीं होता, सेना की सम्पूर्ण शक्ति और नैतिक प्रतिष्ठा, जीवितों और मृतकों की कीर्ति दाँव पर लगी होती है। उनके नाम पर ही वह आदेश देता है, उस समय उनकी शक्ति उसके हाथों में होती है। और वही व्यक्ति, भय से निरवस्त्र होकर अपनी असलियत में नंगा हो जाता है। ऐसे ही इस व्यक्ति के हाथों में लोगों की जानें सौंपी गयी हैं! और वासिच ने भावशून्यता के साथ सोचा : 'यहाँ से निकल गये तो इस पर मुक़दमा चलायेंगे।'

शीघ्र ही इश्चेन्को ने देखा कि वासिच ने गोलुबेव को अपने पास बुलाया और वे दोनों नक्शे को घुटनों पर बिछा कर कोई सलाह-मशविरा करने लगा।

'मुझे उनके पास जाना चाहिए,' इश्चेन्को सोच रहा था। 'मुझे अलग रखने का उसे कोई अधिकार नहीं है। मैं स्टाफ का अधिकारी हूँ। आख़िर को मैं कैप्टन हूँ और वह भी तो कैप्टन ही है।'

चाहे वे रैंक की दृष्टि से बराबर थे, और सैनिक दृष्टि से इश्चेन्को की स्थिति कुछ हद तक ऊँची ही थी फिर भी वह महसूस कर रहा था कि वह उठकर उनके पास नहीं जा सकता, हालाँकि उसको इसका पूरा अधिकार है। कोई और ही चीज़, जो पदोन्नति के साथ नहीं दी जाती, लोगों को वासिच का कहना मानने को बाध्य कर रही थी। उससे फूटती इस शक्ति को इश्चेन्को दूर से ही महसूस कर रहा था। और वह इसी तरह बैठा रहा, मन ही मन यातना सहता, खुद को धिक्कारता, ललकारता पर फिर भी वह उठकर पास जाने का फैसला न कर पाया।

दोपहर तक तापमान बढ़ गया। घनी बर्फ़ पड़ने लगी। वह शान्त हवा में रूई के बड़े-बड़े कोमल गालों की तरह नीचे आ रही थी। क्षितिज आँखों से ओझल हो गया,

मानो घनी धुँध में छिप गया हो, आकाश नीचे उतर आया, और बर्फ़ आस-पास के स्वरों को सोखती हुई मौन गिर रही थी। जले टैंकों और ट्रैक्टरों के ढाँचों पर, उनके इर्द-गिर्द जली घासवाली ज़मीन पर, मृतकों के चेहरों और ग्रेटकोटों पर, ठण्ड में जमे खून के डबरों पर। वह रणभूमि पर बिछ रही थी, मशीनगनों से छलनी हुए मृतकों को दफ़नाते हुए। और दोपहर तक वहाँ केवल श्वेत चमकते ताजे ढेर ही रह गये थे।

घाटी ने वन को टेढ़ा-मेढ़ा चीरकर पेड़ों को पीछे हटा रखा था और उसके उपर पत्र-विहिन बलूत वृक्षों के शिखरों, बर्फ़ से भारी चीड़ों की धुँधली फुनगियों के बीच आकाश का टुकड़ा साफ़ नज़र आ रहा था। वहाँ से खड़खड़ करती श्वेत रिक्तता से बर्फ़ के बड़े-बड़े सलेटी गाले गिर रहे थे। घाटी में बैठे लोगों की टोपियाँ, पीठें बर्फ़ की परत से सफ़ेद हो गयी थीं। कोई दीर्घ प्रतीक्षा की मुद्रा में, आस्तीनों में ठिठुरे हाथों को घुसाकर बैठा था, कोई कानों तक ग्रेटकोटों के कालरों को उठाकर सोया हुआ था।

घने हिमपात में वन के पार होती लड़ाई की आवाज़ें दब-सी गयीं, दूर-सी चली गयीं पर लड़ाई दिन भर चलती रही। और पूरे दिन सिर्फ़ मोर्चे की ओर जर्मन गाड़ियाँ दौड़ी चली जा रही थीं। उनकी आवाज़ाही से ज़मीन काँप रही थी। खराब मौसम का लाभ उठाकर ऊपर बैठे पर्यवेक्षक रेंगकर सड़क के बिल्कुल पास पहुँच गये थे और झाड़ियों में छिपकर लेटे हुए थे। सब तरफ़ धुँधलका छाया हुआ था उनके पास छद्मावरण के लिये सफ़ेद चोगे नहीं थे पर वे बिना हिले-डुले लेटे थे और बर्फ़ ने उन्हें ढककर अगोचर कर दिया। केवल उनके चेहरे, दूरबीनें और हाथ ही बर्फ़ से दिखाई पड़ रहे। और उनकी दूरबीनों के सामने से सड़क पर गोलों से लदे ट्रक, जर्मनों को ले जाते ट्रक दौड़ते जा रहे थे—भड़की लड़ाई के धधकते अलाव में ईंधन की तरह।

दूरस्थ गोलाबारी के धमाकों की पृष्ठभूमि में घाटी में समय की गति धीमी हो गयी थी। अचानक कुत्ता बर्फ़ पर बैठकर रोने लगा। प्रशीत वन उसके भारी, उदासीभरे विलम्बित क्रंदन को दोहराने लगा। क्रीवोशेइन मर चुका था, शान्त, मानो अभी सो रहा हो। अपनी पैनी थूथनी को उपर उठाये कुत्ता मृतक के लिये रो रहा था, और बर्फ़ गिरती ही जा रही थीं...

अध्याय 7

आखिरी सिगरेटें पी जा चुकी थीं। पेड़ों के बीच से पाले की धुँध में सूर्यास्त की लालिमा दिखाई पड़ रही थी। वह बुझती जा रही थी और चीड़ की टहनियों पर पड़ी बर्फ़ अब नीली, ठण्डी दिखाई पड़ रही थी। तेज़ी से अँधेरा छाता जा रहा था।

"चलने से पहले क्षण भर के लिये बैठ लें,"

"दिन भर क्या कम बैठे थे!"

साँझ में आवाज़ें शान्त सुनाई पड़ रही थी। उनमें कठिनाई से काबू में हो रही बेसब्री की झलक थी।

"चलें?"

वासिच ने उपर की ओर देखा। वन शिखरों के उपर बुझता आकाश। एक भी तारा उनका मार्गदर्शन नहीं कर रहा था। उसने हाथ हिलाकर कहा :

"चलो!"

और सब घाटी की खड़ी दीवारों पर जल्दी-जल्दी, पैरों से बर्फ़ बिखेरते हुए चढ़ने लगे। सिर्फ़ एक वहाँ रह गया। हमेशा के लिये बर्फ़ से जकड़ी क़ब्र में रह गया, जिसे दिन में जीवित लोगों ने उसके लिये चाकुओं और छुरों से कुरेद-कुरेदकर खोदा था।

ऊपर दम लेकर वे गहराती नीली परछाइयों में वन को पार करने लगे, उन्होंने हथियार तान रखे थे। घने उगे युवा चीड़ वृक्ष अपनी सूई जैसी पत्तियों के ग्रेटकोट को खरोंच रहे थे, और लोगों के गुजर जाने के बाद देर तक उनकी टहनियाँ हिलती रहती थीं। उन पर जमी बर्फ़ ज़मीन पर झड़ रही थी।

वन के छोर पर वासिच ने सबको रोक दिया।

"निकीतेन्को! चेबोतार्योव!" उसने धीमे स्वर में आवाज़ दी।

लोगों के चेहरे अब साफ़ नहीं नज़र आ रहे थे। मोटर के तेल और कालिख से सने नमदे के बूटों और रूईभरी जैकेट में निकीतेन्को पास आया। रास्ते में खड़े सैनिक को कन्धे से धकेलकर और : 'हट जा, दोस्त!' कहकर चेबोतार्योव झूमता हुआ आया। उसका कद कुछ ठिगना था, पर था वह बाँका जवान, नीचे से ऊपर तक देखकर वह निर्भीकता के साथ आँखों में झाँका।

ये दोनों मोटर चला सकते थे, इसलिये वासिच रात की हड़बड़ीपूर्ण लड़ाई में उनकी जान को ख़तरे में नहीं डालना चाहता था। उसने उन दोनों को ध्यान से देखा। चेबोतार्योव के पास स्टेनगन थी।

"इसके साथ बदल लो!" वासिच ने कारबाइन के साथ खड़े जवान की ओर इशारा करके हुक्म दिया। "ग्रेनेट हैं?"

चेबोतार्योव ने अनिच्छा के साथ जेब से दो हैंड ग्रेनेट निकाले, अपनी स्टेनगन उसने और भी अनिच्छा से दी।

"कामरेड कैप्टन, क्या हम दूसरों से बेहतर हैं?" बाकी लोग के समक्ष अटपटा महसूस करते हुए उसने स्वाभीमान के साथ कहा।

"यहीं इन्तज़ार करो," वासिच ने कहा। "लड़ाई में मत फँसना। मोटरें छीन लेंगे तो बुला लेंगे।"

और वह बाकी लोगों को आगे ले गया। सड़क के पास, झाड़ियों में, ठिठुरे पर्यवक्षकों ने उनकी आगवानी की। उनमें से वरिष्ठ अपने ठण्ड से अकड़े होंठों को मुश्किल से हिलाते हुए फटी आवाज़ में रिपोर्ट दे रहा था :

"सब गाड़ियाँ उसी ओर जा रही हैं। घण्टे भर में," उसने हरे चमकते डायलवाली कलाई घड़ी पर नाखून मारकर कहा, "तीन गुजर चुकी हैं।"

जवान झुण्ड बनाकर सुन रहे थे, उनके चेहरों पर तनाव दिख रहा था। वासिच के पीछे खड़ा गोलुबेव बच्चों की तरह मुँह खोलकर साँस ले रहा था। अँधेरे में इश्चेन्को की छाती पर परतले का बकसुआ चमका।

"आख़िरीवाली ढकी हुई थी। तिरपाल के नीचे बैठे जर्मन अपना कोई गाना गा रहे थे। शायद मौसम का असर हो।"

और वह अपने मज़ाक़ पर मुस्करा दिया : खुश था कि झाड़ियों में उनका अकेला बैठना खत्म हो गया।

अब अँधेरा छा चुका था और सामने ताजे हिमपात के कारण सिर्फ़ मैदान चमक रहा था। जंगल के उपर लटके काले आकाश का एक सिरा मैदान के छोर पर टिका था। और उस ओर कुचली बर्फ़ से ढकी, मद्धिम चमकती सड़क दिखाई पड़ रही थी। वहाँ से बहती हवा पाले में पेट्रोल की हल्की-हल्की गन्ध ला रही थी। यह गन्ध इस समय आशंका उत्पन्न कर रही थी।

वासिच ने लोगों को दो दलों में बाँट दिया। एक दल को गालुबेव अपने साथ ले गया और दूसरे के साथ वह खुद सड़क के किनारे लेट गया।

वे निःशब्द, नीरवता को कान लगाकर सुनते हुए लेटे थे। भाप के साथ उड़ती साँस टोपियों पर पाले के रूप मे जमा हो रही थी। बर्जना को याद रखकर कोई भी सिगरेट पीने का साहस नहीं कर पा रहा था। इस कारण समय की गति और भी मन्द हो गयी। पीछे से मोर्चे की गरज सुनाई पड़ रही थी। रात को वह मानो पास आ गया था। तोपें दहाड़ रही थीं, वन के पीछे कहीं दूर चमकी बिजली की तरह क्षण भर के लिये विस्फोट कौंध रहे थे।

अचानक किसी को सुनाई पड़ा :

"आ रहे हैं!"

वे थोड़ा-सा उठकर अँधेरे में अन्धी आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। पर आगे की टाँगे फैलाये बर्फ़ पर बैठा कुत्ता शान्त था। और वे जितना ज़ोर लगाकर सुनने की कोशिश करते, कानों में बस खून का शोर ही बढ़ जाता, और कुछ समझना असम्भव हो जाता। वे फिर लेट गये। प्रतीक्षा की घड़ियाँ सभी को यातनामय लग रही थीं। वे रेंग रेंगकर दो-दो, तीन-तीन एकत्रित होने लगे। फुसफुसाहट के साथ इधर-उधर होती बातचीत के अंश सुनाई पड़ने लगे जो किसी भी क्षण बन्द होने को तत्पर थी। दो बार गोलुबेव का सन्देशवाहक अँधेरे में इस तरह झुककर दौड़ता हुआ आया मानो उस पर गोलियो की बौछार हो रही हो। वहाँ भी लोग बेसब्र थे।

अन्ततः उन्हें सुनाई पड़ा, हृदय में आकुलता भर आयी, कहीं भ्रम तो नहीं हुआ, इसके डर से कुछ समय तक वे शान्ति बनाये हुए थे। मैदान में उड़ती हवा के शोर

में कहीं दूर से, मच्छर की भनभनाहट जैसे महीन स्वर में क्रंदन करती मोटर की आवाज़ साफ़-साफ़ सुनाई पड़ रही थी।

"बिखर जा!" वासिच ने आदेश दिया।

पर लोग खुद ही दौड़कर अपनी-अपनी जगह पर जा रहे थे। कूँ-कूँ करता कुत्ता बेचैनीवश मचल रहा था।

"लेट जा!" उसे चिल्लाकर आदेश दिया गया।

वासिच के पास बर्फ़ पर आलथी-पालथी लगाकर बैठा गुप्तचर, जल्दी-जल्दी टेलीफोन के तार की मदद से तीन ग्रेनेटों का गुच्छा बाँध रहा था। दस्ताने उसने उतार दिये, जो उसके रूईभरे कोट की आस्तीनों पर तस्मों के बल लटके हुए थे।

गोलुबेव का सन्देशवाहक फिर दौड़ा-दौड़ा आया।

"कामरेड कैप्टन, लेफ्टिनेण्ट ने आपको कहलवाया है : हम उन्हें आप तक आने देंगे!..."

"आने दो," दाँतों से गाँठ को कसते हुए अस्फुट स्वर में गुप्तचर बुदबुदाया, और पट्टियों के बीच से ज़ोर लगाने के कारण मिची-मिची हुई उसकी इकलौती आँख की शीतल और गम्भीर चमक नज़र आयी।

अब कहीं दूर चढ़ाई पर चढ़ती कई मोटरों की बढ़ती गुंजार साफ़-साफ़ सुनाई पड़ रही थी। बर्फ़ से जमी ज़मीन जिस पर लोग लेटे हुए थे, उनके नीचे लोहे की तरह टंकार रही थी और अधिकाधिक कम्पन कर रही थी। और यह अप्रिय कम्पन पूरे शरीर, भीतरी अंगों तक फैल रहा था। कुत्ते को नियंत्रण में रखना मुश्किल हो गया था, उसके जबड़े भींच रखे थे और वह हृदयविदारक कूँ-कूँ कर रहा था, आँसुओं के साथ।

सड़क पर मोटरों की धुँधली आकृतियाँ नज़र आयीं और फिर निचाई में उतरकर अदृश्य हो गयीं। देर तक वे वहाँ गुँजार करती रहीं। कभी-कभी लगता कि वे कहीं देर जा रही हैं। फिर चढ़ाई पर आगेवाली 'ओपल-नज़र आयी–बर्फ़ को कुचलते मोटे टायरोंवाले चौड़े काले पहिये, शक्तिशाली रेडियटर, चौड़ा बम्पर–यह सब ऊपर चढ़कर, सड़क पर चलता हुआ तेज़ी से बड़ा होता जा रहा था। वासिच ज़मीन पर लेटा हुआ देख रहा था और उसे यह ट्रक भीमकाय लग रही थी। वह तेज़ी से पास आ रही थी। उसके द्वारा उड़ायी जा रही बर्फ़ की धूल से पीछे-पीछे आ रही दो अन्य ट्रकें केबिन तक पूरी ढकी हुई थीं।

आगेवाली ट्रक के काले शीशे मे सिगरेट का अंगारा दमका, जिसने केबिन को अन्दर से धुँधला सा आलोकित कर दिया। और वासिच को शीशे के पीछे बैठे जर्मन का चेहरा दिखाई पड़ा। वह बड़े विश्वास के साथ गाड़ी में बैठा था, वह रौब के साथ अन्य सैकड़ों सड़कों को देख चुका था।

रात को, इतनी दूरी से वासिच उसे नहीं देख सकता था। पर तीव्र घृणा के कारण उसे लगा कि शत्रु का चेहरा उसे साफ़-साफ़ नज़र आ रहा है।

गियर-बाक्स में किटकिटाहट हुई : गियर बदला जा रहा था। शीशे में सिगरेट एक बार फिर चमकी और हवा में लाल चाप बनाती हुई उड़कर बर्फ़ पर जा गिरी। इसी क्षण वासिच एक हाथ पर टिककर थोड़ा और अपनी आवाज़ से तीन मोटरों की गरज का प्रतिरोध करते हुए चिल्लाया :

"फ़ायर!"

उसने ट्रक के पिछले हिस्से का निशाना लगाकर ग्रेनेट फेंका और ज़मीन पर औंधा पड़ गया। न तो उसने, न पास ही में औंधे पड़े गुप्तचर ने देखा कि ट्रक के काले पेंदे के नीचे और उसके पीछे ज़मीन से आग के दो गुच्छे फूटे। विस्फोटों के धमाके, ब्रेकों का चीत्कार, टूटती लकड़ी की चरमराहट, चीख-पुकार... और स्टेनगन की बौछार ने इस सबको बींध दिया। टूटे शीशे की खनक हुई।

जैसे ही ग्रेनेट के टुकड़े सिर के ऊपर से सनसनाते हुए गुज़रे, वासिच उछलकर खड़ा हो गया। धमाके से क्षत-विक्षत ट्रक सड़क को रोके आड़ी खड़ी थी; उस पर से गोलियों की बौछार में ग्रेटकोट पहने काली आकृतियाँ कूद रही थीं। पर दूसरी ट्रक के पायदान पर बूट टिकाकर खुली केबिन में जर्मन सीधा खड़ा था और पेट पर स्टेनगन टिकाकर सड़क पर चमकती पथअन्वेषक गोलियों की बौछार कर रहा था। और ड्राइवर इस गोलीबारी की आंड़ में ट्रक को पीछे मोड़ने का प्रयास कर रहा था। उस पर गोलियाँ चलायी जा रही थीं।

"मोटर को नुक़सान न पहुँचे!" हाथ उठाकर वासिच चिल्लाया। उसके पैरों के बिल्कुल पास चमकती गोलियों की बौछार पड़ी। उसने पिस्तौल से गोली चलायी और जर्मन की ओर दौड़ पड़ा। और कई लोग भी गोलियाँ चलाते हुए उसके पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। जर्मन हाथ से गाड़ी के दरवाज़े को पकड़े खड़ा था और उसके साथ-साथ झूल रहा था। जब वासिच दौड़ता हुआ उसके पास पहुँचा वह सड़क पर चित्त ढह गया। गिरते समय हाथ से छूटी स्टेनगन बर्फ़ पर फिसलकर एक तरफ़ चली गयी। दूसरे पायदान पर पट्टी बँधे सिरवाला गुप्तचर उछलकर चढ़ गया, उसने पास से शीशे के पीछे बैठे ड्राइवर को गोली मार दी।

चारों ओर से गोलियाँ चल रही थीं—मोटरों के नीचे से, सड़क किनारे के गड्ढे से। सैनिक बूटों से ठक-ठक करते हुए ट्रकों में कुदकर वहाँ से जर्मनों पर गोलियाँ चला रहे थे। उन्हें मोर्चा बाँधने का समय नहीं मिला, वे अपने चौड़े ग्रेटकोट पहने मैदान की बर्फ़ में धँसते हुए गिरते-पड़ते दौड़ रहे थे, उनकी ओर से चमकती गोलियों के पुंज उड़ते आ रहे थे। पर सड़क पर लोग खुलकर एक ट्रक से दूसरे तक भाग-दौड़ कर रहे थे, मृतकों के हथियार जमा कर रहे थे, कई आवाज़ें एक-साथ निकीतेन्को को पुकार रही थीं जो न जाने कहाँ ग़ायब हो गया था। गोलियों चलने की आवाज़ें अभी भी सुनाई पड़ रही थी पर काम पूरा हो चुका था। इतनी जल्दी कि बर्फ़ के मैदान में सिगरेट का टोटा चिंगारियाँ बिखेरता हुआ अभी भी हवा से उड़ रहा था। जिस व्यक्ति

ने उसे फेंका था, वह पहले की तरह अभी भी केबिन में बैठा हुआ था। बायें हाथ में पिस्तौल थामे हुए वासिच दौड़ता हुआ उधर गया और झटके से उसने दरवाज़ा खोल दिया। जर्मन धम्म से उसके पाँवों पर गिर पड़ा। वह उस रौबीले आत्मविश्वासी शत्रु जैसा नहीं था जिसकी वासिच ने कल्पना की थी। यह जर्मन बूढ़ा खुमी की तरह सूखा, नाटा था। गिरते समय उसकी टोपी उड़ गयी और ठक के साथ उसका बिल्कुल गंजा सिर सड़क पर बजा। उसे अब बर्फ़ पर भी ठण्ड नहीं लग सकती थी, फिर भी उसकी तालाशी लेते समय वासिच को घिन-सी आ रही थी। उसने दस्तावेज ले लिये, उसका बस्ता उतार लिया : यह जर्मन कोई अफ़सर था। वासिच ने उठकर सड़क पर दौड़धूप करते लोगों को और उनके बीच लम्बे कद के गोलुबेव को देखा। वह चिल्लाया :

"सवार हो जाओ!.. गोलुबेव! तुम आगे जाओ..."

जब वासिच केबिन में चढ़ा, चेबोतार्योव स्टीयरिंग सँभाले हुए था। पायदान पर खड़े होकर खुले दरवाज़े को पकड़े हुए, बिल्कुल वैसे जैसे उससे पहले उसकी पिस्तौल से मरा जर्मन यहाँ खड़ा था, वासिच ने गोलुबेव को हाथ हिलाकर इशारा किया कि जितने में वे अपना ट्रक मोड़ रहे हैं वह आगे चला जाये। और तभी वासिच का ध्यान सड़क पर इधर-उधर दौड़ते कुत्ते की ओर गया। वह मोटरों और जंगल के बीच दौड़ रहा था मानो लोगों को जंगल में बुला रहा हो। कई स्वर उसे पुकारने लगे। वह खुशी के साथ भौंककर जंगल की ओर दौड़ पड़ा। पर यह देखकर कि कोई भी उसके पीछे नहीं आ रहा है वह रुक गया। क्या पता वह जर्मन मोटरों से डरता था, या इस स्थान से नहीं जाना चाहता था, जहाँ हो सकता है कहीं किसी भस्म गाँव की ठण्डी राख बर्फ़ के नीचे दबी हो, या वन अपनी शक्ति से उसे अपनी ओर खींच रहा था, वह दूरी पर भौंक रहा था। और तभी दग़ने का फटाका सुनाई पड़ा। वासिच ने केबिन की आड़ से देखा कि भभूका चमकते तारे की तरह आकाश में तिरछा उठकर जलने लगा। ऊपर से तेज़ रोशनी सड़क पर नीचे आ रही थी और वह सब कुछ उस पर था मानो उसकी ओर उगकर बड़ा हो रहा था।

"चले चलो!"

वासिच ने हाथ हिलाया। शवों से बचते हुए गोलुबेववाली ट्रक चल पड़ी। उसका बोर्ड पकड़कर पीछे छूटा जवान उछल-उछलकर दौड़ रहा था। उसे पकड़कर जल्दी-जल्दी ऊपर खींच लिया गया।

जैसे ही चेबोतार्योव धीरे-धीरे क्षत-विक्षत ट्रक से बचते हुए आगे चला, मैदान से जहाँ बचे-खुचे जर्मन लेटे हुए थे, गोलियों की चमकती बौछार हुई, वे ट्रक की बगल में और आगे चमकीं, चमकते पुंज की तरह केबिन के ऊपर से उड़ती हुई निकल गयीं। ट्रक में बैठा कोई चीखा। लोग झट से फ़र्श पर लेट गये। चेबोतार्योव दाँत भींचकर अपने को आगे सड़क की ओर देखने को बाध्य करता हुआ गाड़ी चला रहा था। बगल से केबिन का फूटा शीशा ही गोलियों से उसकी रक्षा कर सकता था। इंजन

अधिकाधिक ज़ोर से चिंघाड़ रहा था, तनाव के कारण ट्रक काँप रही थी, पर बायीं तरफ़ का पिछला पहिया सड़क से खिसककर भुरभुरी बर्फ़ में फँसता जा रहा था।

"चमक को निशाना बनाकर फ़ायर करो।" वासिच फटी आवाज़ में चिल्लाया। "ज़मीन से चिपका दो!"

उसने देखा नहीं, बस सुना ही कि अगली ट्रक से भी फायरिंग हो रही है।

"फ़ायर! फ़ायर! सिर नहीं उठाने दो!"

और उसकी चिल्लाहट से हौसला पाकर लोग ट्रक के बोर्ड के पीछे से मैदान पर गोलियाँ बरसा रहे थे जहाँ अँधेरे में छोटी-सी फड़कती लपट चमक रही थी...

किसी जीव की तरह सिहरती ट्रक धीरे-धीरे सड़क पर चढ़ रही थी। और जैसे ही पीछेवाले दोनों पहिये कड़ी सतह पर चढ़े उसी क्षण इंजन में धड़कती पूरी ऊर्जा ने उसे वेग प्रदान कर दिया, सफ़ेद फीते की तरह सड़क पायदान पर खड़े वासिच के बूटों तले तेज़ी से फिसलने लगी; चेहरे पर हवा का तेज़ झोंका पड़ा, टोपी गिरते-गिरते बची। और लोग चलती ट्रक में हिचकोले खाते पिछले हिस्से की ओर दौड़कर गोलियाँ चला रहे थे। वहाँ बुझते भभूके के प्रकाश में कई जर्मन स्टेनगनों से गोलियों की बौछार करते हुए सड़क पर चढ़ आये थे। पर वे और सड़क तथा उस पर खड़ी विस्फोट से क्षत-विक्षत ट्रक—सब कुछ तेज़ी से छोटा होता पीछे छूटता जा रहा था। केबिन के तीन छेदोंवाले शीशे में, जिस पर चारों ओर सफ़ेद दरारें बिखरी थीं, बर्फ़ीली सड़क हिचकोले खा रही थी। शीशे में गोलियों के छेद ऊपर-नीचे उछल-कूद रहे थे, वे ठीक से बाहर देखने नहीं दे रहे थे, उनमें से आती हवा ऐसी ही गूँज रही थी जैसे फूँक मारने पर बोतल की गर्दन। वासिच ने दरवाज़ा खोल दिया। चेहरे पर हवा का झोंका पड़ा। उसकी आँखें मिचमिचायीं। आगे सड़क पर फुदकती हुई जर्मन घोड़ा-गाड़ियाँ जा रही थीं, उनमें से हरेक में पेर्शेरान नस्ल के दो-दो घोड़े जुते हुए थे। ट्रकें तेज़ी से उनके पास पहुँच रही थीं।

टोपी को सँभालकर वासिच ट्रक के पिछले हिस्से में झाँका। फ़र्श पर हवा की ओर पीठ किये जवान काफ़ी देर के बाद पहली सिगरेट का कश ले रहे थे।

"ज़िन्दा हो?" वासिच ने चिल्लाकर पूछा।

"ज़िन्दा हैं!" कई स्वरों ने पुलकित होकर कहा।

लोगों की आँखों में और चेहरों पर लड़ाई का जोश अभी ठण्डा नहीं हुआ था।

"ढक लो!"

तेज़ सफ़र, नथुनों में ऐसी मार करती हवा कि साँस लेना दूभर था, पास आते ख़तरे की सिहरन... वासिच ने केबिन का दरवाज़ा बन्द कर दिया। शीशा चढ़ा लिया। हवा का आना रुक गया और कुछ क्षणों के लिये तेज़ गति की अनुभूति जाती रही। बस इंजन की घरघर और कानों के पर्दों पर दबाव ही महसूस हो रहा था।

बगल के शीशे में घूमते पहियों वाले छकड़े, दौड़ते भारी-भरकम झबरैले घोड़े, आगे की सीटों से मुड़कर देखते जर्मनों के चेहरे झिलमिला रहे थे। यह सब दिखाई पड़ता और ओझल हो जाता। शीशे के पीछे से वासिच की नज़र क्षण भर के लिये जर्मन गाड़ीवान की नज़र से मिली और गाड़ीवान का चेहरा बदल गया। अचानक वह ट्रक की ओर इशारा करके कुछ चिल्लाया।

'देख लिया!' यह विचार वासिच के दिमाग में बिजली की तरह कौंध गया। उसने कनखियों से चेबोतार्योव की ओर देखा। वह स्टीयरिंग पर लगभग लेटा हुआ बूट से एक्सेलेरेटर को पूरे ज़ोर से दबा रहा था।

"जर्मन ने देख लिया," वासिच बोला।

चेबोतार्योव की सँकरी आँखें उत्तेजना से चमकीं।

"देख लिया तो क्या हुआ। पीछा करके तो देखें!.."

ट्रक तेज़ी से सड़क को निगलती जा रही थी। गोलियों के छेदों में से घुसती हवा गुर्रा रही थी। वासिच सरककर खिड़की से सिर निकालकर अँधेरे में झाँकने लगा। उल्लासपूर्ण शीतलता मन पर छायी हुई थी। दायीं तरफ़ हरे-भरे वन कुंज के पेड़ झिलमिला रहे थे। खुले बोनटवाली मोटर नज़र आयी और पीछे छूट गयी, दो जर्मन उसके इंजन पर झुके हुए थे। यहाँ टैंकों के पट्टों से सड़क काफ़ी खुदी हुई थी। वासिच ध्यान से अँधेरे में कुछ देखने का प्रयास कर रहा था, पर शीशा चौंध रहा था। उसने उसे नीचे कर दिया। चेहरे पर हवा के थपेड़े पड़ने लगे, उसे वन कुंज में टैंकों के काले, मनहूस धड़ नज़र आये। उनके बीच जर्मन आ-जा रहे थे। एक जर्मन बाल्टी उठाये उनके पहियों के ऐन सामने से सड़क पार करता दौड़ा, उसने घूँसा दिखाकर मज़ाक़ में धमकी दी।

"रफ़्तार धीमी कर!" वासिच ने आदेश दिया। और चेबोतार्योव की असमंजसपूर्ण चकित आँखों को देखकर उसने समझाया : "मोर्चे की सड़क है। जर्मन को उधर जाने की क्या जल्दी पड़ी है, वह ताबड़तोड़ रफ़्तार से उधर नहीं जायेगा।"

पास ही से तोप की गरज सुनाई पड़ी, अँधेरे में लम्बी बिजलियाँ कौंधीं। 'हल्की बैटरी है' वासिच ने निश्चित किया, और मन ही मन उसने वह स्थान याद कर लिया जहाँ वह तैनात है, उसी तरह जिस तरह उसने वन कुंज में टैंकों को गिना था। 'बस सड़क पर खाई न खुदी हो। तब निकल जायेंगे...' उसे विश्वास था कि सड़क खोदने का वक़्त नहीं मिला होगा : मोर्चा स्थिर नहीं हुआ था, मार्च करते-करते लड़ाई हो रही थी। और एक बार फिर सोचा : 'तब निकल जायेंगे।'

वे अब फिर पूरी रफ़्तार से जा रहे थे पर उसे महसूस नहीं कर रहे थे क्योंकि अपने विचारों में वे इससे भी तीव्र गति से उड़ रहे थे। पहिये हवा की गति से सड़क को किलोमीटरों में नापते जा रहे थे, पर मोर्चे की पाँत अभी भी नज़र नहीं आ रही थी। अचानक सामने से लाल बत्ती से रुकने का संकेत मिला। यह यातायात नियामक उनसे रुकने की माँग कर रहा था। चेबोतार्योव ने तेज़ी से वासिच की ओर नज़र डाली।

वासिच ने सिर हिला दिया। वह महसूस कर रहा था कि अब क्या होगा। वे नहीं रुकेंगे। टकरायेंगे और वे आगे बढ़ते चले जायेंगे। उसे इस टक्कर की प्रतीक्षा थी। पर तभी चेतना ने उसे झकझोरा।

"ब्रेक लगा!"

आगे सड़क पर ट्रैफिक जाम हो सकता है।

"ब्रेक लगा!" वह चिल्लाया। वह शीशे से टकराया और फिर पीछे सीट पर जा गिरा। उनके पीछे दौड़ती आ रही दूसरी ट्रक के ब्रेकों की चीत्कारी। और फिर—सन्नाटा। वे खड़े थे। वासिच को अपने गालों और कानों में अभी भी हवा के थपेड़े महसूस हो रहे थे। उसकी साँस फूल रहा था। ट्रक की ओर जर्मन आ रहा था। वासिच ने दरवाज़ा खोला। और फ़ौरन उसे मोर्चे की आवाज़ें सुनाई पड़ीं। पास ही से मशीनगन की कर्कश ठकठक, स्टेनगनों के चलने की तेज़ आवाज़ें और गोले का हवा को कँपानेवाला धमाका। मोर्चा पास ही में था। वासिच कूदकर ज़मीन पर उतर गया। उसे ट्रक के पास आता जर्मन दिखाई पड़ा,—यह अफ़सर था, उसे सड़क के किनारे खड़ी साइड कार वाली मोटरसाइकिल नज़र आयी; इस स्थान से जहाँ अनेकों टायरों के निशानों ने मैदान की ओर रास्ता बना रखा था, और खम्भे पर ठुके तीर दिशा दर्शा रहे थे। पर प्रमुख चीज़ जो उसने देखी यह थी कि आगे रास्ता साफ़ है।

उधर जर्मन पास आता जा रहा था, चमड़े के हुक के बल उसके बटन से लटकी टार्च झूल रही थी। वह ट्रक की ओर जा रहा था, जिसके कुचली बर्फ़ से ढके पायदान पर एक जर्मन का खून जमा था। और केबिन में भी बूटों से पिघली बर्फ़ के पानी में घुला हुआ खून था। और यह जर्मन इधर आ रहा था। वह वासिच की ओर देख रहा था। उसके लिये उसे न देखना असम्भव था। पर वासिच जर्मन ट्रक के पास शान्त खड़ा था, और जर्मन इतना आश्वस्त था कि उसकी अभ्यस्त चेतना ने उस सब पर पर्दा डाल दिया जो उसकी आँखें देख रही थीं।

वासिच ने उसे पास आने दिया, उसकी ओर क़दम बढ़ाया और सीधे छाती में गोली मार दी। पर उसने नहीं देखा कि ट्रक के पीछे से बगल में होता हुआ एक स्टेनगनधारी भी उसकी ओर आ रहा था। उस क्षण जब जर्मन पीछे हटता हुआ गिरने लगा वासिच को तेज़ धक्का लगा। काँपकर वह मुड़ा, उसने अपने सामने घुटने मोड़कर खड़े जर्मन सैनिक और उसके हाथों में आग उगलती स्टेनगन देखी। यह मौत थी, वह फौरन समझ गया, पर न जाने क्यों कुछ नहीं कर सका, न चिल्ला सका, न उछलकर बचाव कर सका, बस खड़े-खड़े जिस्म में घुसती आग की इस बौछार को एकटक देखता रहा।

पीछे से एक विशाल काली आकृति जर्मन पर कूदी, और सब कुछ लुढ़क गया।

फिर वासिच ने महसूस किया कि उसकी बगल में हाथ डालकर उसे कहीं ऊपर खींचा जा रहा है। चेतना कभी लौटती तो कभी टूट जाती, और जो कुछ वह देख रहा था एक दूसरे से जुड़ा नहीं था। उसने केबिन की छत देखी, आग की लाल चमक में

उसे अपने ऊपर झुका गोलुबेव का चेहरा दिखाई पड़ा। गोलुबेव से कोई आवश्यक बात कहनी थी। कोई बहुत आवश्यक बात। वासिच को दर्द के साथ हिचकोला लगा और फिर तो पूरे समय हिचकोले लगते रहे, और दर्द के कारण वह मन में मँडराते विचारों को खो देता।

सामने से हवा का झोंका आया। मृत्युपूर्व उसने पसीने से नहाये चेहरे पर इस ठण्डी हवा को महसूस किया, और उसका मन हल्का हो गया।

अध्याय 8

बर्फ़ पिघल रही थी। खिड़की से दिखाई पड़ते गाँव के छोटे-से चौक में पहियों से गुँधा कीचड़ और बर्फ़ थी। पगहे के पास, धूप में चमकता ललौंहा बछेड़ा अपनी घनी पूँछ उठाये सहसे-सहमे नैसर्गिक क्रिया कर रहा था; गर्म लीद से भाप उड़ रही थी। बछेड़ा अचानक बिदककर ओझल हो गया : किसी चिन्ता में मग्न बागराद्ज़े अपने बूटों से पिघली बर्फ़ के छींटें उछालता तेज़ी से चौक से गुजरा, उसके हाथों में टहनियों का गट्ठर था। इश्चेन्को को उससे तीव्र ईर्ष्या हुई। वह कमरे में बीचोंबीच मेज़ के पास बैठा था। वसन्त की गर्म धूप खिड़की के धूल धूसरित शीशों से छनकर अन्दर आ रही थी, पानी से भरी काँच की सुराही में सूरज प्रतिबिम्बित हो रहा था। सिगरेट के धुएँ से भरे कमरे में धूप से काफ़ी गर्मी थी।

जैसे ही इश्चेन्को कमरे में घुसा उसे बैठने को कहा गया। और तीन लोग—रेजीमेण्ट कमाण्डर कर्नल स्तेत्सेन्को, स्मेर्श* का कैप्टर येल्यूतिन और राजनीतिक अधिकारी मेज़र कोराबलीनोव, जो अब तक गम्भीर मुद्रा में मेज़ के पास बैठे थे, मृत बटालियन को सम्मान देते हुए उठ खड़े हुए, उसके सामने, इस लड़ाई से जीवित लौटे व्यक्ति के सामने खड़े हो गये क्योंकि उस लड़ाई की, जिसमें उन्होंने खुद भाग लिया था, उस लड़ाई से कोई तुलना नहीं की जा सकती थी जिससे वह मुट्ठी भर लोगों के साथ लौटा था।

पर इश्चेन्को ने यह सब महसूस नहीं किया। वह पूछताछ के लिये यहाँ आया था, उसे इस पूछताछ का डर था, और जब उसे बैठने के लिये कहा गया तो वह अभियुक्त की तरह बैठ गया। उनका अस्पष्ट व्यवहार उसे आशंकित कर रहा था। उनमें उसे विश्वास नहीं रहा था, वह तनावग्रस्त बैठा था, उनके प्रश्नों का वह सटीक उत्तर दे रहा था : न अधिक, न कम, ठीक उतना जितना उससे पूछा जा रहा था।

अकस्मात इश्चेन्को के प्रति व्यवहार बदल गया—उसने फौरन यह महसूस किया। रेजिमेण्ट कमाण्डर ने अपनी काली मिची-मिची आँखों से उसकी ओर अजीब ढंग से देखा और खिड़की की ओर मुँह मोड़ लिया। तब से वह खिड़की के पास खड़ा धूम्रपान कर रहा

* द्वितीय विश्वयुद्ध के समय सोवियत सेना में जासूसों से संघर्ष का विशेष विभाग जिसका नाम रूसी भाषा में 'स्मेर्त श्पीओनाम' यानी 'जासूसों को मौत' से बना था।

था : इश्चेन्को को उसकी तनी पीठ, सीधी गदरायी गर्दन, घर की नीची छत को लगभग छूती गंजी चाँद दिखाई पड़ रही थी। हर बार प्रश्न का उत्तर देते समय इश्चेन्को रेजिमेण्ट कमाण्डर पर नज़र डालकर सहजवृतिवश उसमें अपने लिये हिमायत की खोज करता। पर उसे सिर्फ़ साँवला गाल, तम्बाकू के धुएँ से मिची आँख और उसकी काली मूँछ की नोक ही दिखाई देती। राजनीतिक अधिकारी व्यग्रता से कमरे में टहलनेलगता या अचानक स्प्रिंगदार पलंग पर बैठ जाता, घुटनों के बीच हाथ दबाता और झुककर झूलने लगता। वह सबसे युवा था, हाल ही में उसकी इस पद पर नियुक्ति हुई थी और इश्चेन्को उससे नहीं डरता था।

येल्यूतिन सुविचारित क्रम में प्रश्न पूछ रहा था। अपने चौड़े कन्धों को बाँहों में भरकर वह अलमारी के कोने से अपनी पीठ रगड़-रगड़कर खुजा रहा था, पर बड़े गंजे माथे के नीचे से सर्द आँखें एकटक देख रही थीं। हर बार जब उनसे नज़र मिलती इश्चेन्को का दिल धड़कना भूल जाता और उसे अपने घुटनों में अप्रिय दुर्बलता का आभास होता।

उसे वह ज़माना याद था जब येल्यूतिन हवाबाज की वर्दी में, क्रोम चमड़े के अन्दर से समूर की लाइनिंगवाले ऊँचे बूटों में घूमता था : उनकी रेजीमेण्ट में वह वायुसेना की टुकड़ी से स्थानान्तरित होकर आया था। अब येल्यूतिन थल सेना के बूट पहने था और उसके कन्धों पर आर्टिलरी के फीते थे।

"हाँ, तो तीसरी बैटरी जंगल के पास पहुँच रही थी?" येल्यूतिन ने पूछा।

"पहली," सब्र के साथ इश्चेन्को ने ठीक किया।

येल्यूतिन हर बार बैटरियों के नम्बर और स्थिति को गड़बड़ कर देता। पर इश्चेन्को को लग रहा था कि वह संयोग से यह नहीं कर रहा, और पूरा ज़ोर लगाकर वह उसके विचारप्रवाह को पकड़ने, उसके अगले प्रश्न का पहले से ही अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहा था।

"हाँ-हाँ, पहली! टैंक तब दिखाई दे रहे थे? गोलाबारी की जा सकती थी टैंकों पर?"

गाँव के ऊपर से अपने इंजनों की गरज से ज़मीन को दबाते बम-वर्षकों की तरंग जा रही थी; घर की खिड़कियों के काँच गूँज रहे थे। ड्योढ़ी और दहलीज पर अर्दलियों के बूटों की ठक-ठक सुनाई पड़ रही थी : वे देखने के लिये दौड़ पड़े थे। येल्यूतिन ने मुस्कराते हुए खिड़की की ओर इशारा करके कोराबलीनोव को आँख मारी : देखो ये हैं मेरे अपने, खूनी रिश्ते के। और हालाँकि इश्चेन्को समझता था कि यह सद्भावनापूर्ण मुस्कान उसके लिये नहीं है, पर वह उनके बीच बराबरी का दर्जा पाना चाहता था कि उसके होंठ स्वतःहीन भाव के साथ जवाबी मुस्कान में फैल गये। उसने इस बात का फायदा उठाते हुए कि कोई उसकी ओर नहीं देख रहा है, तुरन्त मुस्कान को नियंत्रित कर लिया और जल्दी से चेहरे का पसीना पोंछ डाला।

"मैं कह रहा हूँ, टैंकों पर तब गोलाबारी कर सकते थे?" येल्यूतिन ने प्रश्न दोहराया, जब विमानों का शोर दूर चला गया और बातचीत करना फिर से सम्भव हो गया।

"तोपें मार्च की हालत में थीं... फायरिंग के लिये तैयार करना था... पोजीशन लेनी थी. .."

अगर इस लड़ाई के बारे में, जिसमें लगभग निहत्थे लोगों ने छः टैंकों को जला डाला, आखिरी दम तक लड़े, लड़ते-लड़ते मरे पर जर्मनों को आगे नहीं बढ़ने दे रहे थे, अगर इस लड़ाई के बारे में उशाकोव बताता, जिसे शर्म करने का कोई कारण नहीं था, वह दर्द के साथ बताता, पर उसके लहजे में गर्व की अनुभूति होती। इश्चेन्को सफाई दे रहा था। वह सिर्फ़ अपनी सफाई दे सकता था, पर वह तो बटालियन के बारे में बता रहा था और लगता था कि पूरे बटालियन की कार्यवाही में—उनकी भी, जो ज़िन्दा हैं और उनकी भी, जो लड़ाई में मारे गये—कुछ शर्मनाक बात है जिसे वह छिपाने का प्रयास कर रहा था।

उधर खिड़की के बाहर, गोलियों से छलनी दो जर्मन ट्रकें खड़ी थीं, और उनमें से एक में बरसाती पर वासिच चिर-निद्रा में सोया हुआ था।

"हम जंगल के पास पहुँच जाना चाहते थे। ताकि पीछे से बचाव रहे। और वहाँ पोजीशन लेते। नहीं, तो टैंक पीछे से आ सकते थे..."

"पोजीशन लेते...", "मार्च की हालत में, फायरिंग की स्थिति में..." येल्यूतिन ने उसकी बात काट दी। "बराबरवाली ब्रिगेड में, जब जापोरोझये पर चढ़ाई कर रहे थे... उनके पास भी तुम्हारे जैसी—एक सौ बावन एम. एम. तोपें... बैटरी कमाण्डर... क्या नाम है उसका?" राजनीतिक अधिकारी की ओर हाथ करके बेसब्री से चुटकियाँ बजाता हुआ वह याद दिलाने का अनुरोध कर रहा था। "वही, जो दुश्मन अधिकृत क्षेत्र में भी रह चुका था।..."

"ख़ारसून?"

"हाँ, ख़ारसून! वह भी जैसा कि तुम कह रहे हो, मार्च की हालत में बैटरी को ले जा रहा था, देखता है—टैंक! वह उसे किसी फायरिंग पोजीशन-वोजीशन में नहीं लाया, उसके पास इतना वक़्त नहीं बचा था। मोड़ा, बूम! बूम! आठ गोले—दो टैंक जलने लगे! तो सँभालो पदक!"

आर्टिलरीवालों की दृष्टि से येल्यूतिन असम्भव बात कह रहा था। जब तोप मार्च की हालत में होती है तो विशेष प्रणाली की मदद से उसकी नाल पीछे खिंची होती है। इस हालत में उससे फ़ायर करना तो क्या उसमें गोला भरना तक असम्भव होता है। तोपखाने का कच्चे से कच्चा जवान तक यह बात जानता है।

येल्यूतिन को किसी ने इस घटना के बारे में कभी कुछ बताया होगा, अब वह पूरे विश्वास के साथ ऐसी बातें कर रहा है जिन्हें कोई भी आर्टिलरीवाला चुपचाप सुन तक नहीं सकता।

पहले तो इश्चेन्को का मन उसे यह समझाने को हुआ कि ऐसा नहीं हो सकता। पर वह वक़्त पर रुक गया। वह समझ गया कि येल्यूतिन उसे माफ़ नहीं करेगा, शर्म की बात जो है। और उसे डर हुआ कहीं वह उससे चिढ़ न जाये। इश्चेन्को ने राजनीतिक अधिकारी, रेजीमेण्ट कमाण्डर की ओर असहाय दृष्टि डाली। न जाने क्यों उनमें से किसी ने भी येल्यूतिन की गलती को ठीक नहीं किया, मानो उन्होंने सुना ही न हो। स्तेत्सेन्को उसी तरह खिड़की के पास खड़ा था। मुँह से पाइप निकालकर उसने खिड़की के दासे पर ठोककर राख झाड़ी, तम्बाकू भरा और भृकुटी ताने उसे फिर सुलगा लिया।

"ठीक। एक सवाल तो बित्ता भर साफ़ हो गया लगता है," येल्यूतिन ने सन्तोष के साथ निष्कर्ष निकाला। और इस 'बित्ता भर' से, सबके मौन से इश्चेन्को डर गया। येल्यूतिन मेज़ के पास आया, उसने कोई क़ागज़ उलटे-पलटे, और अलमारी के पास लौटकर फिर उसने अपनी बाँहों में कन्धों को भर लिया। दूर से बमवर्षा की गर्जन सुनाई पड़ी। मकान काँपने लगा, सुराही में भरे पानी की सतह पर तरंगें फैलने लगीं।

यह मोर्चा तोड़नेवाले जर्मन आर्मी ग्रुप का सफाया किया जा रहा था। चौबीस घण्टे तक वहाँ पहुँचती तोपखाना टुकड़ियाँ टैंकों से लड़ती रहीं–मार्च से सीधे युद्ध स्थल में कूद जातीं और उन्होंने टैंकों का रास्ता रोक दिया। आज सुबह से मौसम साफ़ हो गया और तेज़ चमकती वसन्ती धूप में वायुसेना काम पूरा कर रही थी। एक के बाद एक बमवर्षकों की लहर उधर जाती और ऊपर से अपना बोझ गिरा देती।

स्तेत्सेन्को हाथ में पाइप लिये खिड़की से पलटा।

अब, जब कार्यवाही समाप्त हो रही थी और उसका अर्थ स्पष्ट था, उसे बटालियन के भाग्य के बारे में वह बात मालूम थी जो इश्चेन्को नहीं जान सकता था। रात को जब रेडियो सन्देश पकड़ा गया था और जर्मनों के टैंक प्रहार की दिशा का पता चला तो उसे स्ताराया और नोवाया तारासोवका के इलाके में फौरन अपनी रेजीमेण्ट की तीसरी बटालियन को भेजने, का आदेश मिला जो मोर्चे में दरार के स्थान के सबसे निकट थी। हालाँकि तीन तोपों से टैंकों की इतनी बड़ी बाढ़ को रोकना असम्भव था, फिर भी सैनिक दृष्टि से, स्तेत्सेन्को को मिला आदेश बिल्कुल सही था। जर्मनों को कुछ समय तक के लिये ही सही, पर रोकना, कुछ वक़्त पाना ज़रूरी था जितने में तोपखाना और टैंक पहुँचेंगे, उन्हीं शक्तियों से रोकना था जो आसपास उपलब्ध थीं अन्यथा दरार चौड़ी हो जाती तथा तमाम ज़िन्दगियों की बलि देनी पड़ती।

कोर कमाण्डर के लिये वह टुकड़ी, जिसे उसने फौरन लड़ाई में भेजने का आदेश दिया था, 1318वीं आर्टिलरी रेजीमेण्ट की तीसरी बटालियन मात्र थी। पर स्तेत्सेन्को के लिये यह उसकी अपनी रेजिमेण्ट की बटालियन थी। इन लोगों के साथ उसने युद्ध की राहें तय की थीं और उनमें से बहुतों से वह प्यार करता था। और वह समझता था कि उन्हें कैसे युद्ध मोर्चे पर भेज रहा है। पर युद्ध तो युद्ध ही है, और वे भी उसी की तरह सैनिक हैं। और अचानक अप्रत्याशित बात हो गयी : जर्मनों ने टैंक प्रहार की दिशा बदल दी। सैनिक दृष्टि से इसको भी समझा और समझाया जा सकता था : लड़ाई में आकस्मिकता, पहल–इनके लिये क्या बलिदान नहीं किया जाता। पर वहाँ उसके लोग थे, जो पोजीशनें नहीं बना पाये थे, तोपों को खन्दकों में न उतार पाये थे। रात को रास्ते में ही जर्मन टैंकों से उनकी मुठभेड़ हो गयी... रेजीमेण्ट कमाण्डर पूरा आपरेशन जानता था। पर वह, जो कुछ बटालियन में हुआ, इश्चेन्को ने अपनी आँखों से देखा था, और इसी के बारे में वह उससे पूछ रहा था। वह अब कुछ नहीं बदल सकता था, पर वह जानना चाहता था कि बटालियन किस प्रकार लड़ी, उशाकोव कैसे मारा गया। कीर्त्ति तो अमर होती है। कायर का कलंक तो मौत भी नहीं धो

पाती। और इस बात में निरपेक्ष नहीं रहा जा सकता कि लोग तुम्हारा नाम किस तरह याद करेंगे, वे लोग, जिनके लिये तुम जिये और मरे। टैंकों को रोकना उनके बस की बात नहीं थी, पर वह, जो सम्मान के साथ इस कठिन लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुआ, वह मौत के बाद अपकीर्त्ति को नहीं जानेगा।

"उशाकोव कैसे मारा गया?"

इश्चेन्को कहना चाहता था कि वह खुद उस समय उसके साथ नहीं था, दूसरों की बातों से ही जानता है, पर उसे अगले सवाल का ख़्याल आया जो येल्यूतिन उससे अभी पूछेगा : "और आप कहाँ थे" इसलिये नज़रें झुकाकर उसने जवाब दिया :

"उशाकोव वीरों की मौत मारा गया।"

उशाकोव स्तेत्सेन्को का चहेता था। इश्चेन्को यह जानता था। उसे याद था कि पिछले साल की गर्मियों में उनकी रेजीमेण्ट को नयी भरती के लिये पीछे ले जाया गया था और जंगल में उन्होंने रेजीमेण्ट की वर्षगाँठ मनायी थी। उशाकोव ने, जो पी बहुत रहा था पर उसे नशा नहीं चढ़ा था, शोरगुल के बीच अपने लिये वोदका का पूरा गिलास भर लिया और चौड़ी छाती पर चार पदक चमकाते, स्टील के दाँत चमकाते शीतदंश से लाल हाथ में उसे ऊपर उठा लिया :

"बाप! तेरे नाम पर यह जाम है!"

स्तेत्सेन्को उसके पास आया। उन्होंने जाम टकराये, और खाली कर दिये : स्तेत्सेन्को के बाल झड़ने लग थे पर वह अभी भी रिसाले के जवानों की तरह सुडौल और चुस्त था, उशाकोव नाटा, बेढब, गठे बदनवाला था। हथेली से मूँछों को सहलाकर स्तेत्सेन्को ने उशाकोव के होंठ चूमे। उसकी आँखें लाल व नम थीं। बहुत से अन्य अफ़सरों की भी आँखें आँसुओं से नम हो गयी थीं। इश्चेन्को की आँखों में भी आँसू छलक आये थे, उनके बीच से उसे दुनिया सुन्दर लग रही थी, उसे बस उशाकोव से ईर्ष्या हो रही थी।

"तुमने देखा कि वह कैसे मारा गया?" स्तेत्सेन्को ने उसकी ओर भारी नज़र से देखकर पूछा। इश्चेन्को ने उत्तर दिया :

"देखा था..."

पर उसके स्वर में कुछ ऐसा भाव था कि रेजीमेण्ट कमाण्डर ने पाइप से घना धुआँ छोड़कर खिड़की की ओर मुँह मोड़ लिया।

अब फिर येल्यूतिल सवाल पूछ रहा था। 'किस प्रकार जंगल में पीछे हटे? कौन सबसे आख़िर में हटा था? ठीक... ठीक...' और जैसे-जैसे इश्चेन्को जवाब देता जा रहा था, येल्यूतिन के मन में अस्पष्ट सा संदेह जड़ पकड़ता जा रहा था।

"जंगल में और लोग हो सकते थे? या सब आ गये थे?"

"हो सकते थे," इश्चेन्को ने हताश स्वर में कहा। उसने अचानक महसूस किया कि लड़ाई यहाँ से भिन्न नज़र आती है। येल्यूतिन को कैसे समझाये, जब वह इस लड़ाई में नहीं था?

पर येल्यूतिन कड़े प्रश्न पूछ रहा था :

"आप अफ़सर हैं। क्या आपको तब तक पीछे हटने का अधिकार है, जब तक सब लोग न हट जायें? लोगों को अकेला छोड़ने का? कप्तान कब जहाज से हटता है?"

"पर जंगल में वासिच ने खुद कमान सँभाल ली थी," इश्चेन्को ने कहा। "लोग उसका आदेश मान रहे थे।"

उसे इस क्षण यह याद नहीं रहा कि वासिच जब तक आख़िरी सम्भावना बची थी तब तक नहीं जाना चाहता था, कि वही, इश्चेन्को उसे जल्दी करने को कह रहा था। उसे अब बस अपने पर तरस आ रहा था। उशाकोव मारा गया। वासिच मारा गया। और सब उसके सिर मढ़ना चाहते हैं। क्यों वह अब सबके बदले जवाब दे?

कोराबलीनोव मेज़ के पास आया। ठीक ही तो था, वह राजनीतिक अधिकारी है, दूसरे राजनीतिक अधिकारी का पक्ष लेना चाहता है। इश्चेन्को की हिमायत कोई नहीं करेगा।

कोरेबलीनोव ने गिलास में पानी भरा, गटगट करके तीन घूँटों में उसे ख़ाली कर दिया, गिलास को रखकर फौरन दूर चला गया, मानो इश्चेन्को के पास खड़े होने में उसे घिन आ रही हो। मोटे शीशे के गिलास पर सूरज की किरण में पानी की एक बूँद चमक रही थी। इश्चेन्को को प्यास लग रही थी, सूखे मुँह में सूखी जीभ मुश्किल से हिल रही थी। पर वह अपने लिये पानी डालते हुए डर रहा था, कहीं यह न देख लें कि उसके हाथ काँप रहे हैं। वह उन्हें मेज़ के नीचे अपने घुटनों पर टिकाये हुए था, और पसीने से नम हथेलियों से घुटनों पर गर्माहट सी लग रही थी।

स्तेत्सेन्को वैसे ही खिड़की के पास धूम्रपान कर रहा था और मुड़कर नहीं देख रहा था। कोराबलीनोव भी कोने में जितनी दूर हो सकता था हट गया। कोई उसके साथ जिम्मेदारी को नहीं बाँटना चाहता। सब उस पर डाल रहे हैं!

अचानक इश्चेन्को बोलने लगा जिसके बारे में वह एक मिनट पहले सोच तक नहीं रहा था। अब वह कह रहा था कि अगर बटालियन को जंगल के किनारे-किनारे ले जाया गया होता, तो शायद, वे मुड़कर टैंकों पर फायरिंग शुरू कर सकते थे (इस बारे में कि जंगल के पास गहरी खाई थी और ट्रैक्टर वहाँ नहीं जा सकते थे वह इस समय भूल गया था)। वह कह रहा था कि टोही दल ने, जिसके साथ वासिच गया था, अन्तिम क्षण में उन्हें चेतावनी दी थी, जब देर हो चुकी थी। वह किसी के साथ दगा करने की नहीं सोच रहा था, वह तो बस सब की ज़िम्मेदारी अपने कन्धों पर नहीं लेना चाहता था।

येल्यूतिन सजीव हो उठा।

"ठीक... ठीक...", वह रुचि लेते हुए बोल रहा था, मानो अन्ततः वह सच की गहराई तक पहुँच गया हो।

जल्दी-जल्दी और शब्द निगलते हुए इश्चेन्को वह नहीं बता रहा था जो हुआ था, वह भी नहीं जिसके बारे में इस समय सोच रहा था, बल्कि वह बातें कह रहा था जो उसके अनुमान के अनुसार येल्यूतिन उसके मुँह से सुनने की अपेक्षा कर रहा था। बस एक ही

अर्थ अधिकाधिक साफ़ निकल रहा था : अगर उससे, इश्चेन्को से पहले पूछा गया होता, उसकी सलाह माँगी गयी होती तो वह सब न हुआ होता।

"पर तुम, आख़िर तुम कहाँ थे?" येल्युतिन ने उसकी बात काट दी।

"मैं लड़ाई में था। मैं पूरे समय लड़ाई में था!" उसने सूखे गले से कहा। और इस डर से कि कहीं उसकी बातों पर सन्देह न करें, वह गोलियों और गोलों के टुकड़ों से कटे अपने ग्रेटकोट को दिखाने लगा। "मेरे बराबर खड़ा सन्देशवाहक टैंक से हुई गोलियों की बौछार से मारा गया।" इस क्षण उसे स्वयं विश्वास हो रहा था कि वास्तव में ऐसा ही हुआ था। "देखें! यह देखें!"

और वह फिर छेदों में उँगली डालकर दिखाने लगा। वह अपने घाव नहीं, सिर्फ़ ग्रेटकोट में छेद दिखा रहा था।

स्तेत्सेन्को खिड़की की ओर से मुड़ा। उसका साँवला चेहरा तमतमाकर कत्थई हो गया था।

"जाइये!"

और उसके स्वर में, उसकी ओर देखती आँखों में इतनी घृणा भरी थी कि इश्चेन्को टोपी उठाकर जल्दी-जल्दी बाहर निकल गया।

कारिडोर में दरवाज़े के पास से कोई उछलकर हटा, किसी ने ड्योढ़ी पर उसे रास्ता दिया।

इश्चेन्को पैरों तले देखे बिना दहलीज से उतरकर पिघलती बर्फ़ को कुचलता हुआ चल पड़ा। 'मुक़दमा चलायेंगे' उसके मन में विचार आया, पर जड़-सा : सिर दर्द से फटा जा रहा था। उसे ध्यान ही नहीं रहा कि कैसे वह ट्रकों के पास पहुँच गया। उनमें से एक में जिसका तख़्ता खुला हुआ था बरसाती पर वासिच का शव रखा था (शायद, लोग दर्शन करने आ रहे थे)। उसके, मृतक के समक्ष इश्चेन्को की चेतना में अपने दोष का अस्पष्ट सा आभास हुआ। वह अब वासिच से न घृणा महसूस कर रहा था, न ही मन में उसके प्रति कोई दुर्भाव था। बस यही अखर रहा था कि उसने वहाँ उसके बारे में न जाने क्या-क्या कह डाला। पर उसने तभी अपनी आत्मा को सान्त्वना दी वासिच तो मर चुका है, अब उसे कुछ नहीं चाहिए, किसी चीज़ की उसे डर नहीं। मुर्दों को क्या लाज-शर्म? जो भी हो उसके घरवालों को साधारण सूचना भेजी जायेगी : 'वीरगति को प्राप्त हुआ...' पर वह, इश्चेन्को तो ज़िन्दा है... 'मुझ पर क्यों मुक़दमा चलाया जाये? उनके पास क्या प्रमाण हैं?' पर जब उसे याद आया कि रेजीमेण्ट कमाण्डर ने उसकी ओर कैसी नज़र से देखा था और कैसे उसने कहा था 'जाइये!' तो डर के मारे उसका दिल दुखने लगा।

वसन्त का उज्ज्वल दिन था, वासिच की देह पीली पड़ गयी थी, होंठों पर खून की पपड़ी जमी थी, और पता नहीं क्यों उसके हाथों पर भी सूखा खून था। उसे, ठण्डे, मरे हुए को देखकर इश्चेन्को को पाशविक शक्ति से यह आभास हुआ कि वह स्वयं जीवित है! धूप की यह चकाचौंध चमक, और हवा में व्याप्त वसन्त की सुगन्ध जिसे वासिच अब कभी भी अनुभव नहीं कर सकेगा—यह सब उसके लिये जीवित के लिये है! और इस बोध की तुलना में बाकी

सब कुछ, उसका भय तक गौण था।

कोई उसे पुकार रहा था :

"कामरेड कैप्टन! कामरेड कैप्टन!"

उसने मुड़कर देखा। कोठरी के खण्डहर के पास बर्फ़ पर चमकती धूप में फीका-फीका सा अलाव जल रहा था। और अलाव को घेरकर, नम हवा में फैलते धुएँ के बीच जवान बैठे थे, वे सब जो रात को इन ट्रकों में उसके साथ लौटे थे। वे सीखों में बैकफैट के टुकड़े पिरोकर आग पर सेंक रहे थे। वे कालिख से ढके हुए थे, दाढ़ियाँ बढ़ी हुई, अधूरी नींद और धुएँ से लाल आँखें। इश्चेन्को उनक पास चला गया। उसे भुनता बैकफैट, आग में चटखकर टपकती चर्बी की बूँदें दिखाई पड़ीं, नथुनों में सुगन्ध भर गयी और उसी अदम्य शक्ति से, जिसके साथ इस समय चारों ओर फैला वसन्ती संसार उसे इन्द्रियगोचर हो रहा था, आभास हुआ कि उसे कितनी भूख लगी है। उसके बैठने के लिये बाल्टी उलटकर रख दी गयी, और वह अलाव के पास सबसे अच्छे स्थान पर बैठ गया और बागरादूजे ने सीधे आग से निकालकर उसके हाथ में सीख थमा दी जिस पर भुने बैकफैट के टुकड़े पिरोये हुए थे।

"हाँ, तो क्या हुआ, कामरेड कैप्टन?" उसकी ओर सहमे-सहमे देखते हुए गोलुबेव ने पूछा। वे सब जो यहाँ अलाव के पास बैठे थे, अपने को इस बात के लिये दोषी सा अनुभव कर रहे थे कि पूरी बटालियन में से वे ही बच निकले और ज़िन्दा हैं। पर उन्हें आशा थी कि शीघ्र ही अन्य लोग भी लौट आयेंगे। उसके प्रति भी वे अपने को कुछ-कुछ दोषी समझ रहे थे, क्योंकि जब वे यहाँ बैठे खाना खा रहे थे, उससे वहाँ सबके बदले पूछताछ की जा रही थी। इश्चेन्को यह समझ गया और यह भी समझ गया कि अगर उन्हें अब यह मालूम होता कि वहाँ क्या हुआ था तो वे उसको किस नज़र से देखते। और उसका दिल हौल गया। पिघली चर्बी उसकी उँगलियों से टपक रही थी, उसकी ठोड़ी पर बह रही थी।

दूर से बमवर्षा की दबी-दबी गरज सुनाई पड़ी। अपना बोझ पटककर हल्के हुए विमान धूप में अपने डैने चमचमाते लौट रहे थे।

"वहाँ क्या हुआ, कामरेड कैप्टन?" जब फिर से बात की जा सकती थी, गोलुबेव ने अपना प्रश्न दोहराया और रेजीमेण्ट के हेडक्वार्टर की ओर सिर हिलाकर इशारा किया। इश्चेन्को उसकी ओर नहीं देख रहा था। वह खाते-खाते अलाव की ओर देख रहा था। भरे मुँह से उसने कोई अस्पष्ट-सा उत्तर दिया।

□